नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
K. D. GUPTA & Co
K. D. GUPTA & CO
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन
३ रुपए
जून '८८

K. D. Gupta & Co.
नन्हें मुन्नों की पहली पसंद
नये डायमंड कॉमिक्स
मनोरंजन और हंसी का खजाना
48 पृष्ठों में मनोरंजन ही मनोरंजन
कार्टूनिस्ट प्राण का
पिंकी और जोकर 5/-
प्राण
पिंकी और जोकर
दाबू और जादूगर पाशा
चाचा भतीजा और रहस्यमय दानव
अंकुर और सोने की गुड़िया
पलटू और गुप्त खजाना
महाबली शाका और शैतान भिखारी
ताऊ जी और मौत का घेरा
मोटू छोटू बने डाक्टर
मूल्य प्रत्येक 5/-
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट में
128 पृष्ठों में
मनोरंजन का खजाना
डायमंड कामिक्स डाइजेस्ट
चाचा चौधरी V
बिल्लू II
विष्णु महिमा
महाबली शाका II
चाचा भतीजा III
मूल्य प्रत्येक 12/-
डायमंड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
अंकुर बाल बुक क्लब
सदस्य बनने के लिए आपको क्या करना होगा :-
1. सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनीआर्डर या डाक टिकट द्वारा कूपन के साथ भेजें। सदस्यता शुल्क प्राप्त हाने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
2. हर माह पांच पुस्तकें एक साथ मंगवाने पर 2/- की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री की सुविधा दी जायेगी। हर माह हम पांच पुस्तकें निर्धारित करेंगे यदि आपको वह पुस्तकें पसन्द हों तो डायमंड कॉमिक्स व डायमंड पाकेट बुक्स की सूची में से कोई पांच पुस्तकें आप पसन्द करके मंगवा सकते हैं लेकिन कम से कम पांच पुस्तकें मंगवाना जरूरी है।
3. आपको हर माह Choice कार्ड भेजा जाएगा यदि आपको निर्धारित पुस्तकें पसन्द हैं तो वह कार्ड भरकर हमें न भेजें। यदि निर्धारित पुस्तकें पसन्द नहीं हैं तो अपनी पसन्द की कम से कम 7 पुस्तकों के नाम भेजें ताकि कोई पुस्तक उपलब्ध न होने की स्थिति में उनमें से 5 पुस्तकें आपको भेजी जा सकें।
4. इस योजना के अन्तर्गत हर माह की 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी।
सदस्यता कूपन
मुझे अंकुर बाल बुक क्लब का सदस्य बना लें। सदस्यता शुल्क पांच रुपये मनी आर्डर/डाक टिकट के साथ भेजा जा रहा है। (सदस्यता शुल्क प्राप्त न होने की स्थिति में आपको सदस्यता नहीं दी जायेगी) मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूँ।
नाम
पिता का नाम ....
पता ....
डाकखाना ....

पेश है

सेरेलॅक व्हीट रीफ़िल पैक में

बचाइए रु.1.50 हर पैक पर

अब सेरेलॅक व्हीट रीफ़िल पैक में भी मिलता है. अपने शिशु को सेरेलॅक के सारे लाभ दीजिए और हर पैक पर रु. 1.50 बचाइए.

4 महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी ज़रूरत होती है. इसी समय से आप उसे सेरेलॅक का लाभ देना शुरू कर दीजिए.

सेरेलॅक का प्रत्येक आहार सम्पूर्ण पोषाहार है. शिशुओं को सेरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है. इसमें दूध और चीनी पहले से ही मौजूद है. बस इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए. और अब सेरेलॅक के सारे लाभ पहले से कम कीमत पर लीजिए.

कृपया पैक पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ़्त !
सेरेलॅक बेबी केयर बुक
इस पते पर लिखिए :
सेरेलॅक
पोस्ट बॉक्स न :3
नई दिल्ली-110 008

अपने शिशु को दीजिए सेरेलॅक का अनूठा लाभ

आओ बात करें

एक कबाड़ी था। इधर-उधर फेरी लगाया करता था। रद्दी और पुराना सामान खरीद लेता। उसी को इकट्ठा करके फिर किसी जरूरतमंद को बेच देता। किसी तरह गुजारा करता था। धीरे-धीरे उसका कारोबार बढ़ता गया। उसके पास काफी धन हो गया। लोग उसे कबाड़िया सेठ कहने लगे।

अब कबाड़िया सेठ और भी कई धंधे करने लगा। उसके पास धन-दौलत का ढेर लगने लगा। सेठ ने एक नियम बना रखा था— कोई आदमी कुछ बेचने आए, तो उसे अवश्य खरीद लेता।

एक दिन कोई आदमी कागज की एक पुड़िया हाथ में लिए था। कई लोगों ने पूछताछ तो की, पर पुड़िया भला कौन खरीदता? वह आदमी कबाड़िया सेठ के दरवाजे पर पहुंचा। सेठ ने पुड़िया ले ली और कीमत दे दी। पुड़िया वाला खुशी-खुशी सेठ को दुआ देता चला गया। उस समय सेठ काम में लगा था, इसलिए उसने पुड़िया साफे में खोंस ली।

लोगों ने देखा, सेठ ने कागज की पुड़िया ही खरीद ली। यह भी जांच नहीं की कि उसमें है क्या! किसी ने सोचा कि सेठ का दिमाग फिर गया है। इधर-उधर यह चर्चा फैल गई कि सेठ को कागज की पुड़िया बेचकर एक आदमी बुद्धू बना गया।

दिनों दिन सेठ की बढ़ती देख, लोग ईर्ष्या भी करने लगे थे। कुछ लोगों ने षड्यंत्र रचा। दरबार में उन्होंने कबाड़िया सेठ के बारे में बात चलाई। राजा से कहा कि सेठ तो आपको भी कुछ नहीं समझता। प्रजा में यह बदनामी हो रही है कि राजा कंजूस है, सेठ हर किसी की मदद करता है। धीरे-धीरे राजा के कान ऐसे भरे गए कि कबाड़िया सेठ को जेल में बंद करने का हुक्म हो गया।

सेठ ने यह सुना, तो हक्का-बक्का रह गया। कहीं उसकी सुनवाई भी न हुई। कैद में वह बहुत उदास था। बैठे-बैठाए उसका हाथ साफे पर गया। पुड़िया हाथ में आ गई। सेठ ने पुड़िया खोल ली। पुड़िया में कुछ था ही नहीं, बस इतना लिखा था— 'समय एक-सा नहीं रहता।'

यह पढ़कर सेठ के सामने आशा की किरण चमक उठी। वह हंस दिया। हंसा, खूब खिलखिलाकर हंसा। जो सेठ मुंह लटकाए बैठा रहता, पहरेदार ने उसे हंसते देखा तो हैरान। उसने सोचा, शायद कैद में सेठ पगला गया है। बस, उसने ऊपर खबर कर दी। बात राजा तक पहुंच गई।

राजा को विश्वास न हुआ। वह स्वयं वहां आए। उन्होंने सेठ से पूछा कि क्या बात है? सेठ ने सारी घटना सच-सच बता दी!

राजा को लगा— सेठ के साथ अन्याय हो गया। तुरंत सेठ को रिहा करने का हुक्म दे डाला। राजा बोले— "सचमुच समय एक-सा नहीं रहता।"

कबाड़िया सेठ फिर पहले की तरह ही लोगों की मदद करने लगा।

दुःख के पीछे सुख और सुख के साथ दुःख अक्सर चलते हैं। कठिन से कठिन हालत में भी हम निराश न हों।

अगला अंक परी-कथा विशेषांक होगा। अनेक देशों की एक से बढ़कर एक कथाएं उसमें रहेंगी। अभी से अपनी प्रति के लिए कह दो।

तुम्हारे भइया

जय प्रकाश भारती

नंदन

जून '८८
वर्ष: २४ अंक: ८

सम्पादक
जयप्रकाश भारती

कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

मुखपृष्ठ : विजय शर्मा; एलबम : विद्याव्रत

सहायक सम्पादक : चन्द्रदत्त 'इन्दु'
उप-सम्पादक : देवेन्द्रकुमार, रत्नप्रकाश शील, क्षमा शर्मा, डा. चन्द्रप्रकाश; चित्रकार : प्रशांत सेन

अ सुरराज बलि के सौ पुत्र थे। उनमें सबसे बड़ा था वाणासुर। उसकी हजार भुजाएं थीं। वह शस्त्र-शास्त्र दोनों विद्याओं में पारंगत था, साथ ही शिवजी का भक्त भी।

एक दिन भगवान शंकर पार्वती के साथ नृत्य कर रहे थे। वाणासुर ने अपने हजार हाथों से इस लय-ताल के साथ झांझ बजाई कि शिवजी प्रसन्न हो गए। उन्होंने वर मांगने को कहा। वाणासुर बोला—"भगवान, मैं आपका बेटा बन जाऊं।"

सपने की बात

— रामपाली भाटी

सुनकर शिवजी हंस पड़े। उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखकर कह दिया— "ऐसा ही हो। आज से तुम हमारे पुत्र हो जाओ। शोणितपुर नामक नगर के स्वामी होकर सुख से रहो।" इसके बाद उन्होंने देवी पार्वती से कहा— "देवी, तुम साक्षात शक्ति बनकर वाणासुर के शरीर में निवास करो, जिससे यह अनुपम बली बन जाए।"

वाणासुर पहले ही महाबली था। शिवजी का वरदान पाकर तो वह और भी मतवाला हो गया। कुमार कार्तिकेय ने भी उसे छोटा भाई मानकर एक सुंदर ध्वज व मयूर रथ उपहार में दिया। शक्ति से उन्मत्त हो, वाणासुर ने देव, दानव, यक्ष, गंधर्व—सभी को युद्ध में जीत लिया। पर उसकी युद्ध की भूख शांत नहीं हुई। उसके साथ युद्ध कर सके, ऐसा कोई वीर संसार में नहीं रह गया था। अब उसने बड़े-बड़े पर्वतों को अपनी भुजाओं से मसल कर चूरा बना डाला। मगर यह सब भी कब तक चलता? शक्ति की अधिकता से वाणासुर बेचैन रहने लगा। एक दिन उसने भगवान शंकर से प्रार्थना की— "प्रभो, मेरी भुजाएं शक्ति के आवेग से फटी जा रही हैं। विश्व में कोई भी ऐसा योद्धा नहीं है, जो मुझसे युद्ध कर सके। अब आप ही मुझसे युद्ध करके मुझे शांति दीजिए।"

वाणासुर की बात सुनकर शिवजी चकरा गए। उन्होंने देवी पार्वती की ओर मुसकराकर देखा और
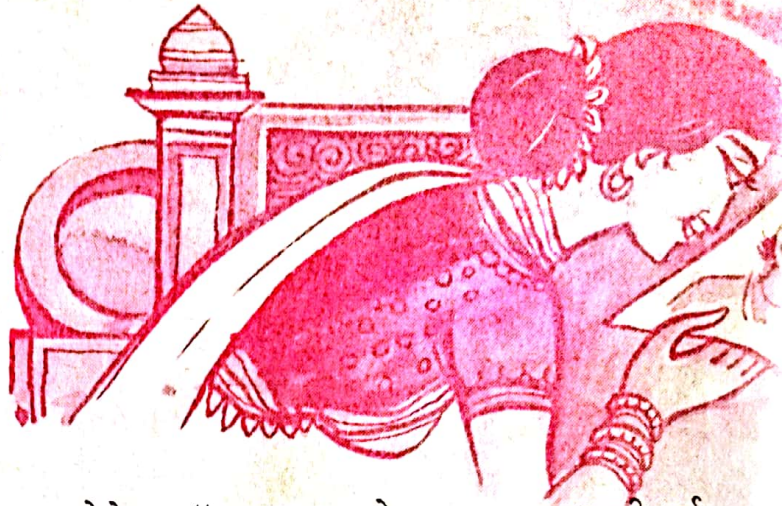
बोले— "वाणासुर, तुम्हारे महल पर लहराती हुई ध्वजा जब अपने आप गिरेगी, तभी तुम्हें ऐसे भयंकर युद्ध का अवसर मिलेगा।" वह शिवजी को प्रणाम करके घर लौट आया।

वाणासुर के 'उषा' नामक एक राजकुमारी थी, जिसे देवी पार्वती बहुत प्यार करती थीं। एक दिन किसी उत्सव में पार्वतीजी को शिवजी के साथ नाचते देख, उषा ने सोचा— 'मेरा विवाह हो जाए, तो मैं भी अपने पति के साथ इसी प्रकार आनंदमग्न होकर नाचूं।'

पार्वतीजी उसके मन की बात तत्काल समझ गईं। उन्होंने उषा से कहा— "बेटी, वैशाख माह की द्वादशी तिथि को रात के समय, सपने में तुम्हें अपने होने वाले पति के दर्शन होंगे।" कुछ समय बाद ही वह तिथि आ पहुंची। महल की छत पर सोई हुई राजकुमारी उषा ने सपने में एक सुंदर युवक को देखा। सपने में ही उससे खूब बातें कीं। सवेरे उषा जागी, तो उसे सपने की सारी बातें याद थीं। उषा सोचने लगी— 'सपने में जब एक बार मैंने किसी को अपना पति मान लिया, तो अब विवाह भी उसी से करना चाहिए। पर बिना पता-ठिकाना और नाम जाने, मैं उसे कहां खोजूं?' यही सोच-सोचकर उषा उदास रहने लगी। उसने अपनी सखी चित्रलेखा को एकांत में सब बात बताई, तो चित्रलेखा ने बहुत-से सुंदर युवकों के चित्र बनाकर उसे दिखाए। इन्हीं में श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद्ध का चित्र पहचानकर, उषा ने कहा— "यही हैं मेरे सपने में आने वाले, तुम किसी तरह इन्हें यहां ले आओ।"

Scanned with CamScanner

उषा के कहने से चित्रलेखा द्वारिका गई। वह अपनी माया से सोते हुए अनिरुद्ध को पलंग सहित उठा लाई। समुद्र किनारे स्नान करते हुए नारद जी ने उसे देख लिया। इधर अनिरुद्ध उषा के महल में सुख से रहने लगा। उधर द्वारिका में उसके गुम हो जाने से हाहाकार मच गया।

एक दिन वाणासुर को यह समाचार मिला कि राजकुमारी के महल में कोई युवक छिपा हुआ है। वह बहुत नाराज हुआ। वह स्वयं रथ पर चढ़कर अनिरुद्ध को दंड देने आया। अनिरुद्ध ने पूरी शक्ति से वाणासुर का सामना किया, पर वह अकेला था, सामने था महाबली वाणासुर। असुर ने देखते ही देखते अनिरुद्ध को नागपाश में बांध लिया। उधर नारद जी ने श्रीकृष्ण को अनिरुद्ध के शोणितपुर में बंदी होने के समाचार सुनाए। श्रीकृष्ण-बलराम ने सेना लेकर, शोणितपुर पर आक्रमण कर दिया। भयंकर ध्वनि वाले पांचजन्य शंख की आवाज सुन, वाणासुर महल से बाहर आया। श्रीकृष्ण से युद्ध करने लगा। थोड़ी ही देर में वाणासुर को अपनी हार का अहसास होने लगा। उसने अपने महल की ओर देखा। कार्तिकेय का दिया हुआ ध्वज गिर चुका था। अब उसने अपने विचित्र बाणों का प्रयोग शुरू किया। उसने त्रिशिरा नामक बुखार को अपने धनुष पर चढ़ाकर, शत्रुओं पर छोड़ दिया। वाणासुर के उस ज्वर बाण ने पहुंचते ही बड़ी विचित्र दशा उत्पन्न कर दी। श्रीकृष्ण, बलराम सहित सभी योद्धा उसकी चपेट में आकर बुखार से छटपटाने लगे। उनके शरीर बुखार से जलने लगे। उन्हें रणभूमि में नींद आने लगी। श्रीकृष्ण ने तुरंत उस विपत्ति से लड़ने के लिए 'वैष्णव ज्वर' नामक बुखार का ही प्रयोग किया। जब बुखार, बुखार से लड़ रहा था, तो ऐसा लगता था कि अब सारा संसार ही बुखार से नष्ट हो जाएगा। जब दोनों बुखारों के वाणों में से कोई भी नहीं हारा, तो शिवजी ने उन्हें तीन भागों में बांटकर मनुष्यों, पशुओं, वृक्षों, पर्वतों व पक्षियों के पीछे लगा दिया। उन्हें वे ज्वर आज तक दुःख दे रहे हैं। ज्वर से छुटकारा पाकर,श्रीकृष्ण फिर वाणासुर से लड़ने लगे। वह बार-बार अपनी भुजाओं की ओर देखकर श्रीकृष्ण को ललकार रहा था— "श्रीकृष्ण, केवल दो भुजाओं से मेरे जैसे सहस्रबाहु के साथ तुम कब तक युद्ध करोगे ? भाग जाओ। वरना मारे जाओगे।" फिर उसने श्रीकृष्ण पर ऐसे बाण चलाने शुरू किए, जिनसे कभी घोर अंधेरा फैल जाता था, कभी सारे रणक्षेत्र में आग लग जाती थी। कभी बड़े-बड़े पर्वत आकाश से बरसने लगते थे

जब वाणासुर कुछ थका हुआ-सा दिखाई दिया, तो श्रीकृष्ण ने उससे कहा— "वाण, तुम्हारी बलशाली हजार भुजाएं तुम्हारे लिए समस्या बन गई हैं। इन्हीं की शक्ति के कारण तुम सृष्टि के सभी प्राणियों को तुच्छ समझते हो। आज मैं तुम्हारा यह रोग सदा के लिये मिटा देता हूं।" कहते हुए उन्होंने सुदर्शन चक्र से वाणासुर की केवल चार छोड़कर सभी भुजाएं काट डालीं। शिवजी का दत्तक पुत्र होने के कारण उन्होंने वाणासुर के प्राण नहीं लिए। अपनी भुजाओं के कटने के कारण रक्त में लथपथ वाणासुर उसी अवस्था में शिव-पार्वती के सामने पहुंचा और नाचने लगा। वाणासुर को इस प्रकार नाचता देखकर शिवजी को दया आ गई। उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखकर कहा— "बेटा वाण, आज से तुम अजर-अमर हो गए। अब तुम मेरे गणों के दल के प्रमुख बनकर, सदा मेरे ही पास रहोगे। संसार तुम्हें अब से 'महाकाल' के रूप में जानेगा।"

वाणासुर को वरदान देकर शिवजी कैलाश चले गए। फिर उसने बड़े उत्साह के साथ राजकुमारी उषा का विवाह अनिरुद्ध के साथ कर दिया। ●

दरार नहीं पड़ी

—हर्षकुमार

प्रतापगढ़ व कालागढ़ के शासकों में वर्षों पुरानी दोस्ती थी। प्रतापगढ़ के शासक थे वीरेंद्रप्रताप सिंह तथा कालागढ़ के शासक थे विजयपाल सिंह।

वीरेंद्रप्रताप सिंह की दो पुत्रियां थीं तथा विजयपाल सिंह के दो पुत्र। जब दोनों राजाओं के यहां संतानों ने जन्म लिया था, तभी उन्होंने उनका विवाह तय कर दिया था।

दोनों राज्यों की प्रगाढ़ मित्रता से यूं तो जलने वाले बहुत-से राज्य थे, लेकिन इनमें मानगढ़ का शासक शत्रुसिंह सबसे आगे था। वह सोचता— कैसे दोनों राजाओं की मित्रता को शत्रुता में बदला जाए।'

उसने दोनों राज्यों में अपने गुप्तचर भेज रखे थे। इन गुप्तचरों को पहचानना आसान न था, क्योंकि ये वेश बदलकर जाते थे।

वीरेंद्रप्रताप सिंह का प्रधानमंत्री बहुत योग्य था। वह हमेशा राज्य की भलाई के बारे में सोचता रहता था। लेकिन सेनापति भवानीसिंह की शत्रु सिंह से सांठ-गांठ थी। भवानीसिंह धीरे-धीरे सैनिकों को राजा के खिलाफ भड़का रहा था। सैनिकों को जो पगार दी जाती थी, उसमें से वह आधी खा जाता था।

राजा वीरेंद्रप्रताप सिंह राज्य में होने वाले दंगे-फसादों से परेशान थे। ये दंगे शत्रुसिंह के गुप्तचर कर रहे थे। प्रधानमंत्री विक्रमजीत ने इन पर रोक लगाने की बहुत कोशिशें की, लेकिन सब बेकार। जिस राज्य का सेनापति ही शत्रुसिंह का साथ दे, भला उसे कौन बचा सकता था?

एक रात भवानीसिंह के सैनिकों ने राजमहल में बगावत कर दी। प्रधानमंत्री को कैद कर लिया गया तथा महाराज को नजरबंद। महल पर कड़ा पहरा बैठा दिया।

एक बार विजयपाल सिंह को अपने उस वचन की याद आई, जो उन्होंने वीरेंद्रप्रताप सिंह को दिया था। उन्होंने अपना एक विशेष दूत प्रतापगढ़ भेजा। दूत के सामने सारे राजमहल में ऐसा दर्शाया गया, जैसे वहां कुछ हुआ ही न हो। दूत ने महाराजा से एकांत में बात की। वीरेंद्रप्रताप सिंह ने इशारे से दूत को बताया कि वह बहुत मुसीबत में हैं। दूत का बात समझने में देर न लगी, दोनों की बातचीत के समय भवानीसिंह के सैनिक पहरा दे रहे थे।

जब विजयपाल सिंह को सारी बात पता चली, तो वह बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने तुरंत प्रतापगढ़ पर हमला करने का आदेश दिया। लेकिन बड़े राजकुमार इंद्रजीत सिंह बोले—"महाराज, ऐसा करना उचित नहीं है, क्योंकि ऐसा करने से प्रतापगढ़ के जान-माल दोनों को हानि होगी। वहां की भोली-भाली जनता समझेगी कि हमने दोस्ती का फर्ज भुला दिया है। अतः हमें गुप्त रूप से कार्यवाही करनी होगी।" छोटे राजकुमार विश्वजीत ने भी बड़े राजकुमार की बात का समर्थन किया।

राजा विजयपाल सिंह से सलाह करने के बाद, उन्होंने गुप्त रूप से प्रतापगढ़ में पहुंचने का निश्चय किया। दोनों राजकुमार व्यापारियों के वेश में प्रतापगढ़ पहुंचे। उनके साथ नौकरों के वेश में बहुत-से सैनिक थे। व्यापारी बने राजकुमार भवानीसिंह से भी मिले। अपनी बातचीत से उन्होंने भवानीसिंह को भी प्रभावित कर लिया। वे हर बार राजमहल जाते और बहुमूल्य उपहार देकर भवानीसिंह को प्रसन्न करते।

एक रात, मौका देखकर उनके सैनिकों ने राजमहल पर आक्रमण कर दिया। भवानीसिंह इस अकस्मात आक्रमण से घबरा गया। कुछ ही समय में सारे राजमहल पर कालागढ़ की सेना का अधिकार हो गया।

राजा वीरेंद्रप्रताप सिंह व विजयपाल सिंह ने मिलकर मानगढ़ पर हमला बोल दिया। मानगढ़ की जनता ने भी इनका साथ दिया। शत्रुसिंह को कैद कर लिया गया।

राजा वीरेंद्रप्रताप सिंह शत्रुगढ़ के राजा बने। शुभ मुहूर्त में राजकुमारों व राजकुमारियों का विवाह हो गया। ●

नेहरू एलबम : ५४
विट्ठल मंदिर
पंढरपुर
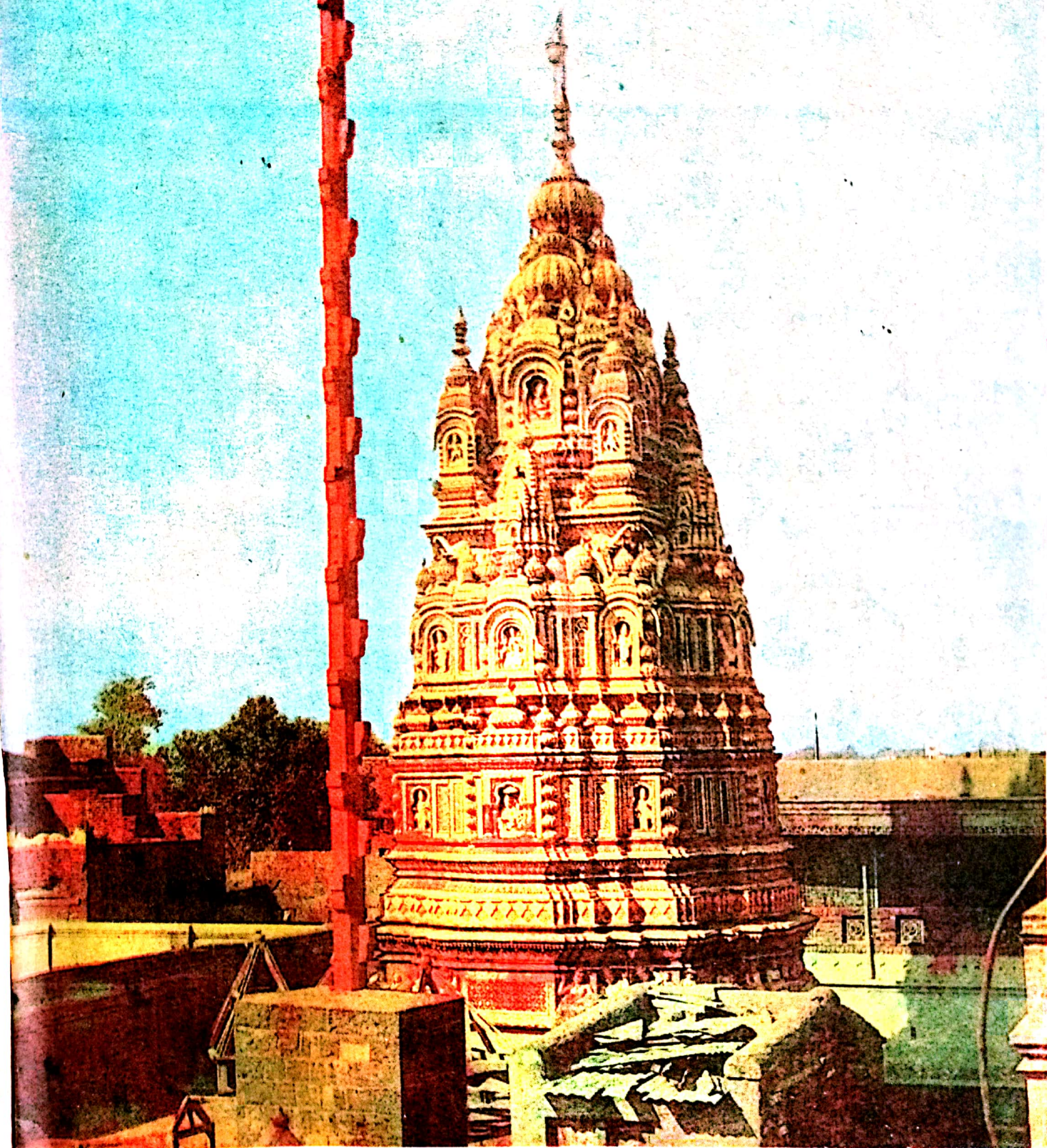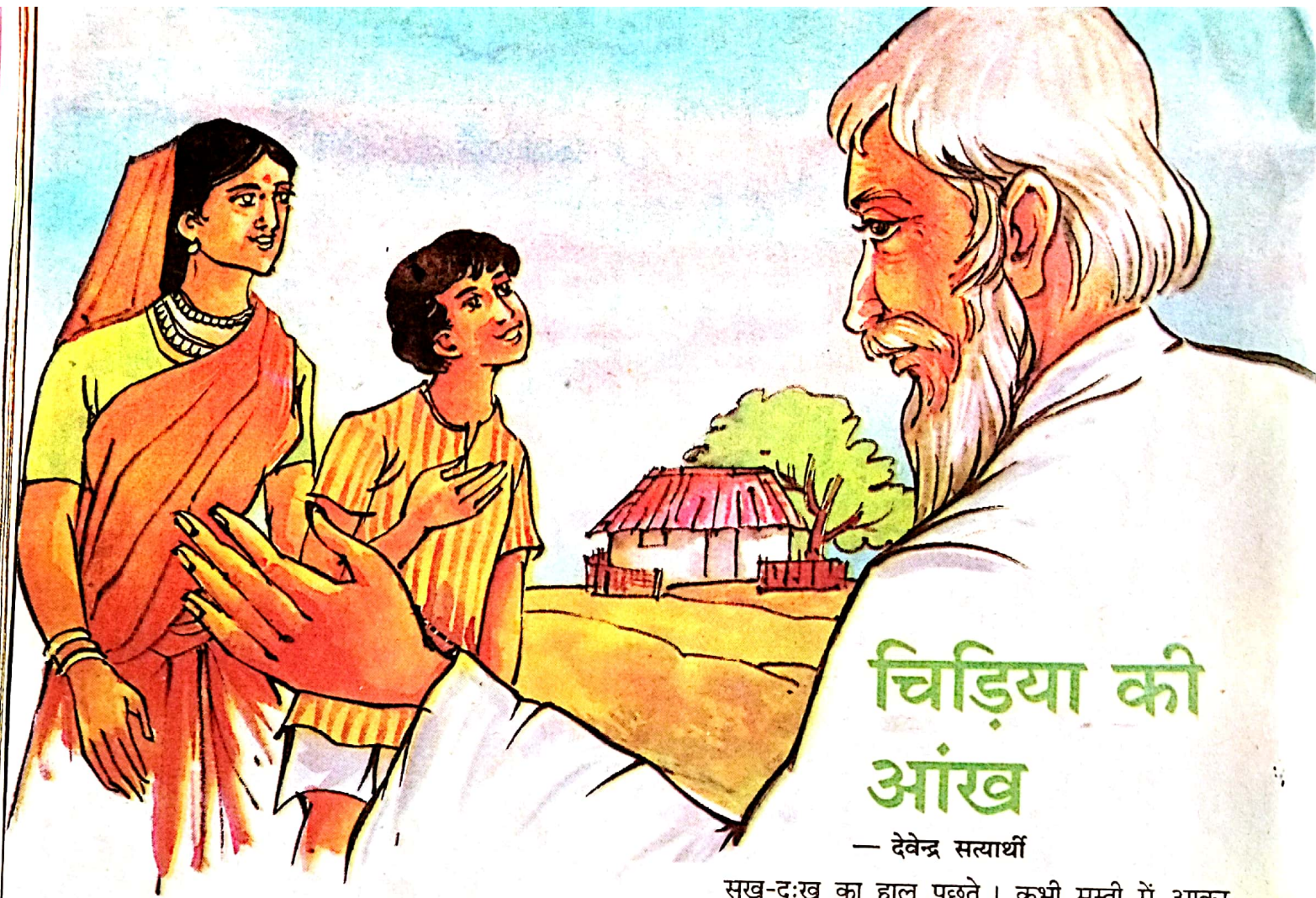
चिड़िया की आंख

— देवेन्द्र सत्यार्थी

कुछ समय से अजीब तरह का बदलाव आया था सोन बाबा में। वह अब ज्यादातर चुप रहते— उदास, खोए-खोए-से। न किसी से ज्यादा बातचीत, न हंसी-मजाक। घर से बाहर निकलना तक बंद कर दिया था। कोई मिलने आता, तो देहरी पर खड़े-खड़े ही बात करते। फिर दरवाजा पहले की तरह बंद हो जाता। भीतर से देर-देर तक सोन बाबा की बेचैनी भरी चहलकदमी की आहटें आती रहतीं। लगता था, किसी गहरी चिंता में हैं सोन बाबा। लेकिन कैसी है वह चिंता— कोई समझ नहीं पाता था।

सोन बाबा का कोई परिवार न था। अकेले थे। सारे दिन चित्र बनाना— रंगों की दुनिया में खोए रहना। इसी में उन्हें सबसे अधिक आनंद मिलता। चित्र बनाने के बाद उनकी खुशी का ठिकाना न रहता। बच्चों के साथ खेलते। लोगों के पास जाकर उनके सुख-दुःख का हाल पूछते। कभी मस्ती में आकर किस्से-कहानियां भी छेड़ देते। बच्चे-बड़े सभी हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते। खुद सोन बाबा हो-हो करके हंस पड़ते और उनकी सफेद, उजली दाढ़ी मस्ती से लहरा उठती। यही वजह थी, बच्चे-बड़े सभी सोन बाबा को प्यार करते थे। वे उन पर जान छिड़कते थे।

सोन बाबा के चित्र देखने दूर-दूर से कलाकार आते। बड़े-बड़े सेठ-साहूकार भी। लेकिन सोन बाबा को सबसे अच्छा लगता, अपनी बस्ती के सीधे-सादे लोगों के बीच बैठना, उनसे गपशप करना। बच्चों को उनके जन्म दिन पर कोई नया चित्र बनाकर भेंट करना वह कभी न भूलते। यही वजह थी, कोई बाहर का आदमी आकर बस्ती के लोगों से सोन बाबा के बारे में पूछता, तो वे एक ही जवाब देते— 'हमें तो लगता है, यह कोई फकीर है, जो स्वर्ग से हमें प्यार का संदेश देने आया है।'

ऐसे प्यारे सोन बाबा बदल कैसे गए ? उनकी उदासी से बच्चे तो परेशान थे ही, बड़ों को भी अटपटा लगा।

एक दिन बस्ती के लोग मिलकर गए और कहा— "क्या हमसे कोई अपराध हो गया, सोन बाबा ! अनजाने में हुई गलती क्षमा कर दीजिए।"

"नहीं, नहीं ! आप ऐसा क्यों कहते हैं ? मैं तो..."— कहते-कहते उनकी आंखें फिर कहीं दूर देखने लगीं। कुछ देर बाद लोग चले गए, तो सोन बाबा दरवाजा अटकाकर अपने चित्र देखने लगे। चित्रों को उधर से इधर रखते, इधर से उधर। फिर दोबारा-तिबारा देखते। देखते-देखते कहीं खो जाते।

सोचते-सोचते सोन बाबा के माथे की नसें खिंच जातीं। चेहरा गमगीन हो जाता।

कुछ दिन और ऐसे ही कटे। फिर एक दिन बच्चों ने देखा, सोन बाबा सुबह-सुबह नहा-धोकर घूमने निकल पड़े हैं। बच्चों की खुशी का ठिकाना न रहा। जानते थे, बाबा इस समय सबसे अधिक प्रसन्न होते हैं। वे भी साथ-साथ चल पड़े।

सोन बाबा पहले की तरह बच्चों से बातें करते जाते। लेकिन आज वह बात न थी। कुछ गम्भीर-से थे। कुछ देर बाद उन्होंने बच्चों को वापस भेज दिया। खुद एकांत में दूर तक घूमने निकल गए। लौटे तो शाम हो चुकी थी। फूल, पत्तियां, चिड़ियों के पंख, रंग-बिरंगे छोटे-छोटे पत्थर— और न जाने कैसी-कैसी चीजों से उनका थैला भरा था। नए रंग और कूचियां भी लाए थे।

फिर सोन बाबा का दरवाजा बंद हुआ, तो बहुत दिनों तक बंद ही रहा। कभी-कभी बच्चे खिड़की से झांक लेते। सोन बाबा हर वक्त चित्र बनाने में लीन दिखाई पड़ते।

लगभग एक महीने बाद सोन बाबा घर से निकले। बस्ती के लोगों से कहा— "कल से अपने घर के सामने चित्रों की प्रदर्शनी लगाऊंगा। आप देखने आएं।"

सभी को यह बात पता चल गई। अनेक लोग मदद के लिए आ गए। एक बड़ा-सा तम्बू लगाया गया। उसमें थोड़ी-थोड़ी दूरी पर चित्र लगाए गए। हर चित्र के नीचे मेज पर एक डायरी थी। उस पर लिखा था— 'आपको यह चित्र कैसा लगा ?'

पूरा शहर ही प्रदर्शनी देखने के लिए उमड़ पड़ा। लोग जी भर प्रशंसा कर रहे थे। कुछ लोगों ने डायरी में अपनी राय भी लिखी। ऐसे भी लोग थे, जो उचटती नजरों से चित्र देखकर आगे बढ़ जाते।

एक दिन की बात है। शाम ढल चुकी थी। ज्यादातर लोग चित्र देखकर जा चुके थे। बाबा एक ओर हौले-हौले टहल रहे थे। इतने में उनका ध्यान एक लड़के की ओर गया। सांवला रंग, फटे-पुराने कपड़े, लेकिन चेहरे पर गम्भीरता। एक चित्र के आगे खड़ा था।

बाबा कुछ और पास आ गए। देखा, एक चिड़िया का चित्र था वह। चिड़िया अपने मुंह में दाना लिए, नन्हे-से बच्चे को खिला रही थी। चिड़िया के बच्चे की चोंच खुली थी। बाबा ने खूब मेहनत से बनाया था यह चित्र। बच्चा टकटकी लगाए देख रहा था उसे।

काफी देर बाद उसका ध्यान टूटा, तो वह आगे बढ़ा। एक-एक बार सभी चित्रों को ध्यान से देखा। फिर चिड़िया के उसी चित्र के आगे आ खड़ा हुआ। इस बार भी हालत ऐसी, जैसे आंखें वहीं चिपक गई हों। उसके बाद एकाएक वह घूमा और बाहर की ओर चल दिया।

सोन बाबा की आंखों में एक नई ही चमक आ गई। जैसे ही वह बालक तम्बू से बाहर निकला, उन्होंने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।

बालक चौंका। पीछे देखा, तो लम्बा सफेद चोगा पहने, दाढ़ी वाला व्यक्ति दिखाई दिया। समझ गया,

यही सोन बाबा हैं। हड़बड़ाकर बोला— "नहीं... नहीं, मैंने कुछ नहीं किया, बाबा! यह चित्र मुझे बहुत पसंद है, लेकिन मैं उसे चोरी करने नहीं आया। मैं तो बस देख रहा था।"

बाबा हंसे— "अच्छा बताओ, इस चित्र में सबसे अच्छा क्या लगा तुम्हें?"

एक क्षण बालक ने सोचा। फिर कहा— "चिड़िया की आंख!"

"आंख में भला ऐसी क्या बात है?"— बाबा हो-हो करके हंसे।

"मोती... चिड़िया की आंख की कोर में आपने मोती बनाया है न बाबा!... वही! मुझे ऐसा लगा बाबा, आंख की कोर में उसका सारा प्यार सिमट आया है, ठीक वैसे ही जैसे..."

—"हां... हां, कहो न। रुक क्यों गए?"

—"ठीक वैसे ही, जैसे मां मुझे अपने सामने बैठाकर खाना खिलाती हैं, तो उनकी आंखों से प्यार उमड़ रहा होता है।"

उसी क्षण सोन बाबा की आंखों में ढेर-सारा प्यार उमड़ आया उस बच्चे के लिए। पूछा— "नाम क्या है तुम्हारा बेटे? मुझे तुम्हारी ही तलाश थी।"

"गोकुल!"— बालक ने झिझकते हुए बताया।

"चलो, मैं भी चलूंगा तुम्हारे घर।"— कहकर सोन बाबा गोकुल के साथ चल पड़े। रास्ते में गोकुल ने सोन बाबा से कितनी ही बातें कीं। घर की, स्कूल की, दोस्तों की। यह भी बताया, मां किसी तरह मेहनत-मजदूरी करके उसे पढ़ा रही हैं, ताकि एक दिन बड़ा आदमी बने। सोन बाबा ध्यान से सुनते रहे। चलते-चलते गोकुल मिट्टी के एक कच्चे घर के आगे रुका। आवाज दी— "मां!"

गोकुल की मां दरवाजा खोलने आई। गोकुल के साथ एक अजनबी को देखा, तो अचकचाई। गोकुल बोला— "मां... मां... यही हैं सोन बाबा...."

"मैं तो बधाई देने आया था आपको। आपका बेटा कला का पारखी है। एक दिन बड़ा कलाकार बनेगा।" — कहते-कहते सोन बाबा गोकुल के सिर पर हाथ फेरने लगे।

—"लेकिन बाबा, यह तो निरा बुद्धू है। सारे दिन घुमक्कड़ी, शरारतें।... ठीक से पढ़ता भी नहीं ...."

"कुछ लोग किताबों से नहीं, जीवन से पाठ सीखते हैं।"— कहते-कहते सोन बाबा की आंखों के आगे उनका बचपन तैर गया। बोले— "आज से साठ-पैंसठ बरस पहले की बात है। तब मैं पंद्रह-सोलह साल का था। इतनी बड़ी दुनिया में बिलकुल अकेला, अनाथ। सारा दिन मजदूरी करता, रात में चित्र बनाता। झोंपड़ी में रखे चित्र बारिश में खराब भी हो जाते। फिर मैं और नए बनाता। एक दिन खेल-खेल में दीवार पर चित्र बना रहा था कि मशहूर चित्रकार वीरेश्वर उधर से गुजरे। उन्होंने मेरे और चित्र भी देखे। बोले— हीरा धूल में पड़ा है। मैं इसका रूप निखार दूंगा।"

कहते-कहते सोन बाबा कुछ देर के लिए रुके। फिर कहा— "आज यही शब्द मैं गोकुल के लिए कह रहा हूं। धूल में पड़ा यह हीरा मुझे दे दीजिए।"

अगले दिन सोन बाबा गोकुल को लेकर यात्रा पर निकल पड़े। उसे किस्म-किस्म के फूल, पहाड़, झरने, पशु-पक्षी दिखाए। उनकी आकृतियां बनाना, रंग भरना सिखाया। कभी-कभी सुधार भी देते। प्यार से समझाते— "इस चिड़िया के पंख ऐसे नहीं, ऐसे बनेंगे गोकुल।" या "इस झरने का चित्र ऐसे बनाओ, जैसे खुशी से नाच रहा हो।"

कुछ समय बाद सोन बाबा लौट आए। अब गोकुल सोन बाबा के पास बैठकर ही चित्र बनाता। उसके चित्रों में दिनों दिन नया निखार आ रहा था। सोन बाबा की बातों को वह ध्यान से सुनता। जैसे वह कहते, झट बना डालता।

एक दिन शहर का एक धनी व्यापारी देवदास सोन बाबा के पास आया। बोला— "बाबा, शहर में कुछ विदेशी चित्रकार आए हैं। कला वीथिका में उनके चित्रों की प्रदर्शनी होगी। मेरी इच्छा है, साथ ही आपके चित्रों की प्रदर्शनी भी हो।"

सोन बाबा हंसे— "मेरे चित्र देखते-देखते तो

लोग बूढ़े हो गए। मैं खुद भी बूढ़ा हो गया। अब तो कुछ नया सामने आना चाहिए।"

—"मैं कुछ समझा नहीं बाबा!"

—"इस बार मेरे नहीं, गोकुल के चित्रों की प्रदर्शनी लगाओ।"

"लेकिन बाबा!..."— कहते-कहते देवदास रुक गया। बाबा समझ गए, वह क्या कहना चाहता है। बोले— "कला उम्र से नहीं नापी जाती देवदास। मुझे भी इस शहर में राज्य की ओर से 'कलाश्री' का सम्मान जब मिला था, तो मैं गोकुल जितना ही था।"

फिर एक दिन सबने घोषणा सुनी—"शहर में विदेशी चित्रकारों के चित्रों की प्रदर्शनी होगी। साथ ही इसी शहर के एक बच्चे के चित्र भी देखने को मिलेंगे।"

उम्मीद से अधिक लोग वह प्रदर्शनी देखने आए थे। और लोगों की उम्मीद से भी कहीं अच्छे, कलात्मक चित्र थे उस बालक के। रंगों में ऐसी ताजगी, चमक जैसे कोई जादू-सा बिखर गया हो। गोकुल ने अपने आसपास जो भी देखा, उसे चित्रों में ढाल दिया था। फिर भी बड़े-बड़े नामी कलाकारों से होड़ ले रहे थे उसके चित्र। विदेशी चित्रकारों ने भी खूब सराहा उसे।

प्रदर्शनी के बाद लोग जाने लगे, तो बाबा ने घोषणा की— "अब मैं चित्र नहीं बनाऊंगा। मुझसे अच्छे चित्र तो गोकुल बनाने लगा है..."

फिर उन्होंने पंच धातुओं से बनी यक्ष-यक्षिणी की मूर्तियां गोकुल की ओर बढ़ा दीं। कहा—"बचपन में मेरे गुरु ने मुझे भेंट की थीं ये मूर्तियां। तब मैं तुम्हारे जितना ही था। लेकिन तुम तो मुझसे भी आगे बढ़ गए। जीवन भर मेरे पास रहीं ये मूर्तियां, अब ये मुझसे बड़े कलाकार के पास रहेंगी।..." कहते-कहते सोन बाबा का गला रुंध गया।

उसके बाद सोन बाबा ज्यादातर अपने घर के बाहर पौधों को सींचते, बच्चों के साथ खेलते या फिर इधर-उधर गप्पें हांकते दिखाई देते। किसी ने उनके चेहरे पर उदासी नहीं देखी।

भगवान की भेंट

—अजय कटियार

बहुत दिन हुए, विपुला राज्य में व्यापारी सोमधर रहता था। वह बड़ा कंजूस और चालाक था। राज्य के कर्मचारियों से सांठ-गांठ कर, उसने बहुत धन कमाया था।

एक बार पड़ोसी राजा ने विपुला पर आक्रमण कर दिया। अब सोमधर की पांचों अंगुलियां घी में थीं। सेना की रसद में गोलमाल करके उसने धन बटोरना शुरू कर दिया। जैसे-जैसे उसकी तिजोरियां भरती गईं, वैसे-वैसे उसे एक चिंता सताने लगी—'यदि विपुला का राजा हार गया, तो शत्रु के सैनिक उसकी सारी सम्पत्ति लूट लेंगे।'

बहुत सोच-विचार के बाद उसने अपने धन को सुरक्षित रखने के लिए एक उपाय सोचा। नगर के बाहर रुद्र देवता का एक टूटा-फूटा मंदिर था। कोई भी वहां पूजा करने नहीं जाता था। सोमधर एक रात अपनी सारी सम्पत्ति लेकर वहां गया। मंदिर के पीछे उसने एक गड्ढा खोदा। अपनी सम्पत्ति उसमें दबाकर चुपके से वापस आ गया।

अब वह निश्चिंत था। जब भी उसके पास कुछ धन इकट्ठा होता, उसी गड्ढे में दबा आता। वह सोचता—'अब चाहे राजा हारे या जीते, मेरा धन सुरक्षित रहेगा। जब जरूरत होगी, तब खोदकर निकाल लूंगा।'

संयोग की बात। युद्ध में विपुला का राजा जीत गया। सारे राज्य में उल्लास छा गया। राजा ने अपने सामंतों की एक बैठक बुलाई। प्रस्ताव रखा—"इस विजय के उपलक्ष्य में एक ऐसा स्मारक बनाया जाए, जो सदियों तक विजय की याद दिलाता रहे।"

सभी सामंत राजा की बात से सहमत थे। निश्चय हुआ, नगर के समीप स्थित रुद्र देवता के मंदिर का उद्धार किया जाए। राजा ने तुरंत सहमति दे दी। मंदिर के चारों ओर दो-दो सौ गज भूमि पर तार खिंचवा दिए। राज्य के श्रेष्ठ कारीगरों को मंदिर के निर्माण का

कार्य सौंपा गया। प्रजा का प्रवेश मंदिर की सीमा में वर्जित कर दिया गया।

सोमधर ने जब यह समाचार सुना, तो वह सकते में आ गया। उसकी जीवन भर की सारी जमा-पूंजी मंदिर के पीछे गड़ी थी। उसे निकालना तो दूर, अब वह वहां जा भी नहीं सकता था। सारा धन इस प्रकार हाथ से निकलते देख, वह पागल-सा हो गया। उसके शरीर में घुन लग गया। वह रोज सबेरे मंदिर से दूर, एक पेड़ पर चढ़कर बैठ जाता। पुराने मंदिर की जगह नया मंदिर बनता देखता रहता। पेड़ पर उदास बैठा, आंसू बहाता रहता था।

एक दिन सोमधर पेड़ पर बैठकर रो रहा था। नीचे से एक साधु गुजरा। साधु ने सिर उठाकर देखा, तो रोते-कलपते सोमधर पर दृष्टि पड़ी। उसने सोमधर को पुकारकर पूछा—"तुम मंदिर की ओर मुंह करके क्यों रोते हो भाई ?"

सोमधर नीचे उतर आया। साधु के बार-बार पूछने पर सोमधर ने सारी बात बता दी। वह बोला—"यदि मेरा धन मुझे न मिला, तो मैं पागल हो जाऊंगा।"

सोमधर की राम कहानी सुनकर साधु गम्भीर हो गया। कुछ सोचकर बोला—"यदि तुम अपनी कमाई से स्वर्ण कलश बनवाकर रुद्र पर चढ़ा दो, तो तुम्हारा धन तुम्हें मिल जाएगा।"

"यह मैं अवश्य कर दूंगा।"—सोमधर ने कहा और अपने घर वापस आ गया। जो कुछ धन था, उसे बेचकर उसने स्वर्ण कलश बनवाना चाहा, किंतु वह धन पर्याप्त न था। घर में अब ऐसी कोई मूल्यवान वस्तु न थी, जिसे बेचकर वह स्वर्ण कलश बनवा सकता।

इस स्थिति में वह बौखला गया। साधु की खोज में भाग-दौड़ करने लगा। एक दिन उसे साधु फिर दिखाई पड़ा। सोमधर ने आंखों में आंसू भर, सारी बात बताई। सहायता करने की प्रार्थना की। "अब तो एक ही उपाय है। तुम राजा के पास जाओ। उसे सारी बात बताकर सहायता के लिए कहो।"—साधु ने कहा।

"नहीं, नहीं। राजा को यदि पता लग गया कि मेरे पास इतना धन है, तो वह संदेह करेगा। पूछताछ भी करेगा। मैं कहीं का न रहूंगा।"—सोमधर बोला।

सोमधर की बात सुनकर साधु मुसकराने लगा। बोला—"तो फिर इस धन से लाभ क्या, जब तुम इसके बारे में किसी को बता भी नहीं सकते ?"

सोमधर चुप रहा। साधु बोला—"खैर, तुम राजा से कुछ धन मांग तो सकते ही हो।"

राजा से धन मांगने की बात सुनकर सोमधर खुश हो गया। साधु की बात मानकर वह राजा के पास गया। "मैं बड़ी मुसीबत में हूं।"— कहकर राजा से कुछ धन मांगा।

सोमधर की बात सुनकर राजा ने कहा—"मेरे पास जो कुछ है, सब प्रजा का है। उसे मैं तुम्हें कैसे दे

दूं ?"

सोमधर हताश हो गया। फिर सोचकर बोला—"महाराज, आप रुद्रदेव का विशाल मंदिर बनवा रहे हैं। मुझे वहां कुछ काम सौंप दें। सैकड़ों मजदूर वहां काम कर रहे हैं। मैं उस काम की देखभाल कर सकता हूं। पुण्य के साथ-साथ मुझे कुछ पैसा भी मिल जाएगा।"

सोमधर ने सोचा था—'मंदिर में काम की देखभाल करते समय, मौका मिलने पर अपना धन निकाल लूंगा।'

राजा ने उसे मजदूरों की देखभाल का काम सौंप दिया। सोमधर दूसरे दिन से मंदिर में जाने लगा। वह हमेशा अपने धन की टोह में लगा रहता। सुबह सबसे पहले पहुंचने की कोशिश करता और शाम को बाद में आने की, मगर चौकीदार वहां चौबीसों घंटे रहते, इसी कारण वह धन नहीं निकाल पा रहा था।

एक दिन शाम को उसने मन में सोचा—'इस तरह तो कुछ न बनेगा। आज साहस करके अपना छिपा धन ले ही लूं। देखा जाएगा।'

बस, वह कुदाल लेकर खोदने लगा। चौकीदार ने उसे रोका, तो उसने कुदाल उठाकर चौकीदार को डरा दिया। चौकीदार चिल्लाया। दूसरे चौकीदार आ गए। समय की बात, उस शाम राजा भी मंदिर का काम देखने के लिए चले आए। वहां हो-हल्ला सुना, तो राजा ने सिपाही भेजकर पूरी बात जाननी चाही। सिपाही तुरंत सोमधर को पकड़ लाए।

राजा ने कहा—"तुम कुदाल से क्या खोद रहे थे? ठीक बताओ, वर्ना कड़ा दंड मिलेगा।"

सोमधर डर गया। उसने सारी बात ठीक-ठीक बता दी। सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ। सही बात जानने के लिए उन्होंने स्वयं वहां जाकर उस स्थान को खुदवाया। सचमुच वहां सोमधर ने धन छिपाकर रखा था।

राजा ने कहा—"सोमधर, मेहनत की कमाई छिपाकर नहीं रखी जाती। बताओ, इतना धन कहां से आया ?"

अब सोमधर क्या कहे। उसने क्षमा मांगते हुए राजा को बता दिया कि इतना धन कैसे कमाया ?

राजा ने कहा—"भगवान के मंदिर में जो चीज चढ़ जाती है, वापस नहीं ली जाती। तुमने स्वयं ही धन यहां छिपाकर इसे भगवान को सौंप दिया है। बोलो, क्या इसे वापस लोगे ?"

—"नहीं, महाराज ! मंदिर के नव-निर्माण में ही इसे लगा दीजिए। मैं मंदिर पर स्वर्ण कलश चढ़ाना चाहता था।"

राजा ने उसकी बात मान, उसे छोड़ दिया। फिर कहा—"सोमधर, जो काम तुम्हें सौंपा है, लगन से पूरा करो।"

सोमधर का मन बदल गया था। अब वह धन का लालच छोड़, मंदिर के नव-निर्माण में तन-मन-धन से जुट गया।●

पुल पर

—सत्यभूषण वर्मा

जापान के हिदा प्रदेश में एक गांव था सावागामि। वह नोरिकुरा पहाड़ी की तलहटी में बसा था। गांव में चोकिची नामक युवक रहता था।

एक रात चोकिची ने सपने में एक परी को देखा। परी के सिर पर सोने का मुकुट था। परी चोकिची के सामने आ खड़ी हुई। उसने कहा— 'चोकिची, तुम एक भले लड़के हो। सदा दूसरों की मदद करते हो। सुबह तुम ताकायामा नगर में जाओ। वहां मिसोकाई पुल पर सौभाग्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।'' इतना कहकर परी लोप हो गई।

इसके कुछ देर बाद चोकिची की नींद खुल गई। वह बहुत देर तक सपने के बारे में सोचता रहा। फिर उसने ताकायामा जाने का निश्चय किया। वह सोच रहा था— 'हो सकता है, सपने की बात सच हो जाए।'

ताकायामा नगर में पहुंचकर, वह मिसोकाई पुल पर जा खड़ा हुआ। पुल पर लोग आ-जा रहे थे। चोकिची चुपचाप उन्हें देखता रहा। और सोचता रहा। उसे कोई विशेष बात नजर नहीं आई। खड़े-खड़े दिन बीत गया। रात उसने सराय में बिताई।

अगली सुबह चोकिची फिर पुल पर जा खड़ा हुआ। इसी तरह एक-एक करके चार दिन बीत गए। पांचवां दिन आया, तो चोकिची फिर पुल पर खड़ा लोगों को आते-जाते देख रहा था। पांचवां दिन भी बीत चला, तो उसने सोचा— 'बस, अब बहुत हो गया। अगर आज भी कुछ न हुआ, तो मैं कल जरूर अपने घर लौट जाऊंगा।'

शाम को चोकिची चलने की सोच रहा था, तो एक व्यक्ति उसके पास आया। वह हलवाई था। उसकी दुकान पुल के पास ही थी। हलवाई चोकिची को रोज पुल पर खड़ा देखता था। आज उसने पूछ ही लिया— ''तुम कौन हो?'' चोकिची था सीधा-सादा। उसने हलवाई को पूरी घटना कह सुनाई।

हलवाई ने उसकी कहानी सुनी, तो ठहाका मारकर हंस पड़ा। बोला— ''कैसे भोले और मूर्ख हो तुम! एक स्वप्न देखा और स्वप्न की बात पर विश्वासकर, यहां चले आए। बहुत खूब! खड़े रहो।'' कहते-कहते हलवाई फिर हंसने लगा। बोला— ''अरे हां, ऐसा ही एक मजेदार स्वप्न मैंने भी कुछ दिन हुए देखा था। मैंने देखा कि दूर नोरिकुरा पहाड़ है। उसकी तलहटी में सावागामि नाम का एक गांव है, जिसमें चोकिची नाम का एक युवक रहता है।''

चोकिची के मन में आया कि वह चिल्लाकर कहे कि मैं ही सावागामि में रहने वाला चोकिची हूं। पर हलवाई उसे कुछ कहने का अवसर दिए बिना ही बोलता चला गया।

''वह जो चोकिची है, उसके आंगन में देवदार का एक पेड़ है।''

चोकिची ने फिर कहना चाहा कि सचमुच उसके आंगन में देवदार का एक पेड़ है। पर हलवाई ने इस बार भी उसे कुछ न कहने दिया, और बोला— ''मैंने सपने में उस पेड़ की जड़ खोदी, तो उसमें सोने, चांदी और मोतियों का ढेर निकला।''

अब चोकिची वहां न रुक सका। उलटे पांव अपने गांव की ओर लौट चला। घर पहुंचते ही उसने कुल्हाड़ी उठाई और आंगन में उगे हुए पुराने, विशाल देवदार वृक्ष की जड़ को खोदना आरंम्भ कर दिया। सचमुच उसके नीचे से सोने, चांदी और मोतियों का एक ढेर निकला। यह खजाना चोकिची के पूर्वजों ने गाड़ रखा था।

चोकिची अब बहुत धनी व्यक्ति बन गया। उसने अपना शेष जीवन दूसरों की भलाई करने में लगा दिया।
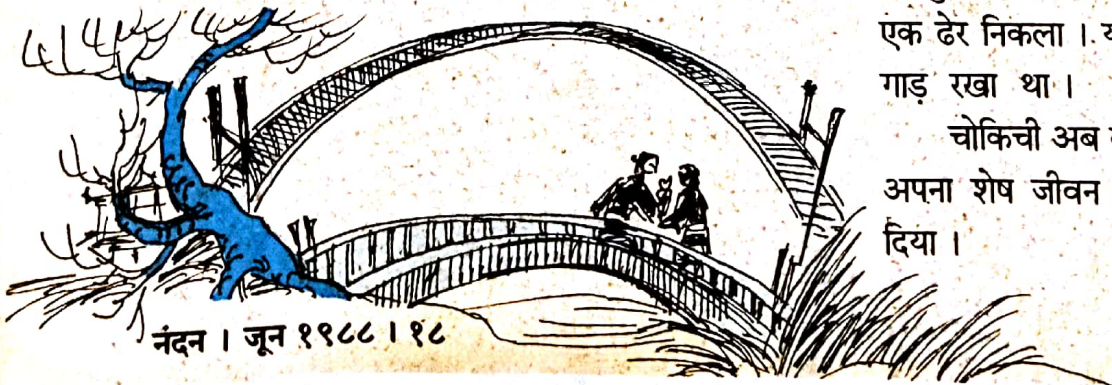
जादू की पुड़िया

—मालती शंकर

गुणवंती एक भोली लड़की थी। वह अपने माता-पिता की बुढ़ापे की संतान थी। बेचारी की मां बचपन में ही चल बसी थी। घर में भाभियों का राज हो गया। भाभियां चाहती थीं, गुणवती घर के बाहर ही रहे। वे अपने बच्चों को अच्छा भोजन कराएं, तो उसमें से गुणवंती को हिस्सा न देना पड़े। भाभियां सुबह ही दो बासी रोटियां उसे कपड़े में बांधकर देतीं और जानवर चराने भेज देतीं। साथ ही उसे शाम को लौटते समय घास खोदकर भी लानी पड़ती। इस तरह सुबह से शाम तक वह किसी न किसी काम में फंसी रहती। चौके- चूल्हे के पास भाभियों का राज था। उसे जो रूखा-सूखा मिलता, उसी को खाकर हारी-थकी गुणवंती रात को खाट पर सो जाती। अपने दुःख की बात किससे कहती? भाई भी भाभियों के इशारों पर नाचते थे। पिता थे बूढ़े। धीरे-धीरे वह जवान होने लगी।

गुणवंती विवाह लायक हुई, तो बूढ़े पिता ने उसके हाथ पीले कर, छुट्टी पा ली। मगर मुसीबतों का पहाड़ टूटा बेचारी गुणवंती पर। वह ससुराल पहुंची, तो दहेज के रूप में कुछ खास न पाकर सास मन ही मन जल उठी। तीसरे दिन ही सास ने पूरे गांव को बहू देखने का न्यौता दे डाला। उस दिन गुणवंती से कहा— "बहू, आज तुझे ही खाना बनाकर घर-परिवार वालों को खिलाना है।"

गुणवंती चौके में चली तो गई, पर परेशान। क्या बनाए? कैसे बनाए? सब्जियां उसने काट लीं, पर इतने लोगों के लिए छौंकने की हिम्मत ही न पड़ी। आटा भी था, पर इतनी ढेर सारी पूरी अकेले कैसे बनाए? आज हलुआ बनना था, वह कैसे बनाए? उसने कभी खाना बनाया ही न था। कुछ समझ में नहीं आया, तो वह बैठकर रोने लगी।

कुछ देर बाद सास आई। रसोई का हाल देखकर चिल्लाई— "अरी, तू क्या कर रही है? अभी तक कुछ नहीं बनाया। आने वालों को क्या खिलाएगी?" गुणवंती कुछ न बोली। आखिर सास को ही खाना बनाना पड़ा, मगर उस दिन सास ने सबके सामने उसे खूब जली-कटी सुनाई। क़हा— "नाम है गुणवंती, मगर है मिट्टी की माधो। खाना बनाना तक नहीं आता। पढ़ी-लिखी भी नहीं। मेरे बेटे के तो भाग्य फूट गए। मैं इस निखट्टी को घर में रखकर क्या करूंगी?"

गुणवंती परेशान हो उठी। उसने कोशिश की, सास को सच्ची बात बता दे और कहे— "मुझे खाना बनाना सिखा दो।" मगर सास का गुस्सा देख, उसकी हिम्मत जवाब दे गई।

दिन बीतते रहे और साथ-साथ सास का गुस्सा भी बढ़ता रहा। बहू गुणवंती खाना नहीं बनाती थी, इसीलिए सास ने उसे नदी से पानी लाने का कठिन काम सौंप दिया। एक दिन सुबह की किरण फूटने से पहले वह पानी लेने चल दी। नदी पर जाकर गुणवंती सुबक-सुबककर रोने लगी। तभी पीछे से किसी ने बड़े दुलार से उसे थपथपाया। गुणवंती ने पलटकर देखा, तो दंग रह गई। कई रंग-बिरंगी, मनमोहक परियां उसके पीछे खड़ी थीं।

परियों ने उससे अकेले में बैठने का कारण पूछा। गुणवंती ने अपनी परेशानी भरी राम कहानी सुनाते हुए कहा— "मां को छोड़कर मेरे सब रिश्तेदार हैं। फिर भी बिल्कुल अकेली हूं। आज मां होती, तो क्या वह मुझे खाना बनाना न सिखाती?"

गुणवंती की बात सुन, परियों को उस भोली लड़की पर बड़ा तरस आया। उन्होंने समझाया— "तुम परेशान न हो। हम तुम्हें एक जादुई पुड़िया देते हैं। पुड़िया में से थोड़ा-सा पराग लेकर तुम बर्तन में डाल देना। फिर खाने की जिस चीज का नाम लोगी, वह तुम्हें तैयार मिलेगी। घर वाले समझेंगे, तुम बनाती हो। तुम रोज इसी समय पानी भरने आया करो। रोज

हमसे एक पुड़िया ले जाकर खाना बनाओ। पर याद रखना, इस बात का राज जिस दिन किसी को बता दोगी, हम तुम्हें यहां नहीं मिलेंगी।" कहकर परियों ने उसे पुड़िया दे दी। उस दिन उसने ऐसा स्वादिष्ट खाना बनाया कि सास भी अंगुलियां चाटती रह गई। बस, गुणवंती की धाक जमने लगी।

एक सुबह गुणवंती को उठने में देर हो गई। वह जल्दी-जल्दी नदी तट पर पहुंची, मगर परियां न मिलीं। वह बड़ी देर इंतजार करती रही। सूरज काफी चढ़ आया, तो हारकर घर लौटी। आज वह खाना नहीं बना पाई।

अब तो सास की बन आई। बोली— "अजीब नखरे हैं इस बहू के! अच्छा-खासा खाना बनाना आते हुए भी, हाथ पर हाथ धरे चौके में बैठी है। अब मेरी भी जिद देख, मैं भी खाना नहीं बनाऊंगी।"

गुणवंती ने खाना बनाने की कोशिश की, उस दिन सब्जी में नमक तेज हो गया और दाल जल गई। यह देखकर घर में हंगामा-सा उठ खड़ा हुआ। शाम को सास ने बेटे से कहा— "अजीब सिरफिरी है यह बहू। अब तक इतना अच्छा खाना बनाती थी। आज सारा खाना बेकार बना दिया। पता नहीं क्या चाहती है यह?"

गुणवंती का पति भी परेशान था। उसने गुणवंती से पूछा— "तू इतना अच्छा खाना बना लेती है, पर आज क्या हो गया तुझे?" गुणवंती सुबकती हुई बोली— "अभी मैं तुम्हें कुछ नहीं बता पाऊंगी, पर समय आने पर तुम्हें सब कुछ बता दूंगी। मैंने जान-बूझकर कुछ नहीं किया।"

इसके बाद गुणवंती रोज तड़के पानी लेने जाती, पर परियां उसे न मिलतीं। कुछ दिन बाद शुक्ल पक्ष आया। चांदनी रातें शुरू हुईं। परियां फिर धरती पर घूमने आईं। एक दिन गुणवंती को भी मिलीं। उन्हें देखते ही गुणवंती की जान में जान आ गई। उसने रो-रोकर अपनी मुसीबत बताई। परियां दुखी होते हुए बोलीं— "हम परियां अंधेरी रात में घूमने-फिरने नहीं निकलतीं। उस अंतिम रात अगर तुम हमें यहां मिल गई होतीं, तो हम तुम्हें कई पुड़ियां एक-साथ दे देतीं। तुम तो सूरज की किरणें निकलने तक आई ही नहीं। मगर जो बीत गया, उसे भूल जाओ। लो, पुड़िया ले जाओ। अपनी सास को अच्छा खाना बनाकर खिलाओ। वह खुश हो जाएगी।"

आज गुणवंती ने पुड़िया लेने से इंकार करते हुए कहा— "पुड़ियों का चक्कर फिर मुझे परेशानी में डाल सकता है। मैं अपने घर में शांति से रहना चाहती हूं। वह तभी हो सकता है, जब मैं बिना पुड़ियों के खाना बनाना सीख जाऊं। तुम मुझे खाना बनाना सिखा दो।"

परियां बोलीं— "भोली लड़की, हम खाना खातीं ही नहीं, तो बनाना क्या सिखा पाएंगी!"

गुणवंती चुप थी। उसे परेशान देख, परियों ने आपस में कुछ विचार किया, फिर गुणवंती से बोलीं— "हम तुम्हें राज की एक बात बताती हैं। हम परियां धरती पर आने से पहले एक बहुत ही झीना वस्त्र ओढ़ती हैं, ताकि धरती की धूल-धक्कड़ या कीड़े-मकोड़े हमारे ऊपर बुरा असर न डालें। इस वस्त्र की दो विशेषताएं हैं— यह चाहे जितना बड़ा या छोटा हो सकता है। दूसरी विशेषता है कि रात में तो कोई हमें देख सकता है, पर सूरज की किरणें निकलने पर हमें कोई देख नहीं सकता। हम अपना एक वस्त्र तुम्हें देती हैं। उसे ओढ़कर रसोई घर में जाना। सास खाने में क्या चीज, कैसे बनाती है, तुम वहां खड़ी होकर चुपचाप देखती रहना। सास तुम्हें नहीं देख पाएगी। मगर अंधेरे में ऐसा मत करना। बस, इस तरकीब से थोड़े ही दिनों में तुम खाना बनाना सीख जाओगी। हां,

इस बारे में किसी को कुछ बताना नहीं, वर्ना यह वस्त्र हवा में उड़कर दूर चला जाएगा।''

गुणवंती को इस बात से डर तो बहुत लगा, पर मरती क्या न करती। उसने वस्त्र ले लिया। उसे ओढ़, डरती-डरती चौके में पहुंच गई।

इस तरह दस-पंद्रह दिन बीत गए। अब गुणवंती खाना बनाने की विधि जान गई। एक दिन उसकी सास को बुखार आ गया। जब वह खाना बनाने चौके में पहुंची, तो चक्कर आने के कारण हाथ-पैर नहीं चल रहे थे। उन्हें हांफती देखकर गुणवंती को तरस आ गया। वह भूल गई कि उसे यहां सिर्फ चुप खड़े रहना है। उसने धीरे से बेलन उठाया और रोटियां बेलने लगी। जादुई वस्त्र ओढ़े होने के कारण गुणवंती दिखलाई नहीं देती थी। सास बेलन को चकले पर चलता देख, डर गई। वह भूत-भूत कहकर चीखती हुई भागी। भागते हुए उसने चौके की कुंडी लगा दी। गुणवंती हक्की-बक्की रह गई। अब चौके के बाहर कैसे निकले ? तभी ससुर ने चौके के किवाड़ खोलते हुए कहा— ''कोई भूत-वूत नहीं। तुम्हें बुखार की गरमी के कारण ऐसा लगा होगा।'' इसी बीच गुणवंती चौके से निकल गई। पर कुछ देर बाद वह वस्त्र अंदर रखकर आई। उसने सास को खाट पर लिटा दिया। फिर भोजन बनाने रसोई में चली गई। उसने अपने हाथों से खाना बनाकर सबको खिलाया, तो सभी फिर से प्रसन्न हो गए।

उस दिन खाना खाने के बाद पति ने पूछा— ''आज तुमने फिर स्वादिष्ट खाना बना दिया। क्या हो जाता है तुम्हें ? मां तो भूत से इतना डर गई है कि वह रसोई में जाती ही नहीं। तुम उस दिन कुछ बताने को कह रही थीं। क्या थी वह बात ?''

गुणवंती हंसकर बोली— ''चलो, मां जी के पास चलकर सारा राज खोलती हूं। उस दिन भूत भी मैं ही थी।'' इसके बाद गुणवंती ने शुरू से आखिर तक सारी बात बता दी। कहा— ''परियों के कारण यह सब हुआ।''

सुनकर सास भी हंसने लगी। बोली— ''कहां है वह जादुई वस्त्र ?''

गुणवंती वस्त्र को कमरे में लेने गई, मगर वह तो पहले ही हवा में उड़ चुका था। गुणवंती उसे उड़ता देखती रही। वह समझ गई— परियों ने जो कहा था, सच हुआ। मगर अब उसे चिंता नही थी। वह खाना बनाना जान गई थी। ●
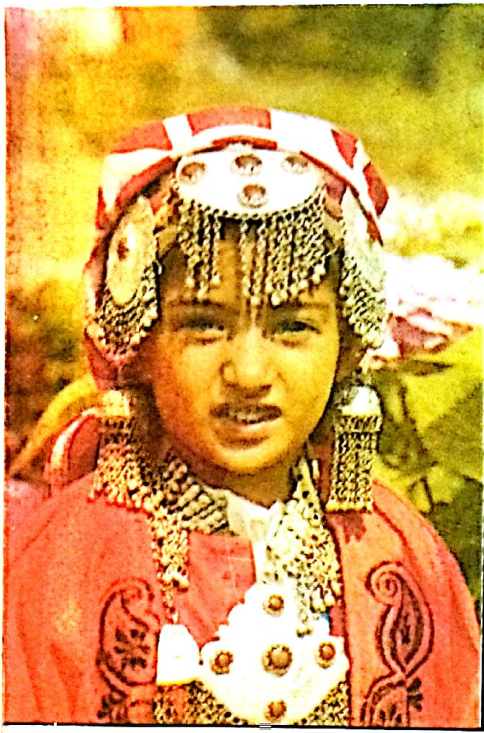
आओ चलें पहाड़ पर

आसमान को छूते रस्ते
खुली हवा के झोंके हंसते,
संकरे गलियारों से आते
झरने ले पानी के बस्ते।

दूर-दूर तक कंकर-पत्थर
कहीं बर्फ के छुटपुट गट्ठर,
जंगल कहीं, कहीं पर बंजर
घाटी-घाटी हरा समंदर।

चढ़ते जाएं हर बाधा को
हम हर बार पछाड़कर,
आओ, चलें पहाड़ पर।

दौड़ लगाते नदियां-नाले
चट्टानों को फाड़कर,
आओ, चलें पहाड़ पर!

— रत्नप्रकाश शील
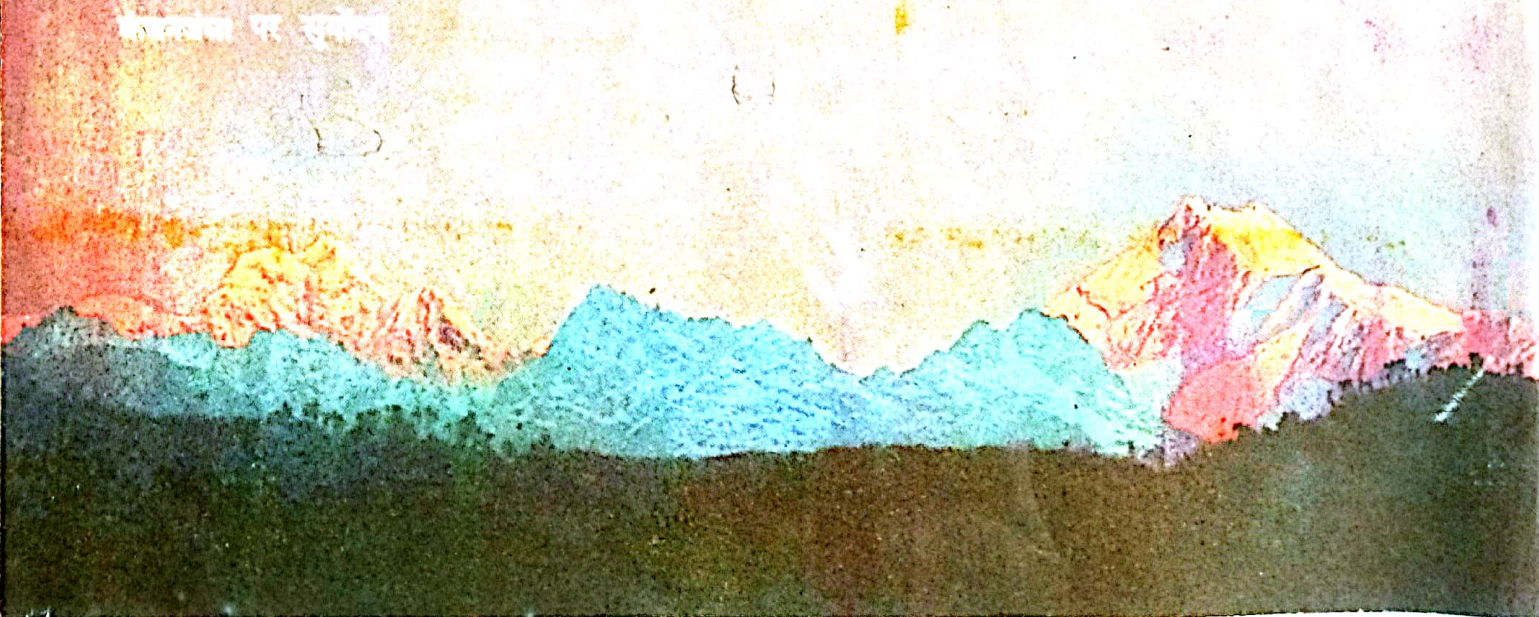
नक्की झील : माउंट आबू
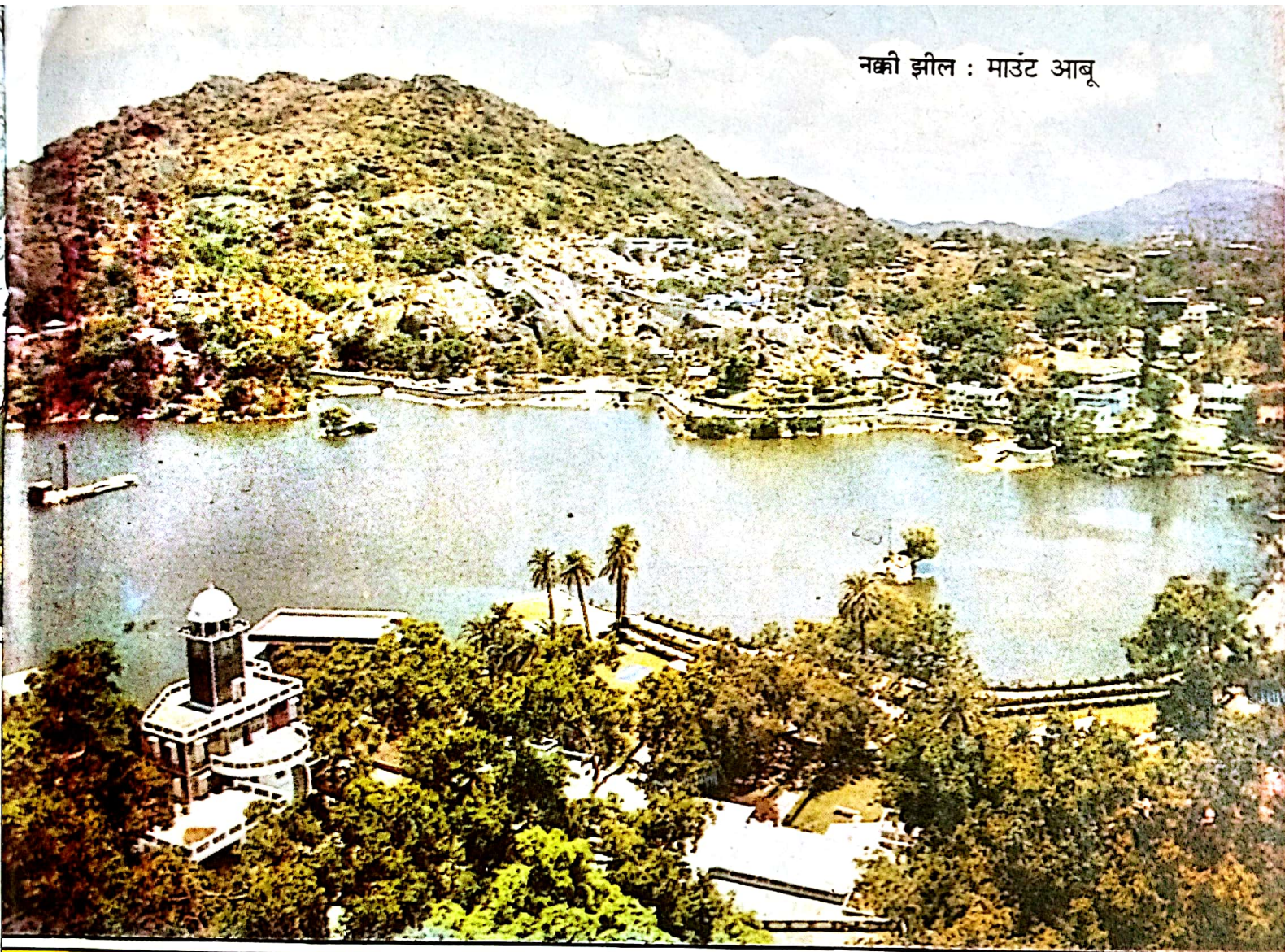
चित्र : पी. के. आंगरा, विद्याव्रत, रामकृष्ण शर्मा, देवब्रत बनर्जी, सूरज एन. शर्मा

हेम कुंड :हिमालय में

जोशी मठ पर बर्फ गिरी

देवभूमि देव प्रयाग
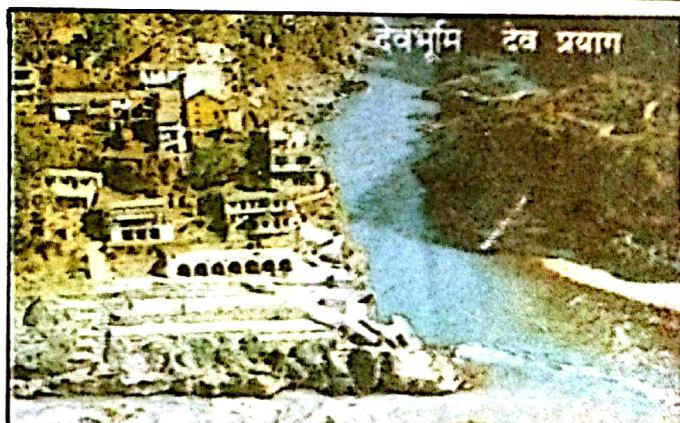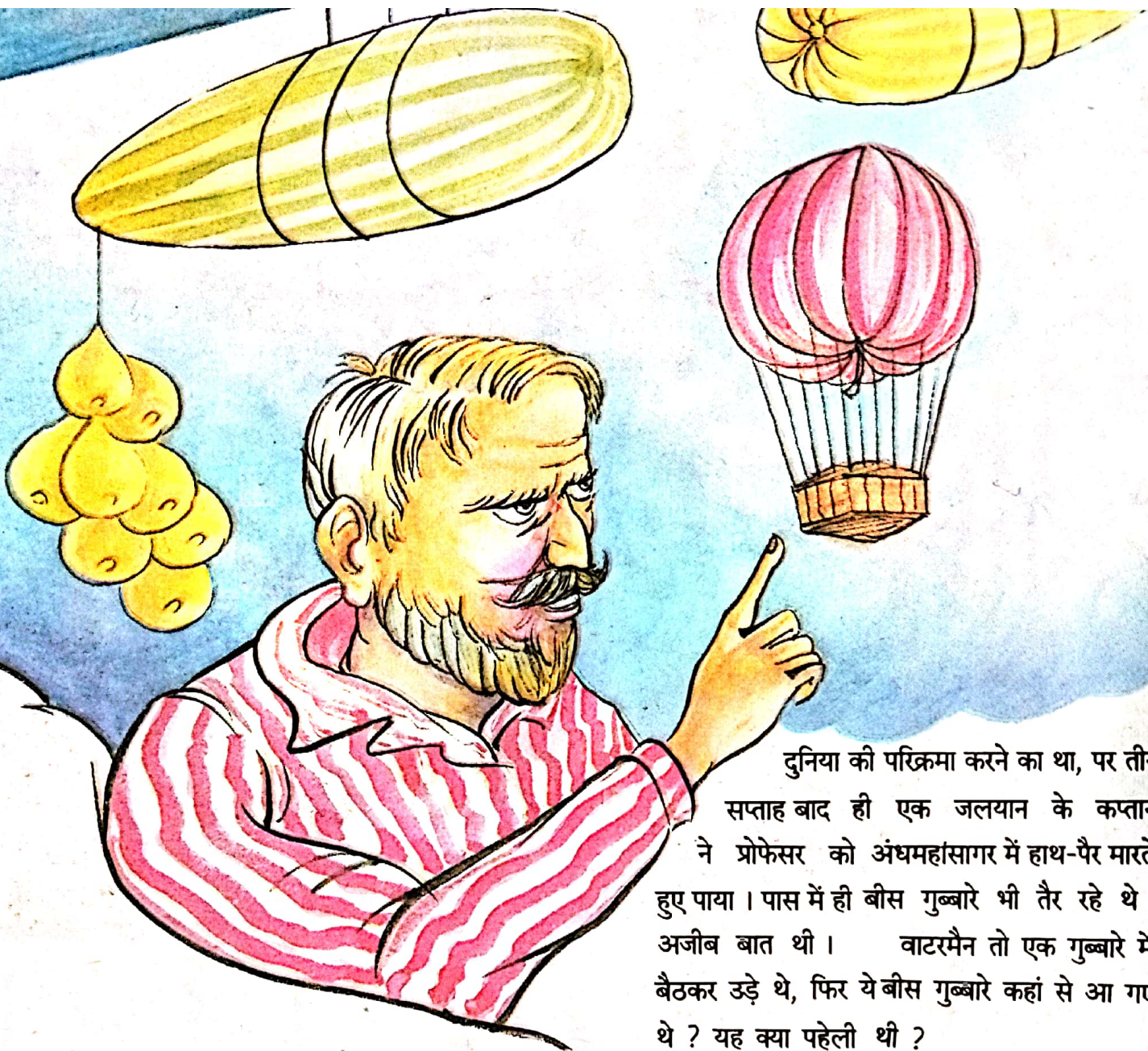
एक और बीस

— विलियम पेन द्यु बोई

एक और बीस यानी कुल इक्कीस गुब्बारों की कहानी है यह। अमरीका के सान फ्रांसिस्को नगर में रहते थे प्रोफेसर विलियम वाटरमैन शरमन। बच्चों को पढ़ाया करते थे। उनका अपना और कोई न था। रिटायर हुए तो उन्होंने सोचा— 'दुनिया की सैर की जाए।'

प्रोफेसर ने एक बहुत बड़ा गुब्बारा बनवाया। उसके नीचे बांस की बनी एक झोंपड़ी रहने के लिए लटका दी गई। फिर उसमें जरूरत का सामान रखा। अकेले ही यात्रा पर निकल पड़े। प्रोफेसर का इरादा दुनिया की परिक्रमा करने का था, पर तीन सप्ताह बाद ही एक जलयान के कप्तान ने प्रोफेसर को अंधमहासागर में हाथ-पैर मारते हुए पाया। पास में ही बीस गुब्बारे भी तैर रहे थे। अजीब बात थी। वाटरमैन तो एक गुब्बारे में बैठकर उड़े थे, फिर ये बीस गुब्बारे कहां से आ गए थे ? यह क्या पहेली थी ?

जहाज पर प्रोफेसर का इलाज हुआ। खूब आदरपूर्वक रखा गया था उन्हें। जहाज के कप्तान ने पूछा— "प्रोफेसर वाटरमैन, क्या आप अपनी यात्रा के अनुभव सुनाएंगे।"

"एकदम नहीं, कभी नहीं। मैं अपनी कहानी सान फ्रांसिस्को पहुंचकर ही सुनाऊंगा, क्योंकि वहां के अमरीकी खोज यात्रा क्लब ने ही मेरी यात्रा की व्यवस्था की थी।"— प्रोफेसर ने गुस्से से कहा। इस पर कप्तान को क्रोध तो आया, पर करता क्या, चुप हो गया। हां, दुनिया भर के अखबारों में प्रोफेसर वाटरमैन के बारे में तरह-तरह की खबरें छपने लगीं। जहाज प्रोफेसर को लेकर न्यूयार्क पहुंचा। नगर के मेयर ने प्रोफेसर का स्वागत किया। उनकी रोमांचक

यात्रा के बारे में पूछा, पर प्रोफेसर ने उसे भी कुछ नहीं बताया।

अमरीका के राष्ट्रपति ने प्रोफेसर के लिए अपनी रेलगाड़ी भेज दी। प्रोफेसर सान फ्रांसिस्को की ओर चल दिए। पूरे देश में प्रोफेसर वाटरमैन की रोमांचक यात्रा के बारे में जानने की उत्सुकता थी।

सान फ्रांसिस्को नगर में वाटरमैन के स्वागत की तैयारी की गई। जगह-जगह रंग-बिरंगे गुब्बारे लटका दिए गए। कुछ लोगों ने वाटरमैन को स्टेशन से क्लब तक लाने के लिए गुब्बारा बग्घी बनाई। उसमें घोड़े जुते थे। और पहियों के साथ बड़े-बड़े गैस के गुब्बारे लगे थे। इस कारण बग्घी सड़क से कुछ ऊपर, हवा में तैरती हुई-सी चलती थी।

लेकिन प्रोफेसर को गुब्बारा बग्घी में नहीं लाया जा सका। न जाने कैसे एक गुब्बारा फूट गया। बग्घी का संतुलन बिगड़ गया। वह सड़क पर आ गिरी। घोड़े जीन तुड़ाकर भाग गए।

खैर, प्रोफेसर वाटरमैन सही-सलामत नगर में आ पहुंचे। रंग-बिरंगे, छोटे-बड़े गुब्बारों से अपना ऐसा स्वागत देखकर वह बहुत खुश हुए। फिर उन्होंने अपनी रोमांचक यात्रा की कहानी बतानी शुरू की।

जब प्रोफेसर वाटरमैन गुब्बारे में बैठकर दुनिया की परिक्रमा करने लगे, तो उनके चार मित्र विदा देने आए थे। प्रोफेसर ने अपने मित्रों से कहा कि पूरे एक वर्ष तक गुब्बारे में सैर करने के बाद वापस आएंगे।

जमीन से बंधी रस्सियां कटते ही गुब्बारा बड़ी शान से आकाश में उठ गया। सान फ्रांसिस्को नगर को पार करता हुआ, प्रशांत महासागर के ऊपर जा पहुंचा। चमचमाती धूप में प्रोफेसर को चारों ओर के दृश्य बहुत लुभावने दिखाई दे रहे थे। जब गुब्बारा नगर के ऊपर से गुजर रहा था, तो लोगों में सनसनी फैल गई थी। कई लोग तो उधर ही भागने लगे, जिधर गुब्बारा उड़ता जा रहा था। कुछ इस भागा-दौड़ी में टकराकर घायल भी हो गए थे। प्रोफेसर वाटरमैन ने यह सब देखा था।

प्रोफेसर की गुब्बारा यात्रा निर्विघ्न चल रही थी। चौथे दिन आकाश में बादल घिर आए। तेज बरसात होने लगी। प्रोफेसर का सामान और वह खुद बुरी तरह भीगने लगे। प्रोफेसर ने गुब्बारे को बादलों से ऊपर ले जाने की सोची। उन्होंने कुछ सामान नीचे फेंक दिया। गुब्बारे का वजन कम हुआ, तो वह झट बरसते बादलों से ऊपर उठ गया। अब प्रोफेसर का गुब्बारा पानी भरे बादलों के ऊपर मजे से उड़ रहा था।

रात को तारों भरे आकाश को देखते हुए चांदनी में उड़ना बहुत ही अच्छा लगता था उन्हें। नीचे समुद्र जैसे चांदी का बन जाता था।

उन्होंने जूठे बरतनों को साफ करने का नया ढंग निकाला था। वह बरतनों को हुक में फंसाकर नीचे समुद्र में लटका देते। बरतन धुल जाते, तो ऊपर खींच लेते। गंदे कपड़े भी इसी तरह लटकाकर धो लेते थे। गीले कपड़े ऊपर तक आते-आते हवा में एकदम सूख जाते थे। एक-दो बार प्रोफेसर ने ऊपर से डोर फेंककर मछलियां पकड़ीं, पर ऊपर खींचते समय मछलियां बीच में ही फिर से पानी में जा गिरीं।

एक दिन उन्हें समुद्र में एक छोटी-सी नौका जाती दिखाई दी। प्रोफेसर वाटरमैन ने शीशा लिया और उसे चमकाकर मोर्स कोड में नौका को संदेश देने लगे। जवाब आया — 'हम आपकी भाषा नहीं समझते।'

विलियम पेन द्यु बोई— फ्रांसीसी लेखक, बच्चों के लिए कई पुस्तकें लिखीं। यहां हम उनकी प्रसिद्ध रचना 'ट्वेंटी वन बैलून्स' की संक्षिप्त कथा दे रहे हैं। इस पुस्तक के चित्र भी लेखक ने बनाए थे। — सं.

एक बार तो वह नाराज हुए। फिर सोचने लगे — 'चलो, अच्छा ही हुआ। मैंने एक वर्ष तक अकेले रहने की ठानी है। फिर किसी से भी बात करने की क्या जरूरत है?'

यात्रा का सातवां दिन बहुत ही भयानक रहा। न जाने कहां से ढेर सारी समुद्री चिड़ियां आकर गुब्बारे के चक्कर काटने लगीं। उसी समय दूर एक द्वीप दिखाई दिया। प्रोफेसर ने कुछ भोजन सामग्री नीचे फेंक दी। इस तरह समुद्री चिड़ियां परे हट गईं।

लेकिन चिड़ियां थोड़ी ही देर बाद फिर लौट आईं। एक चिड़िया ने चोंच से गुब्बारे में सूराख कर दिया। फिर गुब्बारे के अंदर घुसकर पंख फड़फड़ाने लगी। प्रोफेसर बुरी तरह घबरा गए। गुब्बारे से हवा निकलने लगी और वह तेजी से नीचे उतरने लगा। उन्होंने इस संकट की तो कल्पना भी नहीं की थी। गुब्बारे में हुए छेद की मरम्मत करना मुश्किल था। उस समय प्रोफेसर वाटरमैन समुद्र के ऊपर उड़ रहे थे। वह एक-एक करके अपना सामान बाहर फेंकने लगे। उन्हें आशा थी कि इस तरह गुब्बारे का नीचे समुद्र की ओर गिरना रुक जाएगा। वह सामान फेंकते रहे, पर गुब्बारा तेजी से नीचे गिर रहा था। प्रोफेसर ने देखा, समुद्र में कई शार्क तैर रही थीं। अब तो वह और भी घबरा उठे। प्रोफेसर सोच रहे थे — 'मान लो अगर गुब्बारा शार्कों के बीच में जाकर गिरे, तो ... तो!' इससे आगे सोचने की हिम्मत न हुई।

बस, यही गनीमत हुई कि गुब्बारा शार्कों के बीच में गिरता-गिरता रह गया। एक शार्क रस्सियों से लटके प्रोफेसर वाटरमैन को देखकर ऊपर उछली। उनके पैर शार्क के सिर से टकराए, पर गुब्बारा उन्हें लिए हुए द्वीप के एक पेड़ पर जा अटका। वाटरमैन की जान बच गई। गुब्बारे में बैठकर दुनिया की सैर करने का उनका सपना टूट गया था। बहुत ही दुखी थे बेचारे विलियम वाटरमैन शरमन।

प्रोफेसर वाटरमैन का गुब्बारा जिस द्वीप पर गिरा था, वह था काराकातोआ। उस पर एक विशाल ज्वालामुखी धधक रहा था।

वाटरमैन को थकान के कारण नींद आ गई। कुछ देर बाद किसी ने उन्हें जगाया। प्रोफेसर ने देखा, उनके सामने एक व्यक्ति खड़ा था। उसने बहुत उम्दा कपड़े पहन रखे थे। प्रोफेसर ने उसे अपना परिचय दिया। बताया कि एक समुद्री चिड़िया के कारण कैसे दुनिया की सैर का सपना टूट गया था!

उस व्यक्ति ने कहा — "मेरा नाम एफ है। आइए, मैं आपको अपनी बस्ती में ले चलूं।" उसके साथ-साथ चलते हुए प्रोफेसर सोच रहे थे — 'कैसा विचित्र नाम है इस आदमी का!'

एफ प्रोफेसर वाटरमैन को एक गहरी खान में ले गया। वहां चारों ओर बहुमूल्य हीरे बिखरे पड़े थे।

एफ ने कहा — "प्रोफेसर, ये सारे हीरे आपके हैं, क्योंकि अब हम आपको यहां से कहीं नहीं जाने देंगे।"

प्रोफेसर घबराकर बोले—"क्यों?"

एफ ने कहा — "इसलिए कि आपने यहां हीरे के भंडार देख लिए हैं। अगर आप चले गए, तो दुनिया को इस खजाने का पता चल जाएगा। यहां लालची लोग आने लगेंगे, तब हम यहां नहीं रह सकेंगे!"

इसके बाद एफ प्रोफेसर वाटरमैन को अपनी बस्ती में ले गया। वहां बीस परिवार रहते थे।

प्रोफेसर वाटरमैन उस बस्ती में रहने लगे। उन्हें वहां कोई तकलीफ न थी। दुनिया में कहीं कोई उनकी प्रतीक्षा भी नहीं कर रहा था। फिर भी वह उदास हो जाते। सोचते — 'क्या मैं यहां से कभी नहीं जा सकूंगा?'

एक दिन सब लोग बैठे हुए प्रोफेसर वाटरमैन से बातें कर रहे थे, तभी द्वीप की धरती कांपने लगी।

एक आदमी उन सबको तुरंत जंगल में ले गया। वहां लकड़ी का बहुत बड़ा तख्त रखा था। उस पर बीस गुब्बारे लगे हुए थे।

एफ ने प्रोफेसर से कहा — "कितने दुःख की बात है कि हमें आज द्वीप से जाने की तैयारी करनी पड़ रही है। ऐसा तो कभी नहीं सोचा था।" फिर बोला — "प्रोफेसर, अगर आप चाहें तो चलने से पहले हीरे की खान में जाकर कुछ हीरे ले आएं। लेकिन संभलकर जाइए और जल्दी वापस आइए। हम आपकी प्रतीक्षा करेंगे।"

प्रोफेसर हीरे की खान की तरफ दौड़ चले। पर धरती बुरी तरह कांप रही थी। वह बार-बार गिर पड़ते। आखिर उन्होंने फैसला किया कि हीरों के लालच में पड़ना ठीक नहीं। वह लौट आए। फिर तख्त की रस्सियां काट दी गईं। बीस गुब्बारे उसे आकाश में ऊपर की तरफ ले चले। प्रोफेसर ने देखा, बस्ती के मकान टूट-टूटकर गिर रहे थे। धरती ऊपर-नीचे हो रही थी। गड़गड़ाहट की आवाज आ रही थी। फिर भी प्रोफेसर खुश थे और काराकाताओ पर रहने वाले लोग उदास।

थोड़ी देर बाद ही ज्वालामुखी जोरदार आवाज के साथ फट पड़ा। द्वीप का बहुत बड़ा भाग टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर गया। बीस गुब्बारों से बंधा लकड़ी का तख्त उड़ता रहा। नीचे से नीला समुद्र, काले पहाड़, कितने ही हरे-भरे द्वीप गुजर गए। एफ ने प्रोफेसर से कहा — "हम आपके साथ आपकी दुनिया में नहीं जाना चाहते। कहीं किसी निर्जन द्वीप पर उतरकर अपनी बस्ती बसाएंगे। आप चाहें तो हमारे साथ चलें या ..."

प्रोफेसर वाटरमैन ने कहा — "नहीं, नहीं, मैं अपने देश में लौटना चाहूंगा।" एक निर्जन द्वीप पर एफ तथा उसके सब साथी पैराशूटों के सहारे उतर गए।

प्रोफेसर वाटरमैन बीस गुब्बारों के साथ अकेले यात्रा कर रहे थे। आखिर गुब्बारे फूट गए और प्रोफेसर अंध महासागर में आ गिरे। वहीं जहाज के कप्तान ने उन्हें डूबते-उतराते पाया था।

सारी दुनिया जान गई कि प्रोफेसर के साथ क्या घटा था और बीस गुब्बारों का क्या रहस्य था?

लोगों ने प्रोफेसर से जानना चाहा कि अब उनका क्या कार्यक्रम है?

प्रोफेसर वाटरमैन कुछ पल चुप रहे। बोले —"गुब्बारे में बैठकर दुबारा दुनिया की सैर पर निकलूंगा। पूरे एक वर्ष यात्रा करूंगा। और हां, इस बार कोई समुद्री चिड़िया मेरे गुब्बारे में छेद नहीं कर पाएगी। उसमें चिड़ियों को पकड़ने का पिंजरा लगा रहेगा।"

सब हैरानी से बूढ़े प्रोफेसर वाटरमैन की ओर देख रहे थे। ●

रानी के जेवर

— कन्हैयालाल विद्यार्थी

किसी गांव में सुखदेव नामक एक किसान रहता था। वह बहुत मेहनती और ईमानदार था। सभी से प्यार से बोलता तथा कुशल व्यवहार करता था। गांव वाले उसे बहुत पसंद करते थे।

गरमी की दोपहरी थी, इसलिए खेत में काम करते-करते सुखदेव थककर एक पेड़ के नीचे लेट गया। उसी बीच उसकी पत्नी खाना लेकर आ गई।

सुखदेव खाना खाने लगा। उसकी पत्नी ने बैलों को पास वाले पेड़ से बांध दिया। बैल जहां बंधे थे, वहां एक टीला था। बैलों ने सींग से टीले पर गड्ढा कर दिया।

थोड़ी देर बाद सुखदेव की पत्नी घास लेकर बैलों के सामने डालने आई। उसने देखा, गड्ढे में लाल कपड़े में कुछ सामान बंधा है। उसने सुखदेव को बताया। वह गड्ढे को देखकर पहले तो आश्चर्य में डूबा रहा। फिर उसने लाल कपड़े को खोदकर निकाला। उसमें एक बक्सा था। उसने धीरे-से बक्से को खोला। देखा, तो हैरान हो गया। उसमें कीमती जेवर थे। "भगवान ने अब हमारी सुन ली है। आराम से जिंदगी कटेगी।"— उसकी पत्नी ने कहा।

"नहीं, मैं अपनी कमाई और ईमानदारी से पेट पालूंगा। ऐसी दौलत से जीवन में शांति नहीं मिलती। यह जिसका है, उसी को दे दूंगा।"—सुखदेव ने कहा।

—"लेकिन यह पता कैसे लगेगा, यह जेवर किसका है?"—पत्नी ने कहा।

"एक डुग्गी पीटने वाला कह रहा था, रानी का जेवर चोरी हो गया है। शायद उन्हीं का हो। पकड़े जाने के भय से चोर पेड़ के नीचे गाड़ गये हों।"— पति बोला।

खेत से लौटने पर किसान ने गांव के सभी सम्मानित लोगों को गहने दिखाते हुए सारी बात बता दी। सभी लोगों की राय थी, ये गहने रानी के ही जान पड़ते हैं, इसलिए वह स्वयं उन्हें राजा को दे कर आए मगर रात्रि अधिक हो चुकी थी। महल भी काफी दूर था। "अभी रात हो चुकी है। राजमहल दूर है। रास्ते में कोई इन्हें छीन भी सकता है। मैं इन्हें मुखियाजी को सौंपता हूं। उनके घर में ये सुरक्षित रहेंगे।"— कहते हुए सुखदेव ने मुखिया को जेवर सौंप दिए।

नए चमकते जेवरों को देखते ही मुखिया के मन में खोट आ गया। उसने रात्रि में नए-नए जेवरों को छिपा, पुराने जेवर उसी तरह लाल कपड़े में लपेटकर बक्से में रख दिए।

सुबह जेवर लेकर किसान राजा के सामने पहुंचा। उसने सारा किस्सा बताया। मंत्री ने जेवर का बक्सा खोलकर देखा, तो जेवर पुराने थे, लेकिन जेवरों पर लिपटा कपड़ा राजमहल का ही था।

रानी ने कहा— "कपड़ा तो हमारा है, पर जेवर मेरे नहीं हैं।"

"नहीं, महाराज! ऐसा नहीं है। मैं चोर नहीं हूं।"— सुखदेव मंत्री की बात सुनकर डर सा गया।

सुखदेव एक सीधा और अनपढ़ किसान था। घबराहट में कांपने लगा। फिर बोला— "मैंने चोरी नहीं की है महाराज! न जेवर बदले हैं। मैंने इन्हें रात में चोरों के डर से गांव के मुखिया को सौंप दिए थे। रात भर उन्हीं के घर रखे रहे हैं ये जेवर।"

राजा और रानी को सुखदेव की बात सुनकर दाल में कुछ काला-सा लगा। राजा कुछ सोचकर बोले— "क्या यह सत्य है? तुमने ये गहने नहीं बदले?"

"हां, महाराज!"— किसान सुखदेव ने कहा।

राजा ने मंत्री को बुलाया। सिपाहियों को गांव के मुखिया को पेश करने की आज्ञा दी। कुछ ही देर में मुखिया दरबार में हाजिर था।

गांव वालों को जब यह पता चला कि गहनों की चोरी और हेरा-फेरी में सुखदेव को सजा मिलने वाली है, तो सभी चिंतित हुए। वे सब राजा के पास पहुंचे। सारी बात बताई।

राजा ने उनकी बातें गौर से सुनीं। विश्वास दिलाया

कि दोषी को ही सजा मिलेगी।

राजा ने मुखिया से कहा— "तुम उन चोरों का पता बता दो। उन्हें पकड़वाने के लिए जो हजारों का इनाम रखा गया है, वह तुम्हें दिया जाएगा। असली गहने किसके पास हैं, किसने बदले, यह बता दो। तुम्हें एक हजार सोने की मोहरें और मिलेंगी।"

एक हजार मोहरों का नाम सुनकर मुखिया के मुंह में पानी भर आया। वह सोचने लगा— 'उन गहनों से मोहरें कीमती हैं।'

मुखिया बोला— "महाराज, मुझे आज की मोहलत दें। मेरे गांव में दो शातिर चोर हैं। लगता है, उन्हीं का यह काम है। मैं पता लगाकर सही बात कल बताऊंगा।"

राजा ने मुखिया को जाने दिया, मगर उसके पीछे अपने जासूस भी लगा दिए। मुखिया कहीं गया नहीं। दूसरे दिन सुबह अपने घर से जेवर ले आया। राजा से कहा— "महाराज, लीजिए असली जेवर। चोरों ने इन्हें छिपाकर घर में रखा था और दूसरे जेवर कपड़े में बांधकर सुखदेव के खेत में गाड़ दिए थे।"

मगर तभी जासूसों ने राजा को सारी बात बता दी। अब मुखिया चुप। जब दो कोड़े पीठ पर पड़े, तो अपना अपराध कबूल कर लिया कि जेवर उसी ने बदले थे। चोर कौन थे, यह पता न चल सका, मगर फिर दो कोड़े पड़े, तो मुखिया चिल्लाया— "हुजूर, मैंने ही पास के गांव के एक नामी चोर से यह काम करवाया था।" चोर भी पकड़ा गया और मुखिया भी। उन्हें लम्बी जेल की सजा मिली। और सुखदेव को राजा ने उस गांव का नया मुखिया बना दिया। ●

खाली बंदूक

— शम्सुद्दीन

जार्ज मेरा बचपन का साथी था। वह लड़कपन से ही शिकार का बहुत शौकीन था। उन दिनों मैं और जार्ज केशकाल की घाटी में इकट्ठे काम कर रहे थे।

जार्ज केशकाल घाटी के रेस्ट हाउस में रहता था। जहां पर काम हो रहा था, वहां से रेस्ट हाउस दस किलोमीटर दूर था। जार्ज मोटर साइकिल से काम पर जाता। एक दिन शाम को जब वह काम से लौट रहा था, उसने शेर के दहाड़ने की आवाज सुनी। जार्ज की मोटर साइकिल अभी कुछ आगे बढ़ी थी कि उसे शेर दिखाई दिया। जार्ज ने मोटर साइकिल तेज की और वापस रेस्ट हाउस आ गया।

अगले दिन जार्ज को एक आदमी ने बताया— "कल शेर जंगल में एक महिला को मारकर खा गया। बेचारी महिला जंगल में पत्ते बीनने आई थी।" जार्ज का खून खौल उठा। अपनी बंदूक लेकर वह तुरंत जंगल की तरफ चल दिया। मैं और कुछ दूसरे लोग भी उसके साथ हो लिए। अब भी कभी-कभी शेर की दहाड़ गूंज उठती थी। जार्ज ने थोड़ी देर तो शेर का इंतजार किया। लेकिन जब शेर कहीं दिखाई नहीं दिया, तो जार्ज उत्तेजना में इधर-उधर गोलियां चलाने लगा। तभी एक झाड़ी के भीतर से शेर बाहर आया और हमारे एक साथी को घायल करता हुआ भाग गया।

धीरे-धीरे शेर के हमले बढ़ने लगे। दिन ढलने से पहले सबको घर भागने की जल्दी होती। क्या पता, शेर कहां से निकलकर आक्रमण कर दे? एक दिन खबर मिली कि शेर एक लड़के को उठाकर ले गया। उसकी तलाश में एक बार फिर से जार्ज लग गया। शेर के पंजों के निशानों को ढूंढ़ता हुआ जार्ज आगे बढ़ा। वे निशान जार्ज को तालाब के किनारे तक ले गए, परंतु वहां भी शेर का पता नहीं चला।

एक दिन एक बूढ़ा किसान रोता हुआ आया।

शेर उसकी बकरी को उठाकर ले गया था। बूढ़े की व्यथा सुनी, तो जार्ज पर जैसे शेर को मारने का जुनून सवार हो गया। वह बकरी के घसीटे जाने के निशानों को देखता हुआ बढ़ा। बहुत खोज करने के बाद उसे मरी हुई बकरी ही दिखाई दी। शेर का कहीं पता न चला।

यहां चारों ओर घनी झाड़ियां थीं। रात भी होने वाली थी। जार्ज बिल्कुल अकेला था। वह एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया। रात हुई। चारों ओर चांदनी बिखर गई। पेड़ पर कीड़े-मकोड़े घूम रहे थे। जार्ज को लगा, जैसे शेर बकरी के पास खड़ा है। मगर ध्यान से देखने पर पता चला, वह एक जंगली कुत्ता था।

अचानक जार्ज को अपने पीछे सरसराहट-सी महसूस हुई। पीछे मुड़कर देखा, तो लगा कि अब प्राण नहीं बचेंगे। पीछे की डाल पर एक सांप फन फैलाए बैठा था। जार्ज ने बंदूक में जो गोलियां आदमखोर शेर के लिए भरी थीं, वे सबकी सब सांप पर दाग दीं। उसके बाद जार्ज ने मुसीबत भरी रात काटी। जैसे-तैसे वह रेस्ट हाउस पहुंचा और बीमार हो गया। दोस्तों ने उसे अस्पताल में भर्ती कराया। जार्ज काफी लम्बे समय तक बीमार रहा।

इस दौरान जैसे शेर के हौसले और बढ़ गए। वह आए दिन किसी न किसी का शिकार करता रहा। अच्छा होने के बाद जार्ज रेस्ट हाउस में बैठा, अखबार पढ़ रहा था। तभी उसने लोगों के चिल्लाने की आवाज सुनी। पता चला कि चारा लाने वाली एक औरत पर आदमखोर शेर ने हमला किया है। औरत डर के मारे पेड़ पर चढ़ गई है। किसी में हिम्मत नहीं कि उसे बचाने जाए। जार्ज ने झट अपनी बंदूक निकाली और औरत की मदद के लिए भागा। उसके साथी जब तक उसे रोकते, वह दूर जा चुका था। जार्ज की पत्नी का भाई अलेक्ज़ेंडर भी उसके पीछे-पीछे गया।

जार्ज जंगल में पहुंचकर पेड़ पर चढ़ी औरत को ढूंढ़ने लगा। जल्दी ही उसे औरत दिखाई पड़ गई। औरत ने जार्ज को इशारे से बताया कि शेर पास की झाड़ियों में ही छिपा है। जार्ज ने बहुत कोशिश की, मगर उसे शेर दिखाई नहीं दिया। थोड़ी देर बाद उसने झाड़ियों में थोड़ी-सी हलचल देखी। उसने ध्यान से देखा, तो झाड़ी में उसे शेर छिपा दिखाई दिया। जार्ज ने निशाना साधकर गोली चला दी। लेकिन यह क्या! गोली तो चली ही नहीं। बंदूक खाली जो थी। उसे विश्वास हो गया कि शेर अब उसे नहीं छोड़ेगा। वह पसीना-पसीना हो गया। उसके होश उड़ गए। घबराहट में उसे कुछ नहीं सूझ पड़ा। इधर ट्रिगर दबाने की आवाज से शेर चौंक पड़ा। जार्ज समझ गया कि अब उसका अंतिम समय आ गया है। मौत को सामने देख, उसका सिर बुरी तरह घूमने लगा।

तभी शेर वहां से आहिस्ता-आहिस्ता उठा और जार्ज की तरफ बढ़ने लगा। जार्ज को घबराहट में कुछ न सूझा। वह जल्दी से पास के एक छोटे-से पेड़ पर चढ़ने लगा। लेकिन अचानक शेर ने एक छलांग लगाई और जार्ज के पैर का पंजा अपने मुंह में दबा लिया। जार्ज के होश उड़ गए। घबराहट में पेड़ की डाल उसके हाथों से छूटने ही वाली थी कि अचानक फायर की आवाज आई। फायर के साथ ही एक गोली आदमखोर शेर के माथे पर लगी और वह जमीन पर गिर पड़ा। यह गोली अलेक्ज़ेंडर ने चलाई थी।

जार्ज को दोबारा अस्पताल में भरती होना पड़ा। वहां उसका पैर काटना पड़ा और उसकी जगह एक नकली पैर लगाया गया। जार्ज अभी जिंदा है। यद्यपि अब वह शिकार नहीं कर सकता, लेकिन उसे संतोष है, उसकी वजह से लोगों को एक आदमखोर शेर से छुटकारा मिल गया। ●

पचीस गांव

—अरुण अलबेला

उन दिनों मगध में बौद्धधर्म का बोलबाला था । इस स्थिति से लाभ उठाकर कुछ मठाधीश अपना स्वार्थ साधना चाहते थे । उनमें पूर्वी अंचल के मठाधीश महंत माधवाचार्य प्रमुख थे । वह पड़ोसी राजा देवव्रत से मिले हुए थे और मगधपति भद्रबाहु को कमजोर करना चाहते थे ।

देवव्रत ने महंत को प्रलोभन दिया था कि मगध पर उसका अधिकार होते ही,वह एक चौथाई भाग उन्हें दे देगा । भद्रबाहु इससे अनजान थे । वह बौद्धधर्म के महंतों और प्रचारकों को पूरा सम्मान देते थे ।

इसके विपरीत माधवाचार्य दबी जबान से भद्रबाहु को धर्मनाशक कहने लगे थे । पड़ोसी राजा देवव्रत की प्रशंसा करके अपने अनुयाइयों को भड़काने लगे थे ।

एक दिन उन्होंने मगधपति के पास पत्र भेजा— 'महाराज, आप मुझे पचीस गांव भेंट में दें, ताकि वहां की आय से मठ और धर्म की रक्षा की जा सके ।'

—"धर्म की रक्षा करना सिर्फ मठाधीशों का काम नहीं, राजा का भी काम होता है । अतः एक गांव भी नहीं दिया जा सकता । पचीस गांव देकर हम अपने ही राज्य में एक छोटे राज्य का निर्माण नहीं होने देना चाहते ।"— कुमार प्रियदत्त ने राजा भद्रबाहु को परामर्श दिया ।

मगधपति का यह उत्तर पा, महंत माधवाचार्य बिगड़ उठे । उन्होंने अपने शिष्यों, अनुयाइयों और धर्मांध जनों से तोड़-फोड़ करने और लगान न देने को कहा । भद्रबाहु रक्तपात न होने देने के डर से महंत की बात मानने को तैयार हो गए ।

किंतु कुमार प्रियदत्त ने उनके इस निश्चय का विरोध किया । कहा—"पिता श्री, आज आप भयभीत होकर एक मठाधीश की बात मानने जा रहे हैं, जिसका चरित्र संदिग्ध है । कल अन्य मठाधीश भी अलग-अलग भूखंडों की मांग करने लगें, तो राज्य टुकड़ों में बंट जाएगा । हमें धर्म को मानना है, पर धर्म के पीछे इतना अंधा नहीं हो जाना चाहिए कि स्वयं को कमजोर कर लिया जाए । अगर हम मजबूत होंगे,तभी हमारा धर्म फैलेगा । हम कमजोर होंगे,तो धर्म हमसे छिन जाएगा ।"

"तो पुत्र, तुम राज्य में शांति की स्थापना करो ।"— राजा ने कहा ।

राजकुमार प्रियदत्त कुछ सैनिकों के साथ पूर्वी अंचल की ओर चल पड़ा । वहां पहुंचकर वह दंग रह गया । महंत माधवाचार्य अपने शिष्यों के साथ पड़ोसी राजा देवव्रत के संरक्षण में खड़े थे । देवव्रत के सैनिक मगध की ओर बढ़ना चाहते थे ।

देवव्रत ने दूत भेजकर कहलाया— "प्रियदत्त, अगर तुम अहिंसा को मानते हो, तो बिना रक्त-पात व युद्ध के, मुझे पचास गांव देकर लौट जाओ । उसमें से बारह गांव मैं महंत माधवाचार्य को धर्मप्रचार हेतु दे दूंगा ।"

प्रियदत्त ने कहला भेजा— "अहिंसा और धर्म के नाम पर तुम मगध पर अधिकार नहीं कर सकते ।"

प्रियदत्त की सेना आगे बढ़ी । उसका रणकौशल देख, देवव्रत की सेना पीछे हट गई । महंत माधवाचार्य पकड़े गए ।

राजा भद्रबाहु ने महंत से कहा— "मुझे दुःख है कि आप धर्म के नाम पर देश को कमजोर करने में लगे हुए थे । धर्म और अहिंसा के नाम पर देश को टुकड़ों में नहीं बांटा जा सकता ।" माधवाचार्य लज्जित होकर क्षमा मांगने लगे । राजा भद्रबाहु ने राजकुमार प्रियदत्त को उसके साहस पर बधाई दी । ●
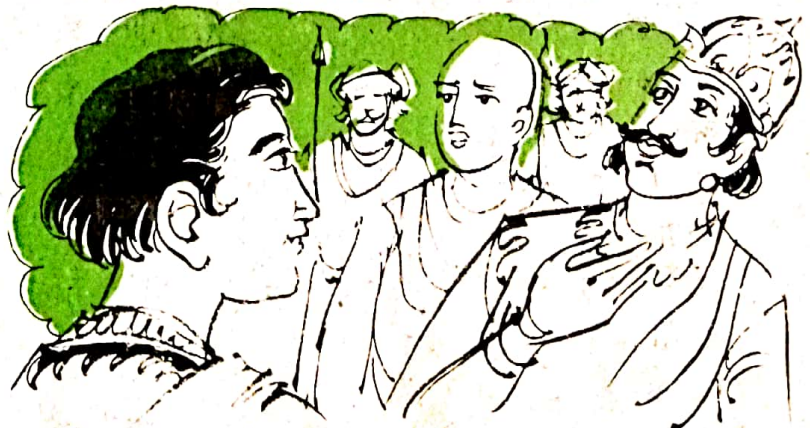
आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला **जीनियस;** ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला **बुद्धिमान;** ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि;** ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए ?**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

कहानी लिखो-५५

सामने बने चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए। उसे १० जून '८८ तक **संपादक 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१** के पते पर भेज दीजिए। चुनी गई कहानी पुरस्कृत कर, प्रकाशित की जाएगी। **परिणाम : अगस्त '८८ अंक**

चित्र पहेली-५५

'सपना जो हमेशा याद रहेगा' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए। उसे १० जून '८८ तक 'नंदन' कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र 'नंदन' में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा। परिणाम : सितंबर '८८ अंक

निमाई

बंगाल का नवद्वीप (नदिया) नगर विद्या का केन्द्र था। यहां अध्यापक जगन्नाथ मिश्र रहते थे। विद्वान होने के कारण उन्हें पुरन्दर की उपाधि मिली थी।
मिश्र जी, विद्यालय के ही नहीं, समूचे बंगाल के दिग्गज विद्वान हैं। इनका सम्मान विद्यालय के लिए गौरव की बात है।
मैं तो मां सरस्वती का सेवक हूं।
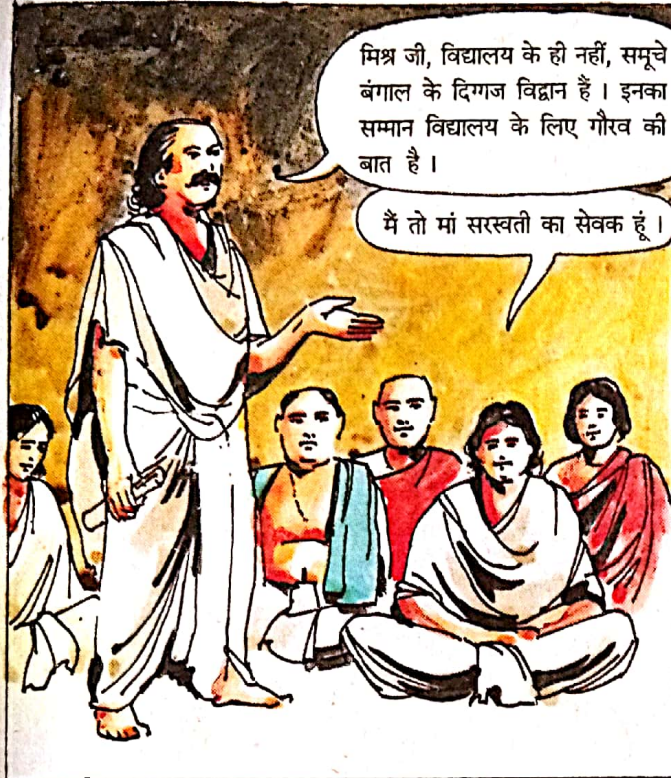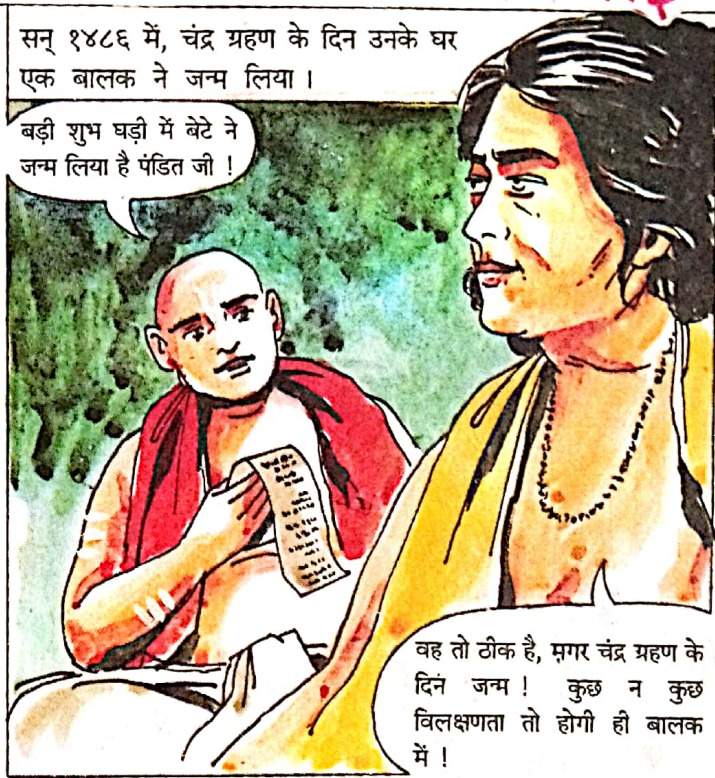
सन् १४८६ में, चंद्र ग्रहण के दिन उनके घर एक बालक ने जन्म लिया।
बड़ी शुभ घड़ी में बेटे ने जन्म लिया है पंडित जी!
वह तो ठीक है, मगर चंद्र ग्रहण के दिन जन्म! कुछ न कुछ विलक्षणता तो होगी ही बालक में!

मिश्र जी ने पत्नी शचि को जन्म कुंडली दिखाई।
बच्चे का नाम इस कुंडली के अनुसार विश्वम्भर होगा।
नहीं, इसका जन्म नीम के पेड़ के नीचे हुआ है। इसका नाम निमाई रखूंगी।
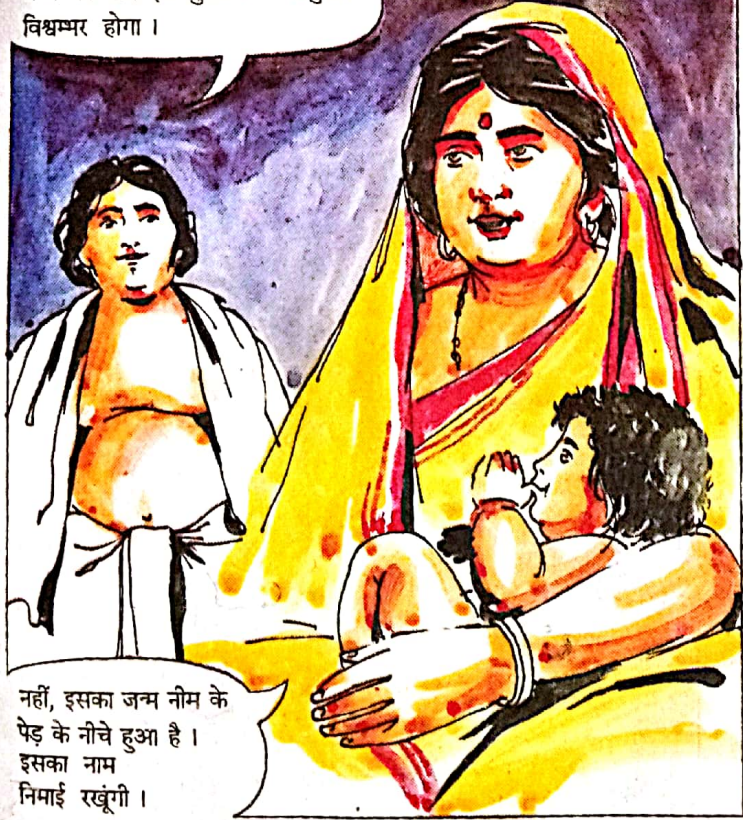
बालक बहुत ही सुंदर और स्वस्थ था। उसका मन पढ़ने लिखने में नहीं लगता था। दिन भर खेलता-कूदता।
निमाई क्या अनपढ़ ही रहेगा? एक पंडित का पुत्र अनपढ़। लोग क्या कहेंगे?
निमाई मेरी सबसे छोटी संतान है। अपने बड़े भाई विश्वरूप से दस वर्ष छोटा। अभी बच्चा है। सब समझ जाएगा।
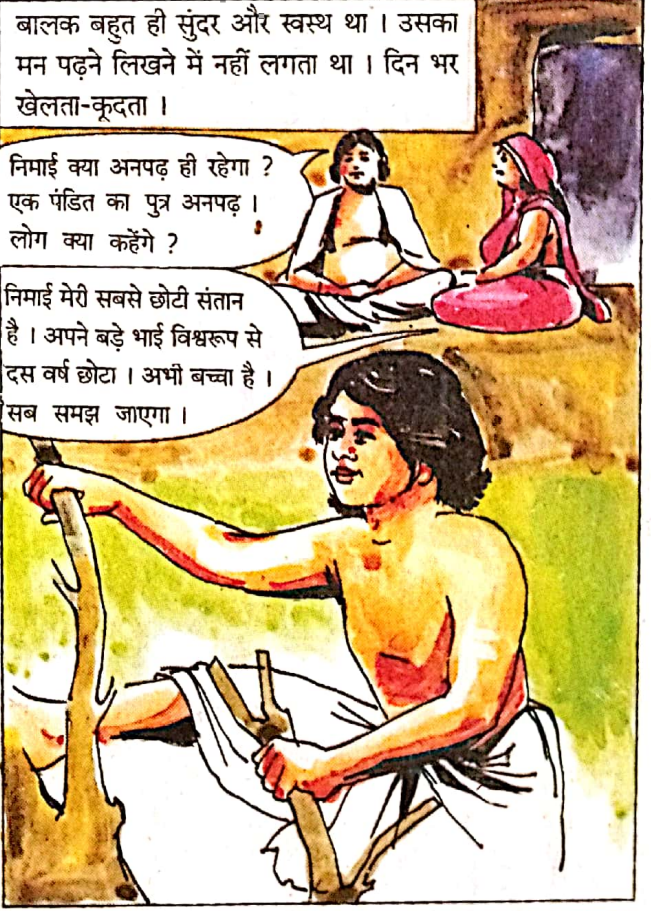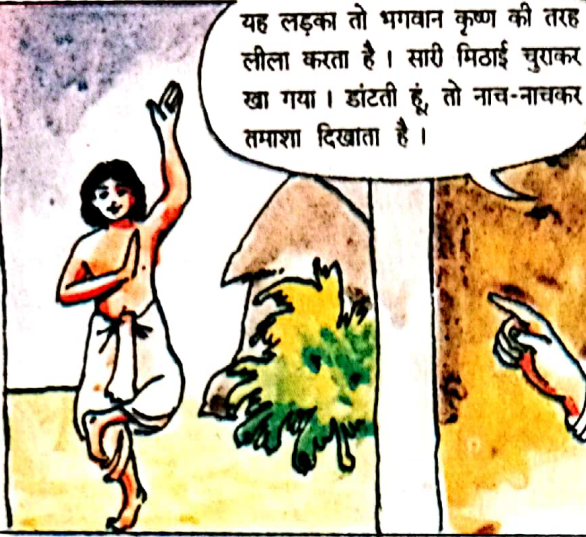
निमाई पांच वर्ष का होने पर भी पाठशाला नहीं गया। साथियों को ले, गंगा नदी के तट पर पहुंच जाता। स्नान करने वालों को तंग करता।
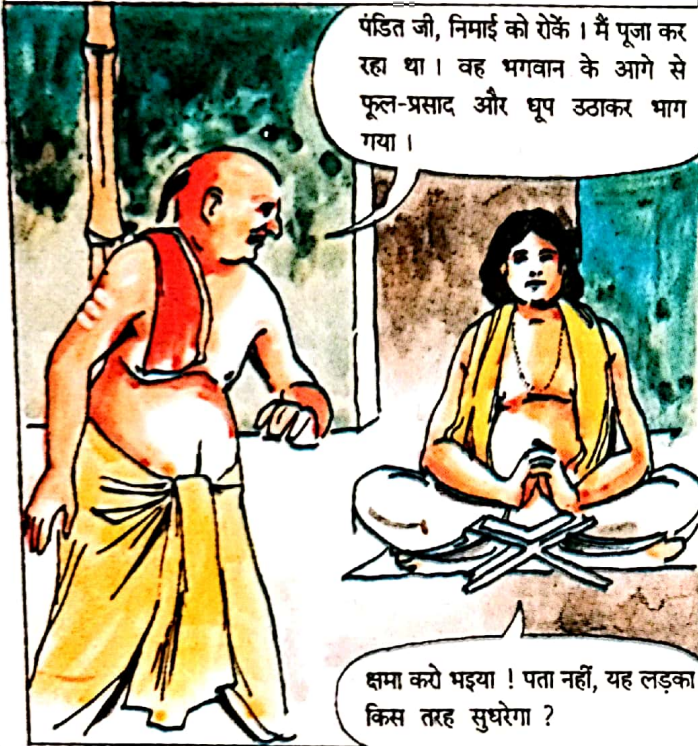
पंडित जी, निमाई को रोकें। मैं पूजा कर रहा था। वह भगवान के आगे से फूल-प्रसाद और धूप उठाकर भाग गया।

क्षमा करो भइया! पता नहीं, यह लड़का किस तरह सुधरेगा?

मिश्र जी अब निमाई को पाठशाला भेजना नहीं चाहते थे। डर था, कहीं यह भी वेदांत पढ़कर घर न छोड़ दे! किंतु ...
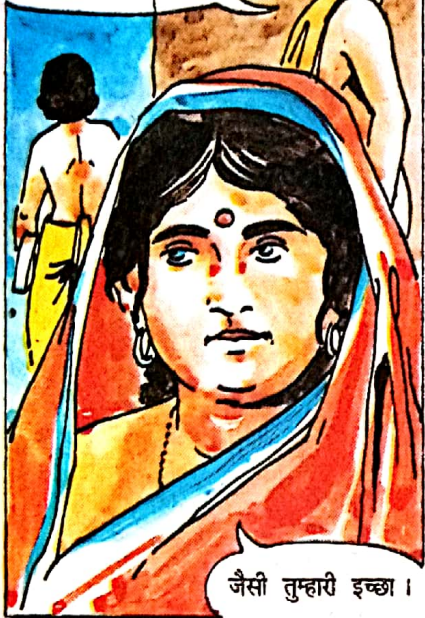
निमाई ग्यारह वर्ष का हुआ, तो उसका यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। पुरोहित जी उसके कान में मंत्र बोलने लगे, तो .....

उसी दिन से निमाई के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आया। वह गम्भीर हो गया। इसी बीच पिता सख्त बीमार पड़े। निमाई रोने लगा—
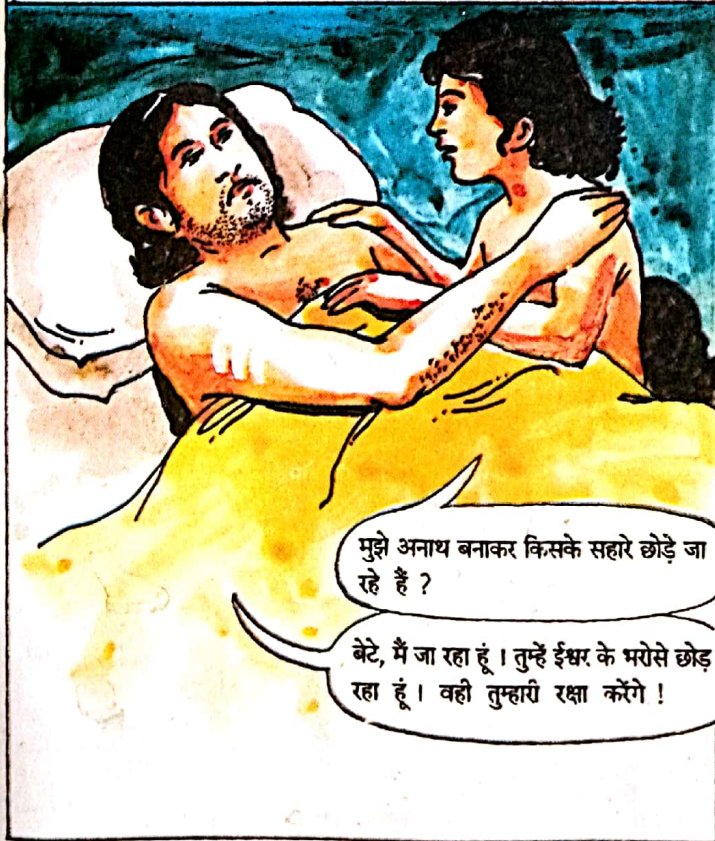
पिता की मृत्यु के बाद मां ने निमाई को पंडित गंगादास की पाठशाला में भरती करा दिया। वहां .....
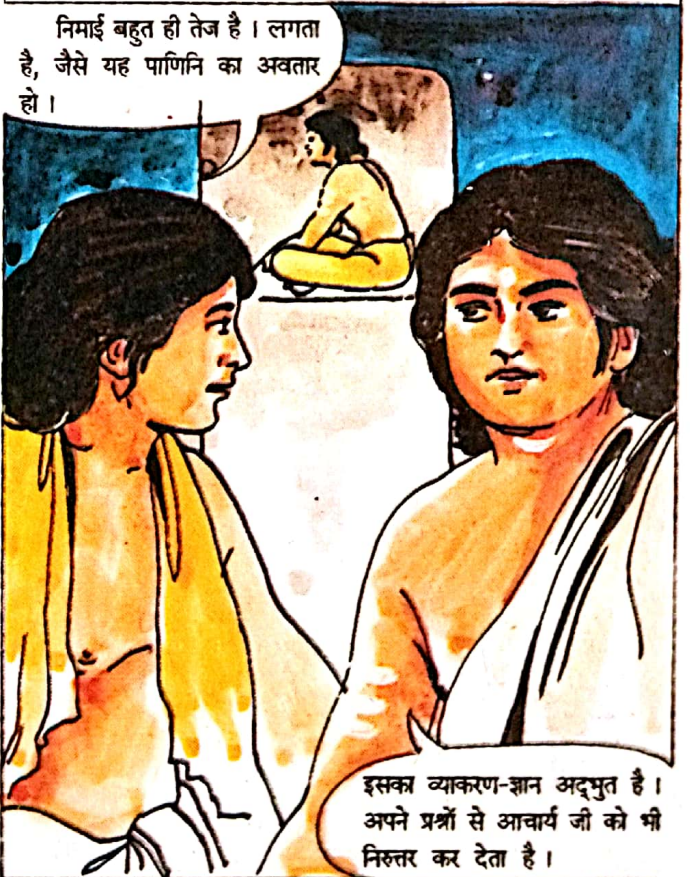
व्याकरण के बाद वह तर्क शास्त्र पढ़ने लगा। उसका सहपाठी था रघुनाथ, जो आगे चलकर तर्क शास्त्र का बड़ा विद्वान बना। एक दिन .....
किस चिंता में डूबे हो रघुनाथ ?
गुरु जी ने तर्क शास्त्र का एक प्रश्न दिया है। समझ में नहीं आ रहा।

निमाई ने उस प्रश्न का हल तुरंत निकाल दिया। आचार्य को पता चला तो....
निमाई में विलक्षण प्रतिभा है।
गुरु जी, लगता है, इसकी जिह्वा पर सरस्वती का वास है।
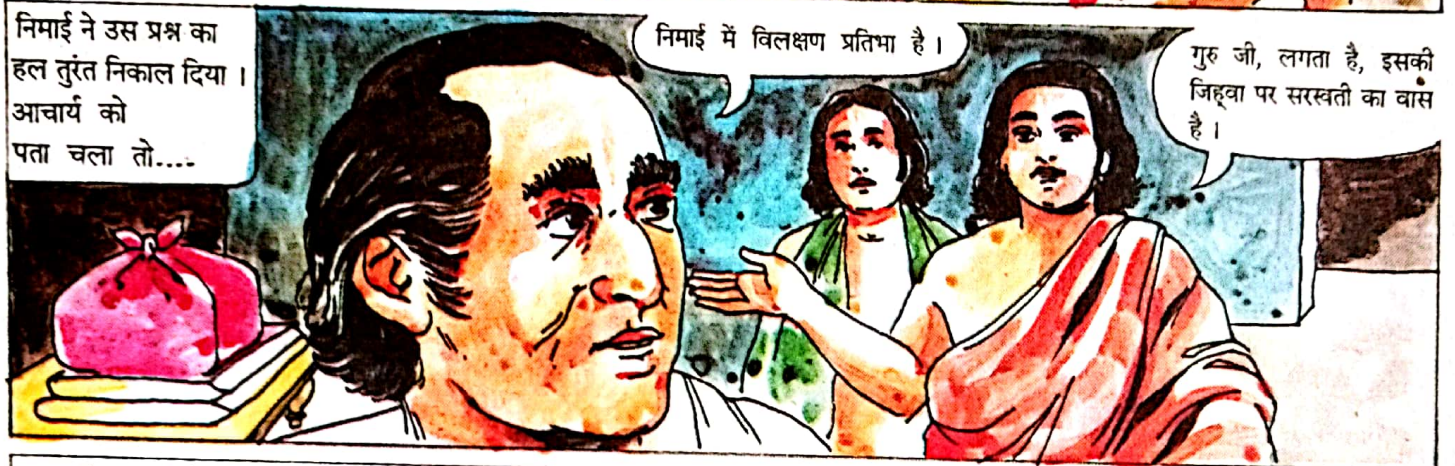
एक दिन निमाई ने न्याय शास्त्र पर लिखी अपनी टीका अपने मित्र रघुनाथ को दिखाई।
मित्र, जरा देखो तो, कैसी लिखी है ?

अरे, मैंने भी टीका लिखी है, मगर इसके सामने बेकार। अब मेरी टीका को कौन पूछेगा ?

निमाई रघुनाथ को ले, गंगा किनारे गया। फिर नाव में बैठ, नदी की धार में पहुंचा।
पंडित जी, मैंने जो लिखा, वह भी सब बेकार है। फाड़कर गंगा में फेंक रहा हूं।
उफ, यह क्या ? मुझे महत्व देने के लिए तुमने अपनी टीका नष्ट कर दी !

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

-बच्चों का अखबार-

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ३० रुपए
दो वर्ष : ६० रुपए

वर्ष २४, अंक ८, नई दिल्ली; जून '८८, आषाढ़, शक सं. १९१०

एक दीपक से सैकड़ों दीप जलें

—राजीव गांधी

नई दिल्ली। "महाकवि रवींद्रनाथ ठाकुर ने कहा था—'जला हुआ दीपक ही अन्य दीपकों को जला सकता है, बुझा हुआ नहीं।' इसलिए शिक्षकों को हमेशा अपना दिमाग खुला रखना चाहिए, जिससे कि वे छात्रों को नई से नई जानकारियां दे सकें।" यह बात कही प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने। वह साक्षरता फैलाने के लिए 'लोक अभियान' का आरम्भ कर रहे थे।

इस अवसर पर उन्होंने कहा—"यदि सभी देशवासी एकजुट होकर, निरक्षरता दूर करने के लिए प्रयास नहीं करेंगे, तो यह समस्या बेकाबू हो जाएगी। साक्षरता के क्षेत्र में हमें सबसे आगे निकलना होगा। यदि ऐसा न हुआ, तो अगली सदी तक अनपढ़ों की संख्या पचास करोड़ तक पहुंच जाएगी। इन अनपढ़ों में एक तिहाई, हम भारतीय होंगे। साक्षरता मिशन के द्वारा हम कोशिश करेंगे कि अपने लोगों को कोई न कोई हुनर सिखाएं। इससे उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने में मदद मिलेगी। पढ़ने के बाद आदमी बहुत कुछ सीखता है। देखा गया है कि पढ़ी-लिखी महिलाओं के शिशुओं की मृत्यु दर कम होती है। महिलाएं शिक्षित होंगी, तो वे अपने बच्चों को भी शिक्षा ग्रहण कराएंगी।"

प्रधानमंत्री ने इसी अभियान से सम्बंधित पांच पुस्तकों का विमोचन किया।

शिक्षा राज्य मंत्री श्री ललितेश्वर प्रसाद साही और श्री नरसिंह राव ने भी अपने विचार प्रकट किए।

हम न बंटें

नई दिल्ली। "बच्चों से राष्ट्र को बहुत आशाएं हैं। भविष्य में वे ही देश के निर्माता बनेंगे।"— यह बात कही उप राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा ने। वह गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेने वाले स्कूलों और बच्चों को पुरस्कार दे रहे थे। उन्होंने आगे कहा— "इस बात का ध्यान बच्चों को ही रखना होगा कि हमें बंटना नहीं है। शिक्षा, संस्कृति, विज्ञान सभी क्षेत्रों में हम आगे बढ़ सकते हैं, यदि हम एक रहें।"

और विवाह नहीं हुआ

बस्ती। एक धनी बूढ़ा व्यक्ति चौदह वर्ष की बच्ची से विवाह करने पहुंचा। उसकी उम्र देखकर गांव वालों को गुस्सा आ गया। उन्होंने पहले तो इस बूढ़े दूल्हे का मुंह काला किया, फिर गधे पर बैठाकर पूरे गांव में घुमाया। बाद में पुलिस के हवाले कर दिया।

सबसे गहरा गड्ढा

देवास। यहां पास ही में दुनिया का सबसे गहरा प्राकृतिक गड्ढा मिला है। इसकी चौड़ाई सौ फुट और गहराई एक हजार फुट है। लोग इसे पाताल लोक के नाम से पुकारते हैं। वैज्ञानिकों का विचार है कि शायद इस जगह पर अंतरिक्ष से आकर कोई बड़ी चीज टकराई होगी, जिससे इतना बड़ा गड्ढा बन गया।

ड्राइवर गायब

कटिहार। गाड़ी बिना रुके धड़धड़ाती हुई प्लेटफार्म से गुजर गई, तो रेलवे अधिकारियों को चिंता हुई। अगले स्टेशन पर उसे रोका गया। पता चला कि ड्राइवर गायब है। उसके स्थान पर बीस साल का एक लड़का गाड़ी चला रहा था। ड्राइवर ने उससे कहा था कि उसे अपनी लड़की की शादी की खरीददारी करनी है। इसलिए गाड़ी चलाने का भार वह संभाल ले।

क्रूर खेल खत्म

फगवाड़ा। पंजाब में एक खेल खेला जाता था। पहले खरगोश दौड़ाया जाता था, फिर उसके पीछे शिकारी कुत्ता छोड़ दिया जाता था। दर्शक उत्सुकता से देखते थे कि भारी भरकम कुत्ते से खरगोश अपना बचाव कैसे करेगा? आम तौर पर खरगोश की जान नहीं बचती थी। कई संस्थाओं ने इस क्रूर खेल को बंद कराने की मांग की थी। अब पंजाब के राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर राय ने कहा है कि यह क्रूर खेल बंद होना चाहिए।

अंधी मछलियां

रायपुर। गए थे कुटम्बसर गुफा के पानी में पाई जाने वाली अंधी मछलियों पर खोज करने, और मिल गई एक नई गुफा। अभी तक इस गुफा के बारे में किसी को पता न था। यह गुफा अंदर से बेहद साफ-सुथरी है। इसकी दीवारों को ठकठकाने से संगीत भी पैदा होता है। गुफा का पता कुछ शोध छात्रों ने लगाया।

पाठक अपने अखबार को खींचकर अलग निकाल लें।

बच्चों का अखबार

नंदन बाल समाचार

बुद्धिमान को इशारा और मूर्ख को तमाचा काफी है।— हिब्रू कहावत

बालक के लिए कानून

कश्मीर में बच्चों के अस्पताल की इमारत ढह गई। अनेक बच्चे मारे गए। इमारत हाल ही में बनी थी। देश में बच्चों की सुरक्षा, लालन-पालन, जिम्मेदारी तथा उनके खेल-खिलौनों के बारे में कानून नहीं हैं। जो गिने-चुने कानून हैं, उन पर भी अमल नहीं होता। दादाओं के चंगुल में फंसकर सैकड़ों बच्चों का जीवन बरबाद हो जाता है। कानून होने पर भी बच्चे जेलों में बंद हैं। जो जैसा चाहे, खिलौने बनाए और बेचे— शिशु के लिए भले ही वे घातक हों। बेसहारा बच्चों की तादाद भी बढ़ती जाती है। इन हालात में युवकों को आगे आना चाहिए। बच्चों को खुद ही अपने लिए राह बनानी है।

चुड़ैल की याद

सलेम। तीन सौ वर्ष पहले तेरह महिलाओं को फांसी पर लटका दिया गया था। ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें चुड़ैल समझ लिया था। अब बेमौत मारी गई इन स्त्रियों की याद में एक स्मारक बनाया जा रहा है।

बाल मेला

नई दिल्ली। भारतीय मेला प्राधिकरण अगले वर्ष अप्रैल में बाल मेले का आयोजन करेगा। प्रगति मैदान में होने वाला यह मेला राष्ट्रीय स्तर का होगा। इसमें खिलौने, किताबें तथा खेल-कूद की सामग्री रखी जाएगी। कार्टून फिल्में, छोटे बच्चों की सुरक्षा, सिले सिलाए वस्त्रों के बारे में भी बच्चों को जानकारी दी जाएगी।

मोटे हो तो मकान नहीं

न्यूयार्क। मोटापे के कारण बहुत-से रोग तो हो ही जाते हैं, आजकल मकान भी किराए पर नहीं मिलते। अमरीका के माइकेल एडलमैन का वजन ३६३ किलोग्राम तथा उसकी मां का वजन १८९.५ कि. ग्रा. है। इन दोनों के मोटापे को देखकर, मकान मालिक इन्हें मकान किराए पर नहीं देते।

बाघ बचे

जिम कार्बेट पार्क। प्रोजेक्ट टाइगर अपनी पंद्रहवीं वर्षगांठ मना रहा है। यह १९७३ में शुरू किया गया था। जिन सोलह स्थानों पर बाघ पाए जाते हैं, उनमें से नौ को इसके अंतर्गत लिया गया था। जब से बाघ बचाओ अभियान शुरू किया गया, तब से बाघों को नया जीवन मिला। जिम कार्बेट पार्क में इस समय नब्बे और बाकी स्थानों पर कुल मिलाकर चार हजार बाघ हैं। इन अभयारण्यों में सिर्फ बाघ ही नहीं, बहुत-से अन्य जानवर भी सुरक्षित हैं।

पुस्तकों की भूख

मास्को। सोवियत संघ में प्रकाशक 'पुस्तकों की भूख' से परेशान हैं। प्रति वर्ष सोवियत संघ में करोड़ों की संख्या में किताबें छपती हैं। लेकिन वे भी कम पड़ जाती हैं। अब विचार किया जा रहा है कि पुस्तकें और अधिक छापी जाएं।

नन्हे राजदूतों का दिवस

संयुक्त राष्ट्र। दुनिया भर के करीब १००० बच्चों ने यहां बाल दिवस मनाया। देश-देश से आए ये बच्चे 'नन्हे राजदूतों' के रूप में आए थे। यह कार्यक्रम 'वर्ल्ड चिल्ड्रंस डे फाउंडेशन' ने किया था।

बाल मित्र पुरस्कार

नई दिल्ली। इस वर्ष के बाल मित्र पुरस्कार दिल्ली के महापौर श्री महेंद्रसिंह साथी, लुडमिला इवानोवा एवं विद्याबेन शाह को दिए जाएंगे। नेहरू बाल समिति के सचिव एस. पी. गोयिल ने बताया— "बाल दिवस पर चित्रकला प्रतियोगिता में चार से अधिक स्वर्ण पदक पाने वाले आठ बच्चों को, कला-श्री पुरस्कार दिए जाएंगे। बाल सेविका पुरस्कार जामा मस्जिद क्षेत्र में कार्य कर रही, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री कुमारी मुनव्वर खानम को दिया जाएगा।

कूड़े का पहाड़

ब्रेस्ट (फ्रांस)। एक बूढ़ी महिला ने अठारह साल तक अपने घर का कूड़ा नहीं फेंका। जब यह महिला बीमार पड़ी, तो लोगों को कूड़े के बारे में पता चला। आठ कमरों के घर में, हर एक कमरे में दो मीटर ऊंचा कूड़ा ही कूड़ा था। इस महिला से कूड़े के बारे में पूछा गया, तो बोली, वह अठारह वर्षों तक अपने पिता की मृत्यु के शोक से नहीं उबर पाई, फिर कूड़े का ध्यान कहां से रखती?

मिस्र बचाओ

वाशिंगटन। यदि वक्त रहते न सोचा गया, तो मिस्र की भूमि अगली सदी तक समुद्र में समा जाएगी। ऐसा नील नदी के डेल्टा के आसपास नमकीन पानी के बढ़ने और भूमि के लगातार डूबते रहने के कारण हो सकता है। इस स्थान पर समुद्र प्रति वर्ष २५ से ३० मीटर तक आगे बढ़ रहा है।

दस बोरे नकल

उज्जैन। विक्रम विश्वविद्यालय में परीक्षाएं हुईं। एक विद्यालय में दस बोरी भरकर नकल की सामग्री पकड़ी गई। नकल करने के लिए विद्यार्थियों ने तरह-तरह की सामग्री जमा की, मगर अधिकारियों की नजर से वे बच न सके।

पेड़ों का स्वास्थ्य

बंगलौर। मनुष्य का स्वास्थ्य कैसा है ? इस बारे में तो वैज्ञानिक पता करते ही रहते हैं। अब पेड़ के स्वास्थ्य के बारे में भी, उन्हें बिना नुकसान पहुंचाए जाना जा सकेगा। वृक्षों को स्वस्थ रखने के लिए पानी और क्लोरोफिल का बड़ा महत्व है। पहले पत्तों को तोड़कर इनकी मात्रा का पता लगाया जाता था। अब 'एम्रोफोटोमीटर' के जरिए, इन दोनों की मात्रा का पता चलाया जा सकता है।

आहार गृह

नई दिल्ली। यहां पर पक्षियों के लिए आहार गृह बनाया गया है। यह गृह पहाड़ी धीरज पर स्थित है। यहां पक्षियों के रहने की व्यवस्था भी की गई है। इस आहार गृह का उद्घाटन केंद्रीय श्रम मंत्री श्री जगदीश टाइटलर ने किया। उन्होंने कहा कि जीव दया का कार्य सबसे महत्वपूर्ण कार्य है।

फिल्मी नगरी

नोएडा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री वीरबहादुर सिंह ने नोएडा में फिल्म केंद्र का शिलान्यास किया। इस केंद्र के लिए पचीस एकड़ भूमि का विकास किया जा रहा है। इसमें से बाईस एकड़ भूमि पर स्टूडियो बनाए जाएंगे। केंद्र का प्रथम चरण १९९० तक पूरा हो जाएगा।

लम्बी उम्र

पटना। देश में नवजात शिशुओं की मृत्यु दर तीस प्रतिशत कम हो गई है। गांवों में बच्चों की मृत्यु में कमी आई है। इसका कारण है युनिसेफ द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम। अब आम माता-पिता बच्चों को पौष्टिक आहार देने के बारे में भी जागरूक हो गए हैं। केरल में बच्चों की मृत्यु दर सबसे कम, चार प्रतिशत और उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक सोलह प्रतिशत है।

आयोडीन और नमक

नई दिल्ली। देश में पांच करोड़ लोग घेंघा रोग से पीड़ित हैं। इनमें लगभग डेढ़ करोड़ बच्चे हैं। भोजन में आयोडीन की कमी के कारण यह रोग हो जाता है। यदि आयोडीन मिला नमक भोजन में प्रयोग किया जाए, तो यह रोग नहीं होता। केंद्र सरकार ने राज्यों को आयोडीन रहित नमक के बेचने पर प्रतिबंध लगाने को कहा है।

सिगरेट पीने पर जुर्माना

वाशिंगटन। अमरीका में अब घरेलू उड़ानों के दौरान, यात्री धूम्रपान नहीं कर सकेंगे। यदि कोई धूम्रपान करते पाया गया, तो उस पर एक हजार डालर का जुर्माना किया जाएगा। हां, यदि धूम्रपान करने वाले व्यक्ति उड़ानों के दौरान इसकी जरूरत महसूस करें, तो उन्हें टाफी और चाकलेट खाने को दी जाएंगी।

गुफा का जीर्णोद्धार

ओंकारेश्वर। दो हजार वर्ष पुरानी 'बट गुफा' का जीर्णोद्धार 'कांची काम कोटि पीठ सेवा ट्रस्ट' ने कराया है। इसी गुफा में आदि शंकराचार्य ने अपने गुरु गोविंद पदाचार्य से दीक्षा ली थी। ट्रस्ट यहां वेद अध्ययन केंद्र भी बनाएगा।

नए मेहमान

नई दिल्ली। यहां के चिड़िया घर में चार नए मेहमान आए हैं। ये हैं गीबंस जाति के बंदर। इन बंदरों के हाथ-पैर सफेद और बाकी शरीर काला है। इनके पूंछ नहीं होती। ये ओस की बूंदें चाटना पसंद करते हैं।

सिर जुड़ी बच्चियां

जोहांसबर्ग। दो जुड़वां बच्चियों के सिर आपस में जुड़े हुए थे। चालीस डाक्टरों के दल ने इन बच्चियों का आपरेशन किया। अब ये बच्चियां ठीक हैं।

नन्हे समाचार

- १९८७ में साढ़े ग्यारह लाख विदेशी सैलानी भारत घूमने आए थे।
- आस्ट्रेलिया के एडिलेड नगर में कबूतरों की संख्या बहुत बढ़ गई है। उन्हें डराने के लिए चील और बाज की आकृतियां बनाई गईं, पिंजरे लगाए गए, पर कबूतर जरा भी नहीं डरे।
- भारत अब तक दक्षिणी ध्रुव पर सात अभियान दल भेज चुका है।
- अमरीका में एक ऐसी चाकलेट बनाई गई है, जो कड़ी गर्मी में भी नहीं पिघलती।
- पश्चिमी जर्मनी में एक प्रायोगिक रेल गाड़ी ने ४०६ किलोमीटर प्रति घंटे की गति का रिकार्ड बनाया है।
- श्रीलंका में दुनिया का सबसे बड़ा नेत्रदान केंद्र है। इसने अब तक दूसरे देशों को २२,००० आंखें भेजी हैं।
- वैज्ञानिकों का कहना है कि हाथी के दांतों से उसकी उम्र का अनुमान लगाया जा सकता है।
- त्रिपुरा में घोड़ों की संख्या काफी कम हो गई है। कभी यहां बहुत घोड़े पाए जाते थे।
- राजस्थान में लड़कियों को हायर सेकेंड्री तक शिक्षा निःशुल्क दी जाएगी।
- इस वर्ष विश्व रेड क्रास आंदोलन अपनी स्थापना की १२५वीं वर्षगांठ मना रहा है।
- गोआ के एक गांव में दो आदमी अपने कुएं का पानी कम्पनियों को बेच रहे थे। लोगों ने शिकायत की तो अदालत ने पानी की बिक्री पर रोक लगा दी। फैसले में कहा गया कि कुओं का पानी पूरे गांव का है।
- गंगा को गंदा न होने देने के लिए, उ. प्र., बिहार और प. बंगाल के २७ नगरों में योजनाएं चल रही हैं।

सचित्र समाचार
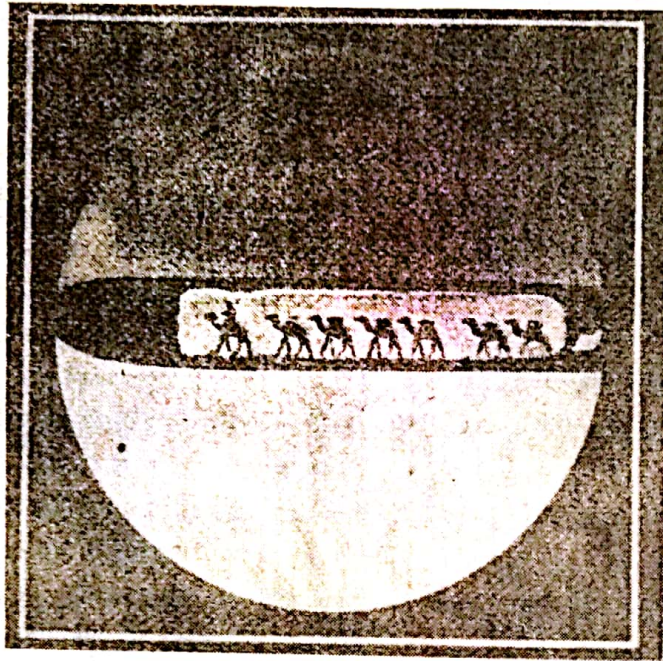
हमारे नए
थल सेनाध्यक्ष
श्री वी. एन. शर्मा

सोवियत संघ की नन्ही कलाकृतियों की प्रदर्शनी आजाद भवन में लगी। सूई के सूराख में ऊंटों का काफिला।

इस वर्ष दादा साहब फालके पुरस्कार प्रसिद्ध अभिनेता राजकपूर को मिला।

सर्वश्रेष्ठ बाल अभिनेता का पुरस्कार 'स्वामी' (मालगुड़ी डेज) में अभिनय करने के लिए मंजुनाथ को दिया गया।

राजधानी में बाल मजदूरों ने अपनी समस्याओं की ओर ध्यान दिलाने के लिए जुलूस निकाला। इसमें चार सौ बच्चे शामिल हुए।

कांच के गिलास, गिलासों पर कुर्सी के पिछले पाए, उन पर बैठा आदमी और सामने समुद्र। है न चमत्कार! यह हैं फ्रांस के हेंड्रिस। इन महाशय को ऐसे करतब दिखाने का शौक है।

१८ वर्ष ही में निमाई की विद्वत्ता का यश चारों ओर फैल गया। उन्होंने नवद्वीप में अपनी पाठशाला खोल ली। एक दिन गंगा तट पर उन्हें मिले दिग्विजयी विद्वान केशव कश्मीरी।....

देखो, मैंने मां गंगा की स्तुति में तुरंत सौ श्लोक रच दिए।

कृपया इनमें से दो श्लोकों की व्याख्या कर दें....

केशव कश्मीरी सही व्याख्या न कर पाए। निमाई ने व्याख्या ही नहीं की, श्लोकों में व्याकरण की गलतियां भी बता दीं।

मुझे अपने ज्ञान का घमंड था। आपने उसे दूर कर दिया। आप मेरे गुरु हैं।
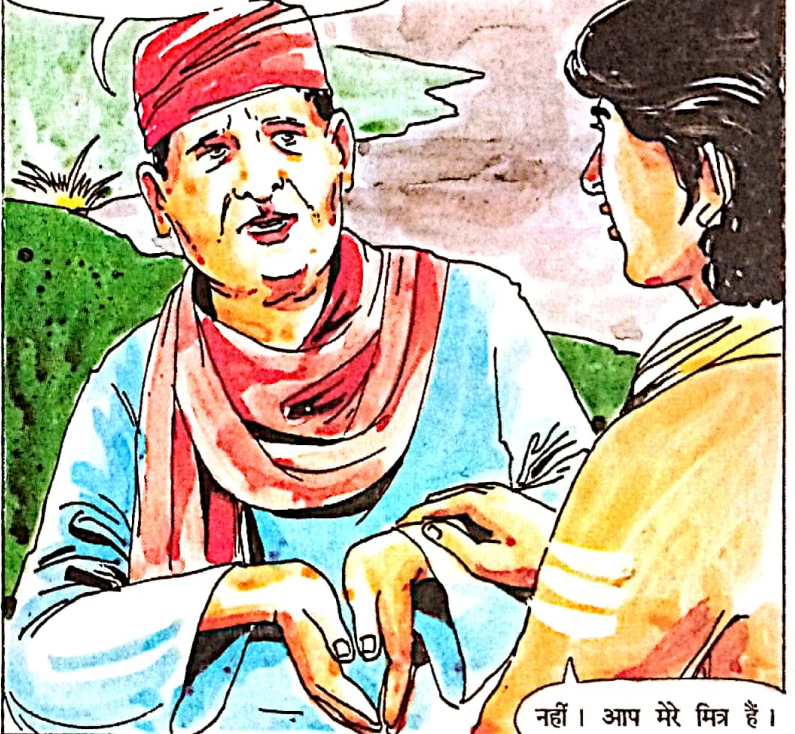
नहीं। आप मेरे मित्र हैं।

मां ने एक गुणवती कन्या लक्ष्मी से निमाई का विवाह कर दिया। कुछ समय बाद निमाई पूर्वी बंगाल के भ्रमण पर गए। लौटे तो ....

मां, घर में लक्ष्मी दिखाई नहीं दे रही। क्या मायके गई है?
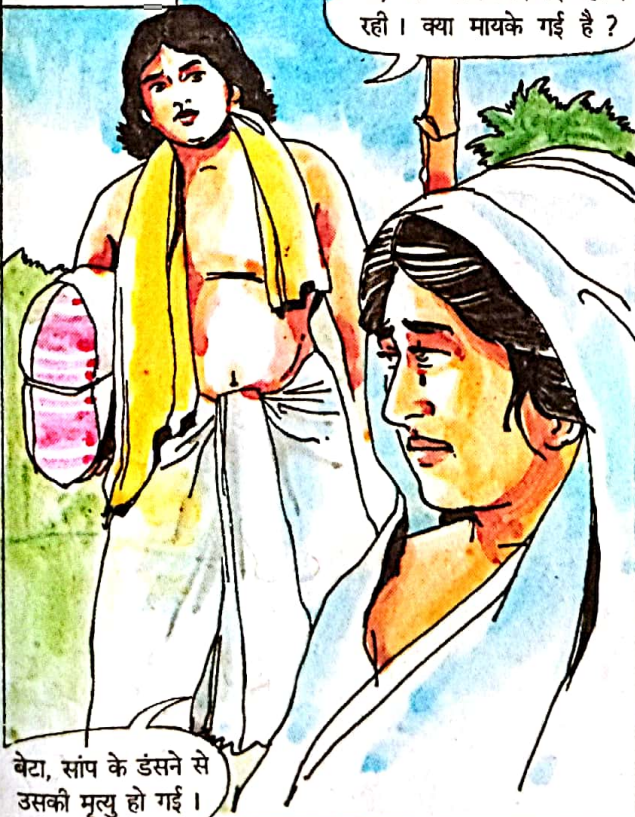
बेटा, सांप के डंसने से उसकी मृत्यु हो गई।

पत्नी की मृत्यु से निमाई उदास रहने लगे। मां ने सनातन मिश्र की बेटी विष्णुप्रिया से उनकी दूसरी शादी कर दी। एक दिन ....
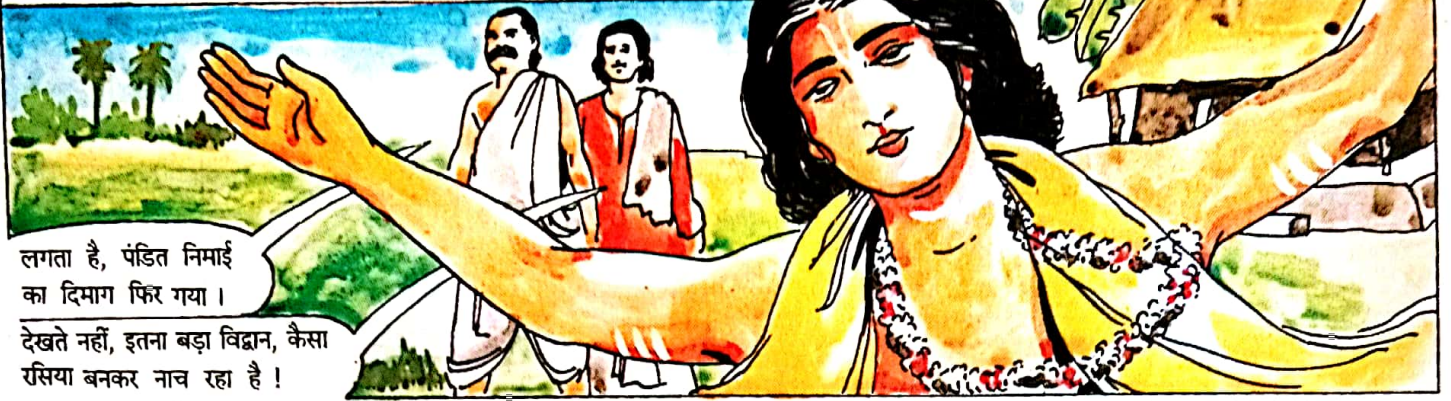
घर लौटे, मगर वही दशा। भगवान कृष्ण के कीर्तन के आगे सब कुछ छूट गया। पाठशाला में पढ़ाने गए। पाठ पढ़ाने की जगह कीर्तन करने लगे—

निमाई के कीर्तन का प्रभाव बढ़ने लगा। कीर्तन मंडली में शहर के जाने-माने बहुत-से लोग शामिल हो गए। कुछ पंडित उनके विरुद्ध हो गए। उन्होंने शहर के काजी चांद से शिकायत की .....

खबर निमाई के पास पहुंची। उन्होंने चौराहे पर साथियों को इकट्ठा किया। कीर्तन करने लगे। काजी क्रोध में भरकर वहां आया। लेकिन फिर उन्हीं के रंग में रंग गया।

भगवान किसी धर्म के नहीं। वह सिर्फ अपने भक्त के हैं।

सब भूल काजी ने किया भी वही। आज भी चांद काजी के वंशज कीर्तन में सहयोग देते हैं। नदिया नगर में बनी चांद काजी की समाधि पवित्र मानी जाती है।

इस यात्रा में चैतन्य की भक्ति का प्रभाव सभी पर पड़ा। दूर-दूर से लोग दर्शनों को आने लगे।
जगह-जगह कीर्तन होने लगे

वाह ... चैतन्य की भक्ति बेजोड़ है।
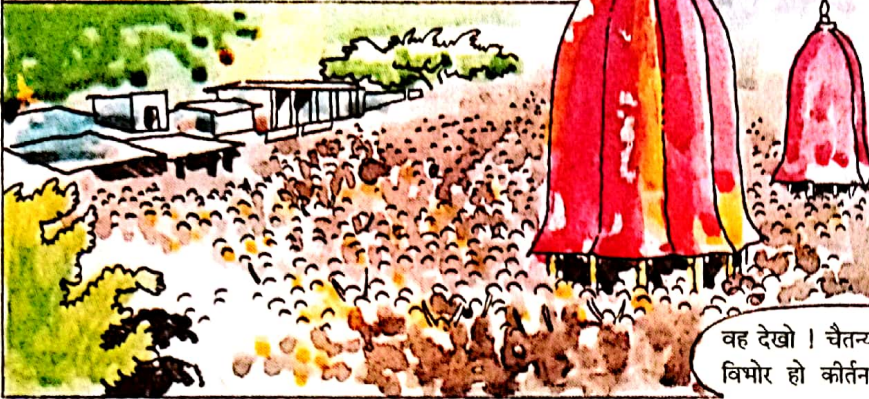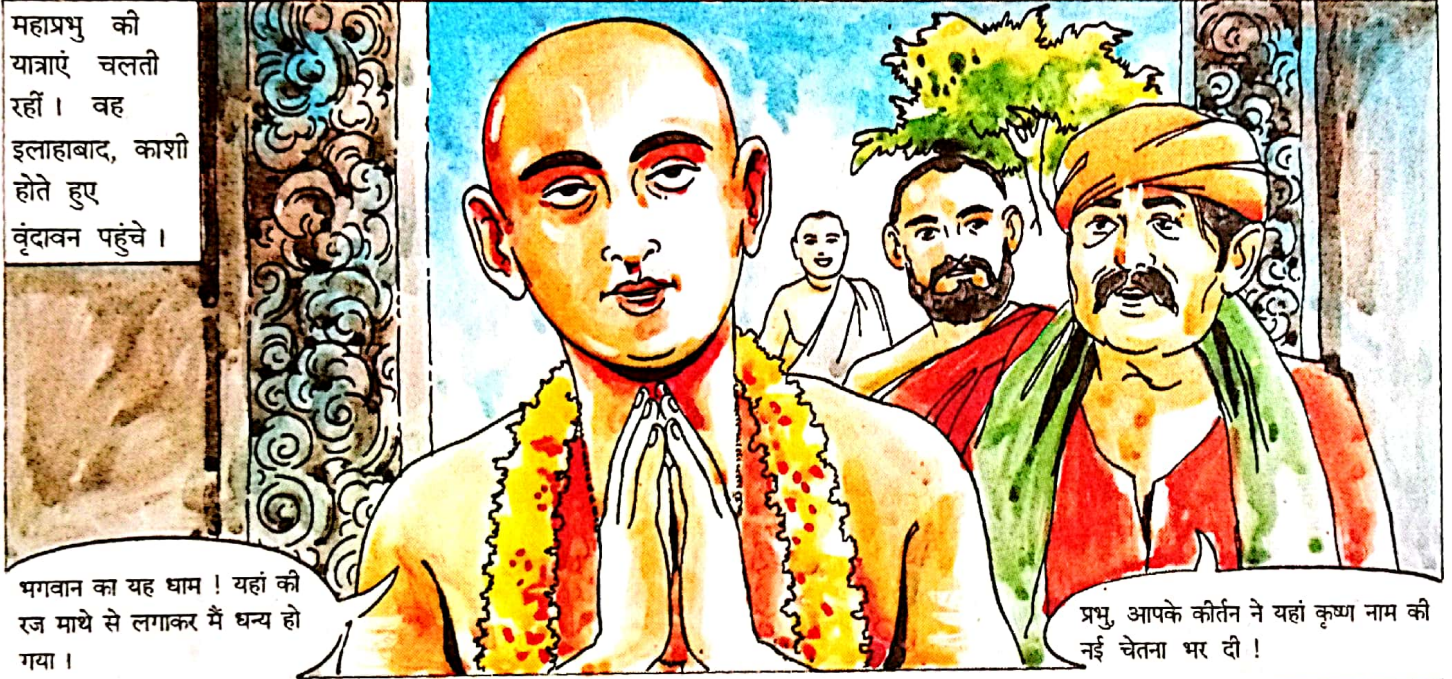
सन् १५३४ में वह अमर ज्योति भगवान में लीन हो गई। स्वर्गधाम जाते समय इस महान संत की आयु अड़तालीस वर्ष थी।

आज भी चैतन्य की कृष्ण भक्ति के स्वर देश में गूंज रहे हैं।

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे

उनकी पांच सौवीं जयंती सारे देश में मनाई गई।

अनोखा दामाद

— अमरजीत सिंह

एक कहानी दादी सुनाती थी। कहानी है एक मां की। अनेक वर्ष बीत गए इस बात को। उस मां का एक ही बेटा था। वह भी बहुत आलसी। मां उसको हांस कहकर बुलाती। वह चौदह वर्ष का हो गया था, परंतु काम से जी चुराता। पढ़ा-लिखा न था। घर में पड़ा रहता। एक दिन उसकी मां ने कहा— "हांस, जाओ, मेरे लिए नदी से पानी भरकर लाओ।"

"मेरी तबीयत ठीक नहीं है।"— लड़के ने बहाना बनाया।

मां उसके इस आलसीपन से बहुत तंग आ चुकी थी। उसने तुरंत एक छड़ी उठाई। उसे धमकाते हुए कहा— "यदि आज तुमने मेरा कहना न माना, तो मैं तुम्हें कड़ी सजा दूंगी।"

मां के गुस्से से हांस घबरा गया। धीरे से उसने मटका उठाया और नदी से पानी भरने चल पड़ा। उसे काम की आदत तो थी नहीं। वह रास्ते में एक जगह बैठ गया। थोड़ा आराम करने के बाद, वह आगे बढ़ा, फिर बैठ गया। इस तरह रुकता-रुकता वह नदी तट पर पहुंच गया। नदी में मटका छोड़, काफी देर बाद मटका नदी से बाहर निकाला। मटके में एक सुनहरी मछली देख, वह चकित रह गया। 'मां खुश होगी। सोचेगी, बेटा उसके लिए ऐसी सुंदर मछली पकड़ कर लाया है।'— हांस ने मन ही मन सोचा।

वह पानी लेकर चलने लगा। अचानक मछली ने मनुष्य की आवाज में कहा— "मुझे वापस जल में छोड़ दो।"

"यह कैसे हो सकता है?"— हांस ने उत्तर दिया— "तुम अपने आप मटके में आई हो। अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा।"

"मुझे वापस जल में जाने दो। बदले में तुम तीन बार जो कुछ चाहोगे, तुम्हें मिल जाएगा।"— मछली

बोली।

यह सुन, हांस ने उसकी बात मान ली। उसने सुनहरी मछली को फिर से पानी में छोड़ दिया। मछली तैरती हुई किनारे से दूर निकल गई।

अब हांस ने अपनी पहली इच्छा पूरी करनी चाही। उसने एक घोड़ा गाड़ी मांगी, जो उसे घर तक ले जाए। जैसे ही उसने यह इच्छा की, फौरन एक घोड़ा गाड़ी उसके सामने आ खड़ी हुई। उस पर रंग-बिरंगे कपड़े पहने कोचवान बैठा था। हांस जल्दी से गाड़ी में बैठ गया। साथ में उसने पानी भरा मटका भी रख लिया। तभी कोचवान का कोड़ा हवा में लहराया। घोड़े की टापें पथरीली जमीन पर गूंज उठीं। हांस यह सब देखकर दंग रह गया। वह अपनी दूसरी दोनों इच्छाओं के बारे में बिलकुल भूल गया।

घोड़ा गाड़ी भागती जा रही थी। मार्ग में गांव के जमींदार की हवेली पड़ती थी। जब हांस हवेली के सामने से गुजरा, जमींदार की लड़की हांस को बुरी तरह घबराया देखकर हंस पड़ी। उसे लड़की पर गुस्सा आ गया। उसने अनजाने में अपनी दूसरी इच्छा प्रकट कर दी— 'तुम इस समय मेरी हंसी उड़ा रही हो, पर तुम्हें इसका फल भुगतना पड़ेगा।'

घटना को एक वर्ष बीत गया। यह बात अब हांस भी भूल गया था। एक दिन हवेली के बड़े आंगन में जमींदार की लड़की को एक बालक खेलता

हुआ मिला। उसका मुख चंद्रमा की तरह दमक रहा था। शाम होने तक वह वहीं खेलता रहा। यहां तक कि जब रात घिर गई, तब भी वह अपने घर नहीं लौटा। वह हवेली को अपना घर बताने लगा। कई दिनों तक उसे कोई वापस लेने भी न आया। वह जमींदार की लड़की से बहुत अधिक हिल-मिल गया। वह भी उसे भाई की तरह प्यार करने लगी थी।

कुछ समय बाद जमींदार ने अपनी बेटी का विवाह करना चाहा। उसने शर्त रखी, जिसे भी घर का यह नन्हा बालक अपने हाथ का सेब दे देगा, वही उसकी लड़की का पति होगा।

लोगों को लड़की के प्रति इतना मोह नहीं था। वे तो जमींदार की अपार धन-सम्पत्ति चाहते थे। वे जानते थे, जमींदार की मृत्यु के बाद सारा कुछ उसकी इकलौती बेटी के पति को ही मिलेगा। वे जमींदार के घर की ओर चल पड़े। कुछ लोग ऐसे भी थे, जिनको जमींदार की यह शर्त अजीब लगी। वे उत्सुकतावश यह तमाशा देखने के लिए चल पड़े। ऐसे लोगों में हांस भी एक था। वह बिलकुल नहीं बदला था। अब भी उतना ही आलसी था, जितना पहले।

हवेली में वर तलाशने की सब तैयारियां हो चुकी थीं। नन्हे बालक के हाथ में एक सेब था। वह सबको देखकर हैरान खड़ा था। परंतु सेब किसी को देने के लिए तैयार नहीं था। हांस को वहां बैठा देखकर जमींदार को गुस्सा आ गया। परंतु जैसे ही छोटे लड़के ने उसको देखा, वह भागा हुआ उसके पास पहुंचा। सेब उसे पकड़ा दिया। लड़के की इस हरकत से जमींदार चीखने लगा। वह आलसी और गंवार हांस की शक्ल नहीं देखना चाहता था, पर क्या करता? शर्त के अनुसार उसे अपनी बेटी का विवाह हांस से करना पड़ा।

जमींदार दोबारा हांस की शक्ल नहीं देखना चाहता था। इसीलिए हांस अपनी पत्नी और उस लड़के को ले, दूर के एक टापू पर चला गया। कुछ दिन पहले उसकी मां का स्वर्गवास हो चुका था।

टापू पर उन्हें खाने के लिए बहुत कठिनाई से कुछ मिलता। रहने के लिए एक टूटा हुआ छोटा-सा घर था। हांस ने यहां आकर भी अपना आलस न छोड़ा। वह अधिकतर समय घर में ही पड़ा रहता।

एक दिन उसकी पत्नी को एक बात सूझी। उसने हांस से उसके जीवन के बारे में सब कुछ जानना चाहा। वह सोचती थी, शायद इस तरह उसे कोई उपाय समझ में आ जाए।

हांस ने पत्नी को अपने जीवन की सारी कहानी कह सुनाई। साथ में यह भी बताया कि कैसे वह काम से जी चुराता रहा है। उसकी इस आदत से उसकी मां कितनी दुखी थी। अंत में उसने पत्नी को सुनहरी मछली की कहानी सुनाई। बताया कि मछली ने उसकी तीन इच्छाओं को पूरा करने की बात कही थी।

सुनकर उसकी पत्नी की आंखें चमकने लगीं। वह जान गई कि हांस ने दो बार जो चाहा, उसे मिला। अब केवल एक ही इच्छा बाकी रह गई है। उसने पति से कहा— "चिंता न करो। सब ठीक हो जाएगा। तुम अपनी अंतिम इच्छा में, अपने आलस को त्यागने की कामना करो।"

हांस ने ऐसा ही किया। उसी क्षण वह एक मेहनती नौजवान में बदल गया। अब वह कठिन से कठिन काम करने के लिए तैयार था। उसने दिन-रात मेहनत की।

कुछ ही वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद उसने टापू पर एक सुंदर घर बना लिया। एक घोड़ा गाड़ी का प्रबंध कर लिया। उसके घर के चारों ओर सुंदर बाग-बगीचे थे। अब हांस का परिवार पूरी तरह सुखी था। एक दिन वह अपनी पत्नी और लड़के को लेकर जमींदार के घर पहुंचा। उनका वैभव देखकर जमींदार दंग रह गया। जब उसे हांस की मेहनत और लगन के बारे में पता चला, तो वह बहुत खुश हुआ। उसने हांस का स्वागत किया। उससे सपरिवार हवेली में ही रहने की प्रार्थना की। परंतु हांस ने कहा— "नहीं, धन्यवाद! मेरे पास अपनी मेहनत से बनाया सुंदर घर है। फिर आपके घर में क्यों रहूं?" ससुराल में एक दिन ठहरकर वह वापस चला गया। ●

एक जोड़ी जूते

— सुरेश के. अंजुम

एक समय जापान देश का निप्पन शहर मासामू नामक राजा की राजधानी था। मासामू उस क्षेत्र का अत्याचारी राजा था। प्रजा उससे बहुत दुखी थी।

एक दिन अपने सभासदों के साथ मासामू घूमने निकला। एक पवित्र स्थान देख, वह अपने जूते बाहर छोड़, अंदर चला गया। द्वारपाल का नाम होईशिरो था। उसने सोचा—'ऐसे बर्फीले मौसम में राजा के जूते भीग जाएंगे। राजा जब उन्हें पहनेगा, तो उसे कष्ट होगा।' होईशिरो ने राजा के जूते कपड़ों में लपेट, सुरक्षित स्थान पर रख दिए। उस समय हल्की-हल्की वर्षा भी हो रही थी।

राजा लौटकर आया, तो होईशिरो ने जूते राजा के सामने कर दिए। राजा सूखे जूते देख, आश्चर्य चकित हो उठा। उसने सोचा—'सबके जूते भीग गए, किंतु मेरे जूते सूखे ही हैं। जरूर होईशिरो इन पर बैठा होगा। इसे सजा देनी चाहिए।' यह सोच, राजा मासामू का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। उसने उन्हीं जूतों से होईशिरो को पीटना शुरू कर दिया। उसे इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया।

दूसरे दिन जब होईशिरो को होश आया, तो उसका पूरा बदन दर्द से टूट रहा था। राजा सहित सब लोग जा चुके थे। राजा जूतों को भी वहीं छोड़ गया था। होईशिरो ने अपने अपमान का बदला लेने का विचार किया। उसने सोचा—'साधु-संत बनकर राजा मासामू से बदला लेना चाहिए। राजा लोग साधु-संतों का बहुत आदर करते हैं। बदला लेने का यही मार्ग उत्तम रहेगा।'

होईशिरो एक बौद्धमठ में पहुंचा। वह भिक्षु बन गया। उसने बौद्धभिक्षु बनकर भगवान बुद्ध की आराधना की।'

एक दिन आराधना के समय, भगवान बुद्ध प्रकट हुए। उन्होंने होईशिरो को आशीर्वाद दिया। होईशिरो बहुत प्रसन्न हुआ।

उन्हीं दिनों जापान का सम्राट मिकाडो बीमार हो गया। उसका सभी छोटे-बड़े वैद्यों ने इलाज किया, मगर वह ठीक नहीं हुआ। एक गुप्तचर भिक्षु होईशिरो को पकड़कर सम्राट के सामने ले गया।

प्रधानमंत्री फूको ने कहा—"भिक्षु होईशिरो जी, हमारे सम्राट की जान खतरे में है। इन्हें आप ठीक कर दें। आपकी प्रार्थना और आशीर्वाद से ही अब महाराजा के प्राण बच सकते हैं।"

भिक्षु होईशिरो ने प्रार्थना की। संयोग से सम्राट मिकाडो की हालत में सुधार होने लगा।

राजा मासामू के कानों में भिक्षु होईशिरो की कीर्ति का समाचार पहुंचा, तो वह होईशिरो के दर्शन के लिए लालायित हो उठा।

राजा मासामू भिक्षु होईशिरो से भेंट करने के लिए चल पड़ा। राजा होईशिरो के आश्रम में पहुंचा। भिक्षु होईशिरो एक आसन पर ध्यानमग्न प्रार्थना कर रहे थे। उसने देखा, भिक्षु होईशिरो के आसन के समीप एक जोड़ी जूते हैं। मासामू को आश्चर्य हुआ—'भिक्षु तो जूते नहीं धारण करते। फिर ये जूते यहां क्यों रखे हैं?"

राजा मासामू ने भिक्षु होईशिरो को प्रणाम करके पूछा—"महाराज, जूते यहां कैसे? ये जूते किसके हैं?"

भिक्षु होईशिरो ने मुसकराकर कहा—"राजन्, ये जूते सिद्धि का मार्ग दिखाते हैं। इन्हीं के कारण मैं सारी सिद्धियां प्राप्त कर सका।"

बस, राजा ने तुरंत उन जूतों को श्रद्धा से स्पर्श किया। होईशिरो ने राजा मासामू को उन जूतों का सारा वृत्तांत कह सुनाया। फिर कहा—"ये जूते आपने ही मुझे भेंट किए थे।"

अब राजा मासामू, भिक्षु होईशिरो के चरणों में गिरकर क्षमा-याचना करने लगा।

भिक्षु होईशिरो ने कहा—"राजन्, भूल किससे नहीं होती? भूल को क्षमा करना ही मनुष्य का श्रेष्ठ धर्म है। जाओ, और विवेक से राज्य चलाओ।"

राजा मासामू प्रसन्न हो गया। ●

सोने का कटोरा

—टी. पक्षिराजन

तमिलनाडु में एक स्थान है तोणीपुरम। वहां एक ब्राह्मण दम्पति रहता था। पति-पत्नी दोनों शिव के उपासक। छल-कपट और लोभ-लालच से दूर। ईश्वर से यही मांगते—'हमें कुछ नहीं चाहिए प्रभु ! बस, आपके चरणों में हमारा प्रेम बना रहे।'

एक दिन उनके घर पर एक बालक ने जन्म लिया। अनोखा था वह बालक। उसके पैदा होते ही घर खुशियों से भरने लगा। माता-पिता ने प्यार से बालक का नाम रखा सम्बंधर।

सम्बंधर के पिता रोज शिव मंदिर में पूजा करने जाते थे। मंदिर के पास ही एक तालाब था। तालाब में स्नान करने के बाद वह मंदिर में जाकर शिव की स्तुति करते। सम्बंधर भी यह देखता। कभी-कभी जिद करता—"पिता जी, मुझे भी अपने साथ ले चलिए न !"

सम्बंधर के पिता हंसकर कहते—"अभी तुम छोटे हो बेटे ! जरा और बड़े हो जाओ तो . . . ."

एक दिन सम्बंधर के पिता सुबह मंदिर जाने के लिए तैयार हो रहे थे। जैसे ही वह घर से निकले, सम्बंधर भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। अभी केवल तीन वर्ष का था वह। पिता ने बहुत समझाया। लेकिन सम्बंधर नहीं माना। हारकर सम्बंधर के पिता उसे भी कंधे पर बैठा, साथ ले गए।

पहले वह मंदिर के पास वाले तालाब में स्नान करने गए। उन्होंने सम्बंधर को किनारे से दूर बैठा दिया। खुद तालाब के पानी में नहाने लगे। सम्बंधर दूर से अपने पिता को नहाते हुए देख रहा था। नहाते समय उन्होंने तालाब के पानी में डुबकी ली। सम्बंधर डर गया। सोचने लगा—'कहीं मेरे पिता डूब तो नहीं गए !' डर के मारे बालक की चीख निकल गई—"अम्मा ! अप्पा !!"

पिता ने तो बालक के चिल्लाने की आवाज नहीं सुनी। संयोग से उसी समय शिव-पार्वती वहां से जा रहे थे। बालक के रोने की आवाज सुन, दोनों ठिठक गए। शिव ने पार्वती से कहा— "सुना नहीं, इस बालक ने 'अम्मा-अप्पा' कहकर हमें बुलाया है। आज से यह हमारा बेटा है।"

शिवजी की बात सुन, पार्वती मुसकराती हुई बालक के पास आईं। रोते हुए बालक को अपनी गोद में लिया। उसके आंसू पोंछे। बालक चुप होकर उन्हें निहारने लगा।

"क्या भूखे हो ? दूध पिओगे ?"— पार्वती ने पूछा। अगले ही पल उनके हाथों में एक सोने का कटोरा था, जिसमें मीठा-मीठा दूध भरा हुआ था। पार्वती जी ने सम्बंधर से कहा—"लो, पिओ !" बालक शांत होकर चुपचाप दूध पीने लगा।

कुछ देर में शिव-पार्वती दोनों चले गए।

सम्बंधर के पिता नहाकर तालाब से बाहर आए। बालक के पास गए, तो उसके हाथ में सोने का कटोरा देखकर चौंक गए। कटोरे में कुछ दूध बचा हुआ था। बालक के मुख पर भी दूध के छींटे थे। वह ताज्जुब में पड़ गए। कुछ भी समझ में नहीं आया। डांटकर सम्बंधर से पूछा— "किसने दिया यह सोने का कटोरा ?"

सम्बंधर बोला कुछ नहीं। अंगुली उठाकर सामने की ओर इशारा किया। सम्बंधर के पिता कुछ
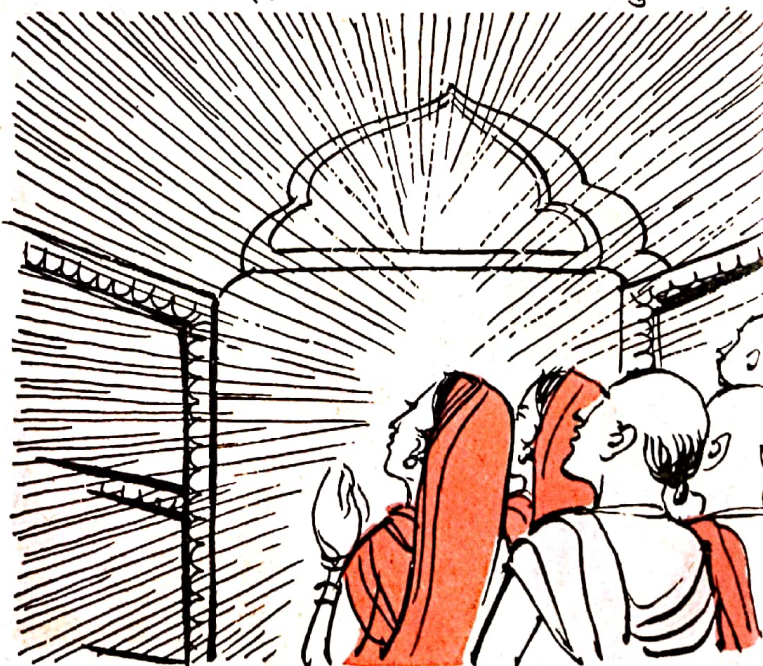
न समझ सके।

उन्होंने परेशान होकर बालक की ओर देखा। बोले—"पता नहीं, तुम क्या कहना चाहते हो।"

उनका यह कहना था, तभी सम्बंधर के होंठों से कविता की पंक्तियां फूट पड़ीं। अद्‌भुत थी वह कविता। सम्बंधर को जिस तरह शिव-पार्वती ने दर्शन दिए, अपने हाथों से सोने के कटोरे में दूध पिलाया, सबका वर्णन था उसमें।

सम्बंधर के पिता को जैसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। तीन साल का बालक और इतनी सुंदर कविता ! कोई अलौकिक व्यक्ति ही कर सकता है ऐसा तो। वह एकटक बेटे को देख रहे थे। जब सम्बंधर की कविता समाप्त हुई, तो वह उसे कंधे पर बैठा, खुशी के मारे नाचने लगे। सारे जीवन में शिव की पूजा-उपासना करके भी जो वह नहीं पा सके थे, वह इस छोटे-से बच्चे ने पा लिया।

सम्बंधर के पिता उसे कंधे पर बैठा, मंदिर की ओर चल पड़े। वहां इस अलौकिक घटना की चर्चा तेजी से फैल गई। सभी अद्‌भुत बालक को शिव का प्रिय जान, हाथ जोड़ने लगे।

अब सम्बंधर के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से लोग आने लगे। सभी उसे अपने-अपने शहर या गांव में बुलाते थे। उसकी मधुर बातें और कविता सुनते थे। एक दिन सम्बंधर को किसी दूर के एक मंदिर में बुलाया गया। उसके पिता उसे कंधे पर बैठा, ले जा रहे थे। लेकिन सम्बंधर ने कहा—"पिता जी, मैं भी पैदल चलूंगा। जैसे आप और सभी भक्त चल रहे हैं।"
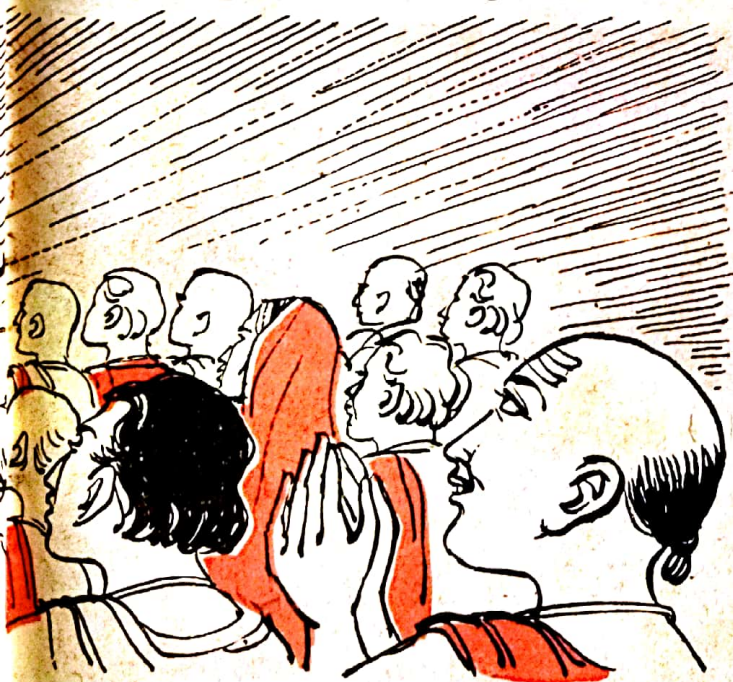
सम्बंधर नंगे पैर जमीन पर चलने लगा। अचानक मंदिर के पुजारी को लगा, शिव की मूर्ति हिल रही है। डर के मारे पुजारी ने हाथ जोड़ लिए। तभी उसे आवाज सुनाई दी—"मेरा प्रिय भक्त मेरे दर्शन के लिए नंगे पैर आ रहा है। उसके पैर में अभी-अभी कांटा चुभा है। जाओ, उसे मोतियों के पर्दे वाली पालकी में बैठाकर लाओ।"

"लेकिन प्रभु, कहां से आएगी ऐसी पालकी ?" —पुजारी ने पूछा।

—"मंदिर के भीतरी प्रकोष्ठ को खोलकर देखो। वहीं है पालकी।"

मंदिर के पुजारी ने दौड़कर भीतर की कोठरी का ताला खोला। सचमुच, वहां मोतियों के पर्दे वाली पालकी थी। सैकड़ों लोग इकट्ठे हो गए। सम्बंधर को पालकी में बैठाकर मंदिर में लाया गया। पीछे-पीछे लोग चंवर डुला रहे थे। ढोल, झांझ, मंजीरों से कीर्तन हो रहा था।

अब तो सम्बंधर की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। एक दिन सम्बंधर ने अपने घर के बाहर शोर सुना—"नावकरसर आ रहे हैं। नावकरसर आ रहे हैं!" नावकरसर बहुत बड़े संत थे। सभी उनका सम्मान करते थे। नावकरसर को अपनी ओर आते देख, सम्बंधर तेजी से उनकी ओर दौड़ा।

"आप महान संत हैं। मेरे पिता के समान हैं। आपके दर्शन करके मैं धन्य हो गया।" —कहकर सम्बंधर उनके चरण छूने के लिए झुका।

लेकिन आश्चर्य ! नावकरसर पहले ही प्रणाम करने के लिए झुक चुके थे। प्रसन्नता भरे स्वर में बोले—"आप जैसी सिद्धि किसी को मिलती है। मैं आपके दर्शन करके धन्य हो गया।" अब वे दोनों मित्र बन चुके थे।

सम्बंधर और नावकरसर दोनों साथ-साथ तीर्थ यात्रा के लिए निकल पड़े । घूमते-घूमते वे वेदारण्यम् नामक स्थान पर आए । वहां वे प्राचीन मंदिर के दर्शन करने गए । उन्होंने देखा, मंदिर के विशाल पट बंद थे । उन पर बड़ा-सा ताला लटक रहा था ।

उन्होंने लोगों से पूछा—"मंदिर का दरवाजा क्यों नहीं खुल रहा ?"

तब एक बूढ़े व्यक्ति ने बताया—"मंदिर का यह पट नहीं खुलेगा । आप चाहें, तो साथ वाली खिड़की से भीतर जा सकते हैं ।"

"लेकिन ऐसा क्यों है ?" —पूछने पर उसी बूढ़े ने बताया—"कहा जाता है, एक बार देवता इस मंदिर में पूजा करने आए थे । पूजा करने के बाद वे मंदिर के पट बंद करके चले गए । तभी से यह मुख्य दरवाजा नहीं खुला ।"

सम्बंधर ने नावकरसर से कहा—"मेरी इच्छा है, हम मुख्य द्वार से ही भीतर जाकर पूजा करें । आप शिव की स्तुति कीजिए, दरवाजा खुल जाएगा ।"

नावकरसर ने मुसकराकर कहा—"ठीक है, लेकिन दरवाजा फिर से बंद करने के लिए आपको भक्ति गीत सुनाना होगा ।"

"स्वीकार है !" —सम्बंधर के मुख पर हंसी झलक उठी ।

और सचमुच नावकरसर ने जब शिव की स्तुति की, मंदिर के द्वार खुल गए । आस-पास खड़े लोगों ने यह चमत्कार देखा, तो जय-जयकार कर उठे । इसके बाद सभी ने मंदिर में जाकर पूजा की ।

पूजा करके वे बाहर आ गए । सम्बंधर ने अपना भक्ति गीत सुनाया । खड़-खड़-खड़ की आवाज हुई । सबके देखते-देखते मंदिर के कपाट फिर बंद हो गए ।

सम्बंधर और नावकरसर आगे बढ़ गए । कुछ समय बाद उन्होंने अलग-अलग दिशाओं में यात्रा करने का निश्चय किया ।

चलते-चलते सम्बंधर मैलापुर पहुंचा । सारा शहर उसके दर्शन के लिए उमड़ पड़ा । उनमें शिवनेसर भी था । वह उस शहर का सबसे धनी व्यापारी था । शिव भक्त था । उसने सम्बंधर का खूब स्वागत-सत्कार किया । अपनी सारी सम्पत्ति देनी चाही । पर सम्बंधर ने कहा —"ठीक है । यह सम्पत्ति अब मेरी हो गई । अब इसे मेरी ओर से लोगों की भलाई में लगाओ ।"

कुछ दिन भ्रमण के बाद सम्बंधर घर लौट आया । तब तक माता-पिता उसके विवाह के लिए चिंतित हो उठे । सम्बंधर अब सोलह वर्ष का हो गया था । मां ने कहा—"अब मैं बूढ़ी हो गई हूं । घर में बहू आए, मेरी यह इच्छा पूरी नहीं करोगे सम्बंधर ?" सम्बंधर अब 'न' नहीं कर सका । नल्लूर की एक सुंदर लड़की के साथ उसका विवाह तय हो गया ।

लेकिन सम्बंधर तो कुछ और ही तय कर चुका था । उसके चेहरे पर अनोखा तेज दिखाई दे रहा था ।

जैसे ही विवाह की रस्में पूरी हुईं, सभी लोग मंदिर में दर्शन के लिए गए । आगे-आगे सम्बंधर, उसकी पत्नी और माता-पिता थे । मंदिर में जाकर सम्बंधर ने प्रार्थना की—"प्रभु, अब मुझे अपने चरणों में स्थान दीजिए !"

तभी एक विचित्र चमत्कार हुआ । आकाश से प्रकाश की किरणें धरती पर आईं । फिर वे फैलने लगीं । देखते-देखते सारा मंदिर उस प्रकाश पुंज में समा गया । फिर उसमें एक द्वार दिखाई दिया ।

मंदिर में पूजा करने आए लोग ताज्जुब में थे । सम्बंधर के चेहरे पर मुसकान थी ।

इतने में आकाशवाणी हुई—"सम्बंधर, तुम्हारे लिए मुक्ति का द्वार खुल गया है । तुम जिन्हें भी चाहो, साथ-साथ शिवलोक में ला सकते हो ।"

सम्बंधर ने पहले माता-पिता और सभी भक्तों को उस प्रकाश पुंज में बने द्वार के भीतर जाने के लिए कहा। फिर वह स्वयं अपनी पत्नी के साथ उस प्रकाश पुंज की ओर बढ़ा । जैसे ही उसने जगमगाते प्रवेश द्वार के भीतर पैर रखा, वह प्रकाश सिमट गया ।

रह गया था केवल गांव का मंदिर और उसका सोने की तरह झिलमिलाता शिखर—जो आज भी एक अनोखी कहानी सुना रहा था । •

कुल्फी

गरमी का उपहार है कुल्फी,
शीतल मंद बयार है कुल्फी।
पिस्ता, काजू, किशमिश, चीनी,
दूध-दही का सार है कुल्फी।
लू, अंधड़ की नागफनी में
मां जैसा ही प्यार है कुल्फी।
दिल्ली, मथुरा, पटना, काशी
मौसम का त्योहार है कुल्फी।
गांव-गांव सर चढ़ी घूमती
ठेलों भरा दुलार है कुल्फी।
गरमी में घर आए मित्रों
का मीठा सत्कार है कुल्फी।

—सुशील कुडेसिया

भौंका कुत्ता

रात जोर से कुत्ता भौंका
सोया-सोया तब मैं चौंका।
सोचा, शायद घुसा चोर है
इसीलिए यह हुआ शोर है।

जल्दी से उठ बाहर आया
देख नजारा मैं झल्लाया।
बिल्ली एक खड़ी थी छत पर
भौंका कुत्ता जिसे देखकर।

मैंने उसको दूर भगाया
कुत्ते को फिर यों समझाया—
बेमतलब यों कभी न भौंको
गलत काम हो, तो ही रोको।

कुत्ता मेरा समझदार है
स्वामिभक्त है, होशियार है।
सुनकर उसने शीश हिलाया
अपनी गलती पर पछताया।

—विश्वनाथ गुप्त

होडोरी

धूम-धड़ाका बजते ढोल
ओलम्पिक का नगर सियोल।
ओलम्पिक खेलों की शान
होडोरी का बना निशान,
आंखों में है ललक बड़ी
चेहरे पर है चमक बड़ी।
गाते ओलम्पिक लोरी
सबके प्यारे होडोरी।
गूंजें देश-देश के बोल
ओलम्पिक का नगर सियोल।

छोटा टोप लगाए हैं
गर्दन तनिक झुकाए हैं,
मंद-मंद मुसकाए हैं
अकड़े हैं, इतराए हैं।
मस्ती, मौज मनाते-से
सब पर प्यार लुटाते-से,
प्यारी हंसी बड़ी अनमोल,
ओलम्पिक का नगर सियोल।

नाक नुकीली; तिरछा कान
झलक रहा मूंछों से मान,
दायां हाथ बढ़ाए हैं
लम्बी पूंछ उठाए हैं।
माला बड़ी निराली है
पांचों गोलों वाली है,
होडोरी हैं गोल-मटोल।

—डा. वीरेन्द्र शर्मा

धूम मचाऊं

मन में आता कभी कि
मैं रसगुल्ले खाऊं।
मन में आता कभी कि
रबड़ी चट कर जाऊं।
मन में आता कभी, खेल
में धूम मचाऊं।
मन में आता कभी कि
बस मैं गाने गाऊं।
और कभी मन में आता—
मैं शोर मचाऊं।
हंसी-खुशी की, इस धरती
पर फसल उगाऊं।
समझ न आता अम्मा
मुझे रोकती क्यों हैं,
खेल खेलना चाहूं
तभी टोकती क्यों हैं?

—बाबूराम शर्मा विभाकर

हम

चींटी डरती नहीं कि हाथी
कुचल पांव से देगा,
जुगनू डरता नहीं कि कोई
पकड़ हाथ में लेगा।

चिड़िया डरती नहीं कि पेड़ों
से टकरा जाएगी,
मछली डरती नहीं कि मोटी
मछली खा जाएगी।

तब फिर हम क्यों डरें किसी से
कुत्ता या बंदर हो,
चूहा, बिल्ली, बकरा-बकरी
चाहे शेर बबर हो।

—निरंकारदेव सेवक
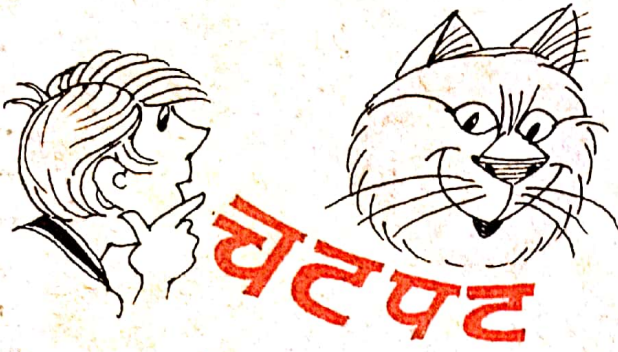
- पप्पू— मां ने पूजा के लिए फूल मंगाए थे, मगर यहां तो लिखा है— फूल तोड़ना मना है ?
  हप्पू— तो क्या हुआ ! पूरा पौधा ही उखाड़ कर लिए चलते हैं।
- मालिक (नौकर से)— मैंने तो तुम्हें चार बजे बुलाया था। आठ बजे क्यों आए हो ?
  नौकर— यह बताने कि चार बजने में आठ घंटे बाकी हैं।
- मां— मुझे नींद आने लगी, मगर तुमने पाठ याद करके अभी तक नहीं सुनाया !
- बेटा— आप सो जाइए मां ! जैसे ही याद होगा, जगाकर सुना दूंगा।
- सोहन— कमाल है। वह तो बड़ा कंजूस है। तुमने चंदे में उससे सौ रुपए कैसे ऐंठ लिए ?
  मोहन— मैंने उससे वायदा जो किया है कि उसके लिए भी चंदा इकट्ठा कर दूंगा।
- लाइब्रेरियन— सुरेश, तुम लायब्रेरी में बैठकर इतनी जोर-जोर से क्या पढ़ रहे हो ?
  सुरेश— अपनी पुस्तक। मास्टर जी ने कहा है किसी शांत जगह में बैठकर जोर-जोर से पाठ याद करो।
- एक— कुत्ता मनुष्य का सबसे वफादार मित्र होता है। तुम्हारा क्या ख्याल है ?
  दूसरा— बिल्कुल उल्टा। हिम्मत हो, तो राजेश के घर में घुसकर देख लो। उसने अल्सेशियन पाला हुआ है।
- चित्रकार— ठहरो बेटे ! उस तसवीर को अभी मत छुओ। रंग गीले हैं।
  बेटा— कोई बात नहीं पापा ! हाथ धो लूंगा।
- अध्यापिका—तुम दस साल के हो और अपनी उम्र पांच साल बता रहे हो !
  बच्चा—जी, मगर गिनती करना तो मैंने पांच साल बाद ही सीखा है।
- अध्यापक—तुम्हें शेर पर दो पृष्ठ का निबंध लिखना था और तुमने शेर का चित्र बना दिया।
  छात्र—जब चित्र में सब कुछ दिखाया जा सकता है, तो लिखकर क्यों समय बर्बाद किया जाए ?
- एक व्यक्ति—देखो, ये जितनी भी किताबें दिखाई दे रही हैं, वे सब मेरी अपनी हैं।
  बच्ची—तो अंकल, क्या आप भी लाइब्रेरी से लाने के बाद किताबें नहीं लौटाते ?
- आदमी—आप इतनी देर से टेलीफोन को कान से लगाए हैं, मगर कुछ बोलते क्यों नहीं ?
  दूसरा आदमी—मेरा बच्चा चुप हो, तभी तो कुछ बोलूं। अभी तो वह ही बोल रहा है।
- यात्री (ड्राइवर से)—क्या तुम तेज नहीं चला सकते ?
  ड्राइवर—चला तो सकता हूं, मगर फिर बस कौन रोकेगा ?
- सुमन—अरे, तुम तो जिंदा हो ! कल खबर छपी थी कि तुम्हारा हार्ट फेल हो गया। क्या वह खबर गलत थी ?
  चमन—यही पूछने तो मैं तुम्हारे पास आया हूं कि सही क्या है ?
- एक मित्र— चश्मा हमेशा नाक पर ही क्यों लगाया जाता है ?
  दूसरा मित्र— उसे होठों पर लगाकर घूमिए। पता चल जाएगा।
- मां— आज तुम्हारे स्कूल का पहला दिन था। काफी कुछ सीखा होगा तुमने ?
  मुन्ना— कहां मां ! कल फिर जाना पड़ेगा।
- महेश— मिठाई खाकर हाथ क्यों नहीं पोंछते तुम ? रुमाल नहीं है क्या ?
  सुरेश— है तो, मगर मां ने सख्ती से कहा है कि रुमाल गंदा न करना !

तेनालीराम २४३

सुनहरी बाग

राजा कृष्णदेव राय का दरबार लगा था। तभी राजदरबार में दो व्यक्ति आए। उनके हाथों में सोने का बहुमूल्य हीरे जड़ा हंस था। वे दोनों एक साथ बोले—"महाराज, हमारा फैसला कीजिए।"

"पूरी बात बताओ। झगड़ा किस बात का है?" —राजा कृष्णदेव राय ने पूछा।

"महाराज, हम झगड़ नहीं रहे। हम तो मित्र हैं। हुआ यह कि तंगी की हालत में मेरे मित्र ने मेरी मदद की। अपनी जमीन में से थोड़ी-सी जमीन दी। उस पर हल चलाते हुए, यह सोने का हंस मिला। मैं लौटाने गया, यह लेने से इंकार कर रहा है।" —उनमें से एक ने कहा।

"महाराज, जब मैंने जमीन इसे दे दी, तो उसमें से निकलने वाला सोने का हंस इसी का तो हुआ। मैं इसे कैसे ले लूं?" —दूसरा मित्र बोला।

राजा कृष्णदेव राय चकराए। ऐसा अनोखा मुकदमा तो पहली बार आया था। उन्होंने दरबारियों से कहा— "आप बताइए, क्या फैसला उचित होगा?"

मंत्री बोला— "सोने का हंस दो हिस्सों में बांट दिया जाए। दोनों आधा-आधा ले लें।

लेकिन दोनों मित्रों ने ऐसा करने से इंकार कर दिया।

—"इसकी नीलामी कर दी जाए। बदले में जो भी धन मिले, उसे ये आधा-आधा बांट लें।"

"नहीं महाराज, हमें यह धन भी नहीं चाहिए।" —दोनों मित्र एक साथ बोले।

"महाराज, मेरा सुझाव है, इसका मूल्य दान-पुण्य के कामों में लगा देना चाहिए।" —राजपुरोहित ने अपनी गोटी बैठाते हुए कहा। कोषाधिकारी ने सोने का हंस राजकोष में जमा करने का सुझाव दिया।

लेकिन राजा कृष्णदेव राय को एक भी सुझाव पसंद नहीं आया।

तभी तेनालीराम बोला—"महाराज, क्षमा करें। मेरा निवेदन है, यह हंस बेच, जो धन मिले, उससे इन मित्रों की अनोखी मित्रता की याद में एक सुनहरी हंस बाग बनवाया जाए। वहां छायादार पेड़ हों। बीच में स्वच्छ जल का सरोवर—जिसमें पांखें फैलाए संगमरमर के दो उजले हंस हों। दूर-दूर से आए पथिक इस बाग की शीतल छाया में विश्राम करेंगे और मित्रता का पाठ पढ़ेंगे।

सुनकर राजा कृष्णदेव राय मुसकराए। बोले—"सुझाव तो अच्छा है।"

तेनालीराम के इस अनोखे सुझाव से राजा प्रसन्न थे, मगर दरबारी बगलें झांक रहे थे।
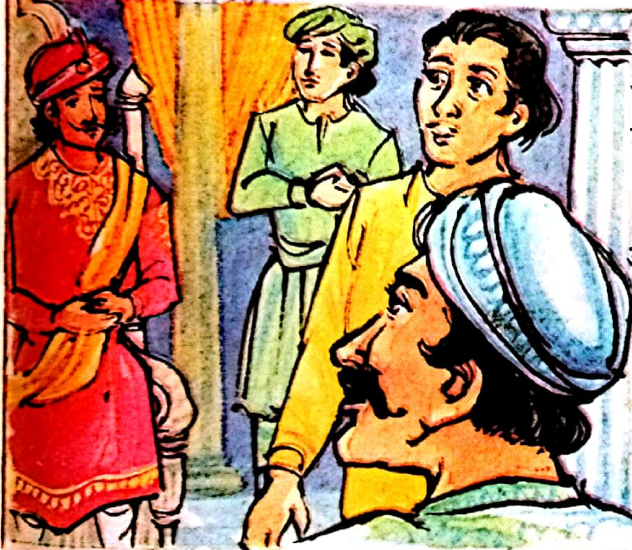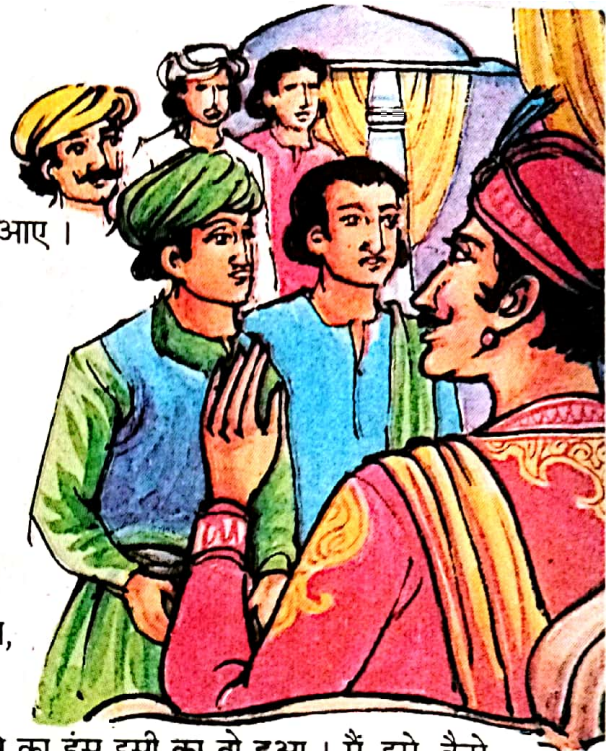
रेनू की सखियों से कट्टी
इसे पढ़ा देतीं वो पट्टी
अब इसने भी सोच लिया है
उनकी ये कर देगी छुट्टी
अपने एको पेन के सेट से
घंटों रंगती फूल औ' तितली
राजा, रानी, गुड्डा, गुड़िया
भूल के सब कुछ अगली पिछली
एको हरे और एको पीले
लाल और ऑरेंज, भूरे, नीले
काले, बैंगनी, वायलेट, गुलाबी
अब तो स्केच पेन एको ही लें.
मुफ़्त!
कलरिंग
फ़ोल्डर
EKCO
एको
स्केच पेन रंगों से यारी, मौज-मस्ती तुम्हारी!
सिज़न राइटिंग पॉइन्ट्स प्रा. लि. १८, सुभाष रोड, विले पारले (पूर्व), बम्बई-४०० ०५७.
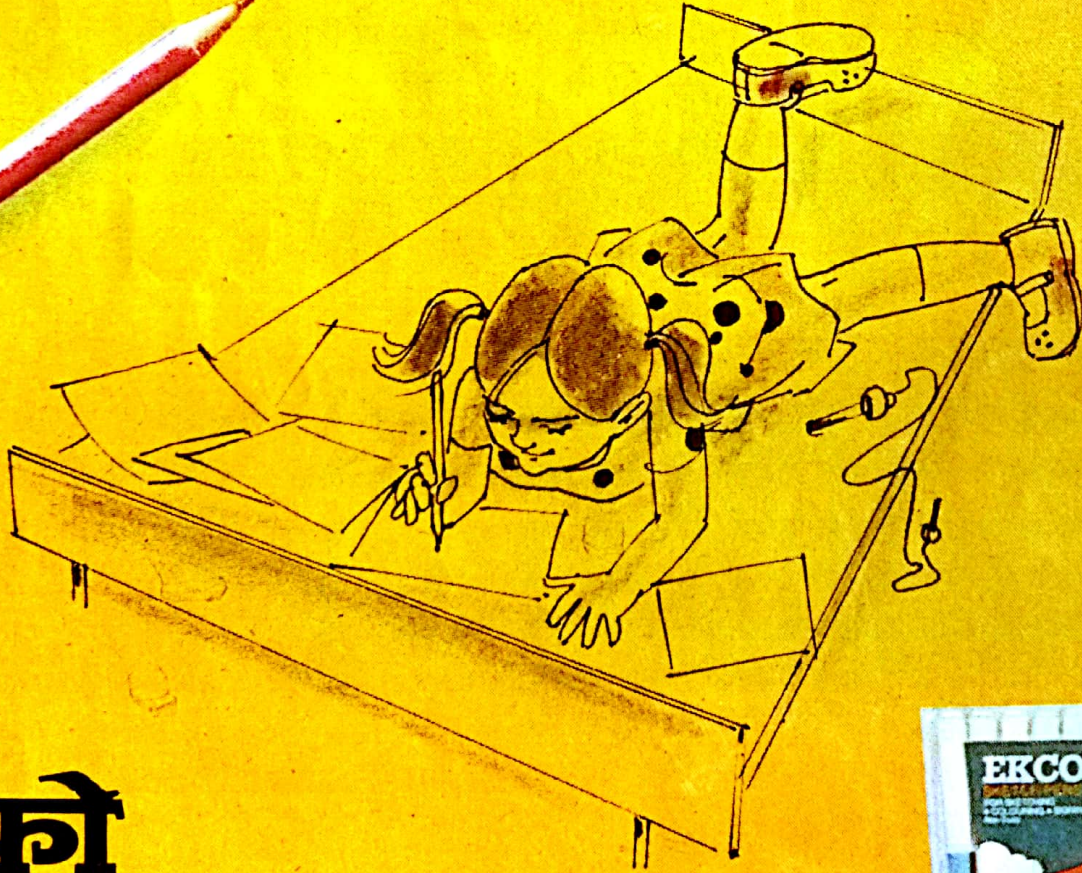
दादी का मंगना

एक था मंगना। बड़े ही मीठे स्वभाव का बांका जवान। था भी मां-बाप का इकलौता बेटा। बात यह थी— गांव के पटवारी दीनानाथ के जब चालीस वर्ष की उमर तक कोई बाल-बच्चा न हुआ, तो पटवारी की मां ने देवी की मनौती मांगी। लोग कहते थे, उसी से बेटा जनमा। बस, देवी से बेटा मांगा, इसलिए दादी ने मंगतराम को मंगना बना दिया।

मंगना दिन भर निठल्ला घूमता, देवी के भजन गाता, गप्पें लड़ाता, इधर से उधर, उधर से इधर। बस दिन बिता देता था। गांव के स्कूल मास्टर पूरी कोशिश के बाद भी उसे दर्जा चार के आगे न पढ़ा सके।

एक दिन पटवारी का परिवार गंगा नहाने गया। वहीं पर दादी को एक ज्योतिषी मिला। उसने बताया— "तेरा मंगना देवी मां की कृपा से बड़े घर की बहू लाएगा।"

चित्र : प्रेम कपूर

ज्योतिषी ने तो बता दिया, मगर पटवारी और उसकी पत्नी को विश्वास नहीं आया। वे सोचते— 'इस अनपढ़ को कहां मिलेगी बड़े घर की राजकुमारी-सी सुंदर बहू?' मगर दादी को विश्वास था। पटवारी का छोटा भाई जंगलात में एक छोटा अफसर था। एक बार मंगना चाचा के पास गया। उसे जंगल खूब भाया। अकेला ही जंगल में घूमने निकल जाता। घंटों घूमता रहता।

एक दिन मंगना लकड़ी काटने वालों के साथ बातें करता, जंगल के बारे में पूछता, दूर निकल गया। खूब घना जंगल। दिन में भी अंधेरा। वह एक पेड़ पर चढ़कर बैठ गया।

तभी कुछ दूर मंगना को एक हाथी दिखाई दिया। उस पर दो लड़कियां और एक लड़का बैठा था। महावत भी था। वे सब जंगल में सैर को आए थे। तभी उसे हाथी की चिंग्घाड़ सुनाई दी। लड़कियां चिल्ला रही थीं— "बचाओ, शेर!"

शेर के डर से हाथी भागता हुआ, उधर आया, जिधर मंगना था। हाथी नीचे से निकला, तो मंगना बिना कुछ सोचे, उसकी पीठ पर कूद गया। वहां हथियार के नाम पर एक भाला ही था। तभी शेर ने हाथी पर छलांग लगाई। मंगना ने जय भगवती बोलकर पूरी ताकत से भाला शेर की ओर फेंका। भाला शेर को जाकर लगा। वह धरती पर गिर गया। हाथी पालतू और समझदार था। भागता-भागता खतरे से दूर निकल गया।

इसके बाद मंगना का भाग्य पलट गया। एक लड़की उस इलाके के जमींदार की थी। मंगना की बहादुरी पर जमींदार की लड़की रींझ गई।

बस, मंगना जमींदार का दामाद बन गया। राजकुमारी-सी सुंदर पत्नी उसे मिल गई और मिल गया जंगल का साथ। सतरंगे वस्त्रों में सुकोमल पोत बहू को पाकर दादी निहाल हो गई। अक्सर वह कहती— "मुझे ज्योतिषी की बात पर सोलहों आने यकीन था। हो न हो, देवी की कृपा से ही जंगल वाली वह घटना घटी थी।"

— सोमसुंदरं

तीन दरवाजे

— निकहत परवीन

कलिंग देश के राजा यशोधन की एक बेटी थी। उसका नाम सुचिमा था। वह बड़ी सुंदर, सुशील और वीर थी। उसके इन गुणों की चर्चा घर-घर होती थी। सुचिमा बड़ी हो गई, तो राजा को उसके विवाह की चिंता सताने लगी!

यूं तो हजारों युवक सुचिमा से विवाह करने के इच्छुक थे, परंतु उनमें से राजा को कोई भी पसंद नहीं आता था। यदि कोई लड़का यशोधन को पसंद आ जाता, तो वह सुचिमा को पसंद नहीं आता था। इस प्रकार सुचिमा का विवाह राजा के लिए चिंता का विषय बन गया। वह दिन-रात इसी उलझन में खोए रहते। एक दिन यशोधन के गुरु महल में पधारे। राजा ने उन्हें अपनी समस्या बताई।

"बस, इतनी-सी बात के लिए दुखी हो?"— राजा की बात सुनकर गुरुदेव हंस पड़े— "इसका इलाज बहुत आसान है! सुचिमा के विवाह के लिए स्वयंवर रचाओ। स्वयंवर द्वारा जो वर सुचिमा को मिलेगा, वह उसके बिलकुल योग्य होगा।"

"स्वयंवर के लिए क्या शर्त रखूं गुरुदेव!"— राजा ने पूछा। गुरुदेव कुछ सोचते हुए बोले— "सारे देश में घोषणा कर दो, दक्षिण में एक जंगल है। उसके बीच से जो रास्ता जाता है, उसका अंत एक गुफा पर होता है। उस गुफा में अनमोल खजाना है। खजाने तक पहुंचने के लिए तीन दरवाजों से गुजरना पड़ता है। जो युवक उन तीन दरवाजों से गुजरकर वह अनमोल खजाना लाएगा, उसका विवाह राजकुमारी सुचिमा के साथ कर दिया जाएगा।"

"यह तो बहुत अच्छी बात है।"— राजा की आंखें खुशी से चमकने लगीं। उसने तुरंत घोषणा करने का आदेश दे दिया।

घोषणा सुनते ही राजकुमारी सुचिमा से

विवाह करने के इच्छुक नवयुवक खुशी से झूम उठे। वे उस अनमोल खजाने की खोज में अलग-अलग चल पड़े। परंतु खजाने तक पहुंचने का रास्ता इतना आसान नहीं था। वह बड़ा ही भयानक जंगल था। जंगली जानवरों की भरमार थी। कदम-कदम पर विषैले कीड़े-मकोड़े रेंगते थे। जानवरों और कीड़ों से बचते हुए रास्ता ढूंढ़ना बहुत कठिन था।

जो युवक उस खजाने की खोज में निकले थे, वे जंगल में पहुंचते ही जंगली पशुओं से डरकर या घायल होकर लौट आए। कुछ आगे बढ़े भी, तो जा न सके, क्योंकि जहां वह जंगल समाप्त होता था, वहां तेजी से बहने वाली एक नदी थी। उसमें बड़े-बड़े घड़ियाल थे।

उस नदी के पानी का बहाव बहुत तेज था, इसलिए वहां नाव नहीं चल सकती थी। उस नदी को तैरकर पार करने के सिवा कोई चारा नहीं था। परंतु नदी में उतरना अपनी मौत को निमंत्रण देने के समान था। घड़ियाल नदी में उतरने वाले पर टूट पड़ते थे। और उसे चट कर जाते थे। यह देख, सभी हिम्मत हार गए।

कलिंग में ही समीर नाम का एक बहादुर नवयुवक भी रहता था। उसने घोषणा सुनी, तो उसके मन में भी राजकुमारी को पाने की इच्छा जागी। वह उस अनमोल खजाने को लाने के लिए निकल पड़ा।

जंगल से गुजरते हुए उसे भी उन्हीं मुसीबतों का सामना करना पड़ा। रास्ते में उसे एक जगह एक सांप ने डस लिया। बड़ी मुश्किल से उसने विष उतारा। आगे एक शेर ने उस पर आक्रमण करके बुरी तरह घायल कर दिया। फिर भी मुसीबतों को झेलता, वह किसी तरह नदी के किनारे पहुंच गया।

नदी के किनारे पहुंचते ही उसे नदी में कई घड़ियाल तैरते नजर आए। परंतु उसने हिम्मत दिखाई। अपनी तलवार मजबूती से थाम, वह नदी में कूद गया। नदी में कूदते ही उस पर कई घड़ियालों ने हमला कर दिया।

समीर अपनी तलवार से उन्हें मारने-भगाने लगा। वह तैरता हुआ आगे भी बढ़ता गया। उसे एक-दो जगह घाव भी लगे। आखिर वह नदी के दूसरे किनारे पर पहुंच ही गया।

नदी के दूसरे किनारे पर उसे एक बड़ा-सा महल नजर आया। वह महल की ओर बढ़ा। महल के दरवाजे पर उसे एक तख्ती नजर आई! उस पर लिखा था— 'इस महल की हर चीज का मालिक मैं हूं। मेरी अनुमति के बिना कोई भी इस महल की किसी भी चीज को छूने या उठाने का प्रयत्न न करे।'

उन शब्दों को पढ़ता, वह महल के भीतर गया, तो उसकी आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गईं। महल में चारों ओर हीरे-मोती और सोने-चांदी के ढेर लगे थे। उनकी रक्षा करने वाला वहां कोई भी नहीं था।

महल के बाहर एक नाव थी। कोई भी उन हीरे-मोतियों को चुराकर, उस नाव द्वारा आसानी से भाग सकता था। परंतु समीर ने इस बारे में सोचा भी नहीं। वह आगे बढ़ा।

रास्ते में उसे एक बुढ़िया मिली। वह बुढ़िया सख्त घायल थी। समीर से बोली— "बेटा, एक
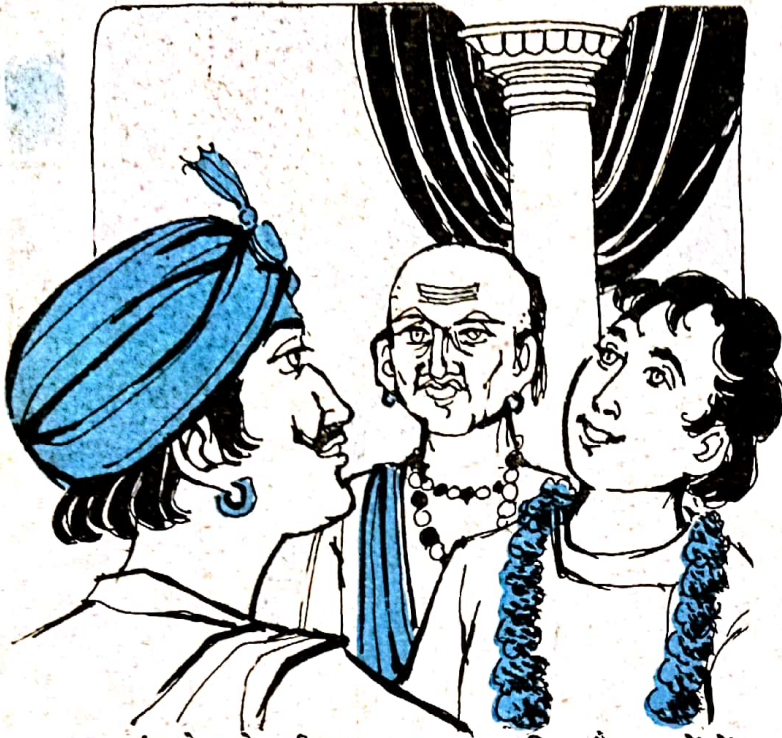
सांड ने मुझे बुरी तरह घायल कर दिया है। घावों में सख्त पीड़ा हो रही है। मेरी सहायता करो।" बुढ़िया का कष्ट देखकर समीर बहुत दुखी हुआ। वह भूल गया कि वह वहां किसलिए आया है?

बुढ़िया को उठाकर वह उसकी कुटिया में गया, जो समीप ही थी। बुढ़िया को बिस्तर पर लिटाकर वह जंगल से जड़ी-बूटियां जमा करने लगा, जिससे बुढ़िया का इलाज कर सके। जड़ी-बूटियों से उसने मलहम बनाया और उसे बुढ़िया के घावों पर लगाया। उससे बुढ़िया को आराम मिला। वह बुढ़िया की सेवा में लगा रहा। जब बुढ़िया अच्छी हो गई, तो उससे विदा लेकर आगे चल दिया। रास्ता समाप्त होने पर सामने ही गुफा थी। उसी गुफा में वह अनमोल खजाना था। वहां समीर को वे तीन दरवाजे कहीं नजर नहीं आए, जिनसे गुजरकर खजाने तक पहुंचना था। वह गुफा में पहुंचा, तो उसे गुफा में कोई खजाना तो नहीं मिला। केवल एक पुस्तक मिली, जिस पर लिखा था— 'मैं ही अनमोल खजाना हूं।'

समीर उस पुस्तक को लेकर लौट चला। महल तक पहले ही खबर पहुंच चुकी थी कि एक नवयुवक राजा का इच्छित अनमोल खजाना लाने में सफल हो गया है।

महल में उसके स्वागत की तैयारियां होने लगीं। समीर महल में पहुंचा, तो राजा यशोधन और राजकुमारी सुचिमा ने उसका स्वागत किया। वहां गुरुदेव भी उपस्थित थे। समीर ने वह पुस्तक राजा को दी और आपबीती बता दी।

"यही अनमोल खजाना है यशोधन!"— समीर की बात सुनकर गुरुदेव मुसकराकर बोले— "यह नवयुवक सुचिमा से विवाह करने के योग्य है।"

"परंतु गुरुदेव!"— राजा आश्चर्य से बोले— "यह नवयुवक तो उन तीन दरवाज़ों से गुजरा ही नहीं, जिनकी चर्चा आपने की थी। भला, यह पुस्तक अनमोल खजाना कैसे हो सकती है?"

"यह युवक उन तीन दरवाजों से गुजर चुका है राजन! यह पुस्तक ही अनमोल खजाना है। इसका नाम है जीवन"! — गुरुदेव ने कहा।

—"मैं समझा नहीं गुरुदेव।"

"यह युवक जिन तीन दरवाजों से गुजरकर इस अनमोल खजाना यानी जीवन तक पहुंचा, वे थे— वीरता, ईमानदारी और दयालुता।"

सब गुरुदेव का मुंह देख रहे थे। गुरुदेव कहने लगे —"भयानक जंगलों और घड़ियालों का मुकाबला करके यह युवक नदी के किनारे पहुंचा। ये काम उसने केवल अपनी वीरता के सहारे ही किए। फिर उसे एक महल मिला, जिसमें हीरे-जवाहरात और सोने-चांदी के ढेर लगे थे। यदि यह चाहता, तो वहां से ढेर सारे हीरे-मोती लाकर अपना जीवन संवार सकता था। परंतु इसने उन्हें छुआ भी नहीं, क्योंकि वे किसी दूसरे के थे। यह इसकी ईमानदारी थी। आगे इसने एक बुढ़िया की सेवा की। यदि इसके स्थान पर कोई दूसरा होता, तो बुढ़िया के पीछे अपना समय नहीं गंवाता। यह इसके दयालु होने का उदाहरण है। जिस व्यक्ति में ये तीन गुण हों, वह दुनिया में क्या नहीं कर सकता! इसलिए यही सुचिमा का पति बनने के योग्य है?" अब सबकी समझ में गुरुदेव की बात आ गई। राजा-रानी दोनों सुचिमा और समीर के विवाह की तैयारी में लग गए। ●

'नंदन' ज्ञान-पहेली

५०० रु. पुरस्कार
कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, उस पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक को होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—
'नंदन' ज्ञान-पहेली; हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. — की आवाज सुनो, तो समझ जाना। (ताली/थाली)
२. देखो-देखो, वह कैसे — रहा है। (लूट/पीट)
३. बेटे को देखते ही वह — से बोल पड़ी। (जोर/जोश)
४. मिलकर ही — अच्छा रहेगा। (खाना/जाना)
६. वह अब भी — रहा था। (रो/सो)
७. इस — को ध्यान से देखो। (चीज/चील)
८. सुदरता की यूनानी देवी।
९. कोई भी — आवाज नहीं सुन सकेगा। (मेरी/तेरी)
१०. जो कुछ तू चाहता है, उसे — आसान नहीं। (पाना/लेना)
१२. दो महासागरों को जोड़ने वाली नहर।

ऊपर से नीचे

५. रास्ते में बरगद का पेड़ — हुआ था। (अड़ा/खड़ा)
११. लड़के, क्या — रहा है? (देख/लिख)

कटिंग

'नंदन' ज्ञान-पहेली : २३४

नाम राजीव गुप्ता

आयु 16 वर्ष पता 23/A Netaji Subhas Road, Calcutta-700001

अपने शिशु को सब्ज़ियों की पोषकता दीजिए

पहले से पका हुआ

फ़ैरेक्स®-वेज

6ठे महीने से...

नए फ़ैरेक्स-वेज में विटामिन से भरपूर सब्ज़ियों — गाजर, टमाटर, और मूँग की दाल के भी पोषक तत्त्व हैं. यह पहले से ही पका हुआ है इसलिए शिशु की कोमल पाचन शक्ति के अनुकूल है.

फ़ैरेक्स– स्वाद भी पाए, बढ़ता भी जाए... मुन्ना.

GX/41/203 HIN
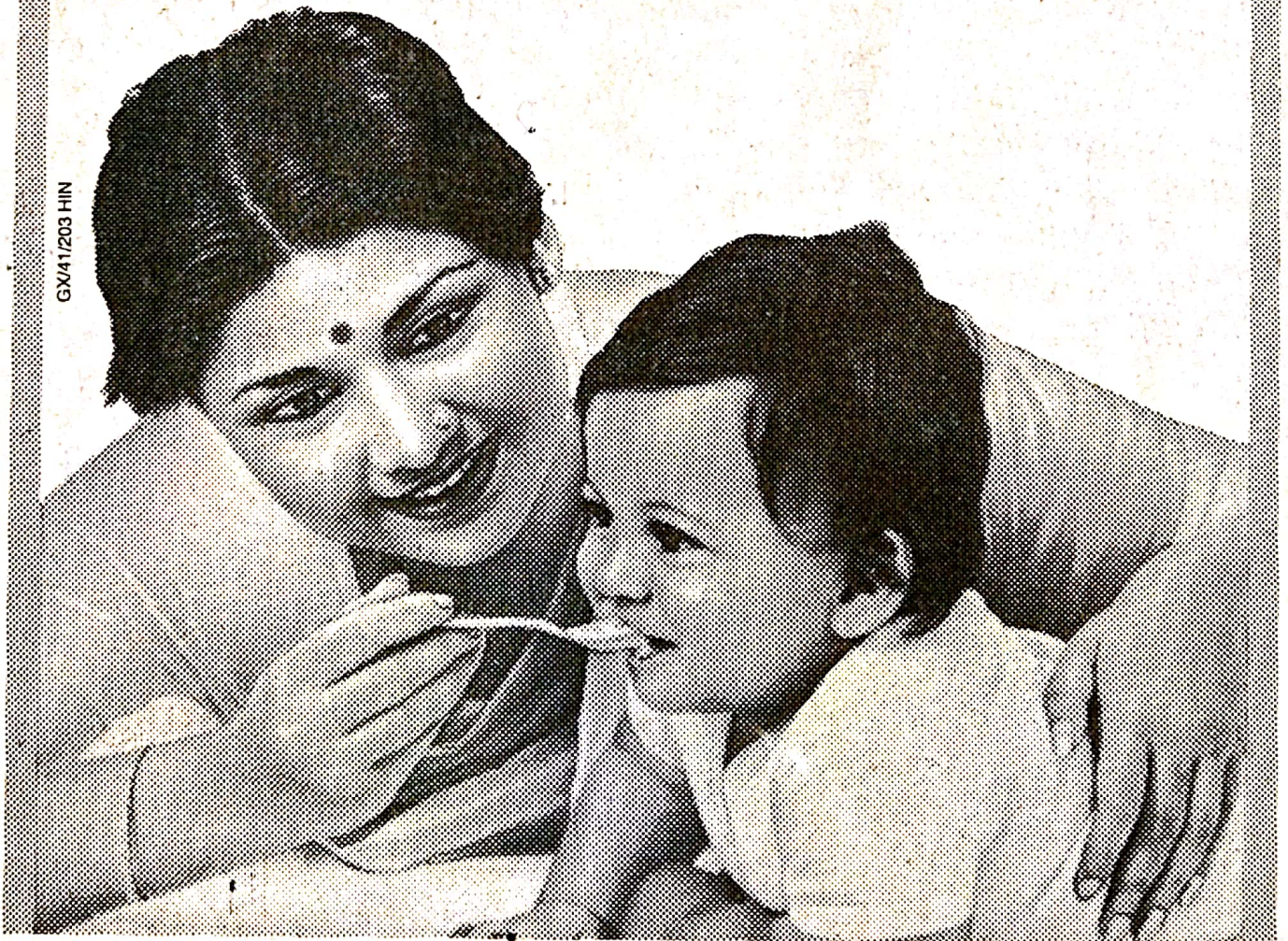
लोटे में पहाड़

— रश्मि बिंदल

दक्षिण दिशा में एक छोटा-सा गांव था। वहां रहने वाले लोग सीधे-सादे और मेहनती थे। इसीलिए वहां सदा हरियाली और खुशहाली छाई रहती थी।

एक दिन, न जाने कहां से एक राक्षस, पास के पर्वत पर आकर रहने लगा। राक्षस भी ऐसा भयानक कि अट्टहास करता, तो मुंह से आग निकलती। उस आग से गांव के पेड़-पौधे झुलस जाते। पशु-पक्षी छटपटाने लगते। रोज-रोज यह होता। अब गांव में चैन से रहना ही दूभर हो गया था।

आखिरकार गांव वालों ने एक सभा बुलाई। सभी ने उसमें भाग लिया। सरपंच ने समस्या सबके सामने रखी, लेकिन कोई इसका हल नहीं बता पाया।

तभी एक बूढ़ा, लाठी टेकता वहां आया। बोला—"इस विपत्ति से छूटने का समाधान तो मैं बता सकता हूं, लेकिन इसके लिए गहरे सागर, ऊंचे पर्वत और भयानक जंगल पार करके हिमदेव के पास जाना पड़ेगा। रास्ता बहुत कठिन व खतरनाक है। गांव में है कोई ऐसा साहसी युवक, जो यह काम करने की हिम्मत कर सके?"

बूढ़े की बात सुन, सभा में सन्नाटा छा गया। सब इधर-उधर देखने लगे।

तभी एक छोटा-सा बालक खड़ा हुआ। उसका नाम चेतन था। बोला—"बाबा, मुझे बताओ, क्या करना है?"

चेतन को देख, बूढ़े ने हंसकर कहा—"बच्चे, तुम अभी बहुत छोटे हो। यह काम तुमसे नहीं होगा।"

चेतन बोला—"आप मुझे बताएं तो सही। मैं किसी से नहीं डरता। अपने गांव की रक्षा के लिए मैं कुछ भी करने को तैयार हूं।"

यह सुन, बूढ़े ने चेतन को अपने पास बुलाया। कहा—"देखो, उत्तर दिशा में हिमदेव का महल है। वहां जाकर उन्हें अपनी समस्या बतानी होगी। वह चाहेंगे, तो तुम्हारे दुःख दूर हो जाएंगे।"

—"परंतु मैं वहां पहुंचूंगा कैसे?"

"मैं तुम्हें जादुई जूते दूंगा। उन्हें पहनकर तुम बहुत तेजी से चल सकोगे। रास्ते में जो विपदाएं आएंगी, उनसे तुम्हें स्वयं ही निपटना पड़ेगा। यहीं तुम्हारे साहस की परीक्षा होगी।"— इतना कहकर बूढ़े ने चेतन को एक जोड़ी जूते दे दिए।

"कल सुबह ही तुम यहां से चले जाओ। जल्दी से जल्दी वापस आना। कहीं ऐसा न हो, तुम्हारे आने से पहले ही राक्षस पूरे गांव को उजाड़ दे।"

अगले दिन सुबह-सुबह चेतन घर से निकल पड़ा। गांव से बाहर पहुंचते ही उसने जादुई जूते पहन लिए। जूते पहनकर वह दस दिन की दूरी एक दिन में तय कर सकता था। वह तेजी से उत्तर दिशा में चल पड़ा।

सबसे पहले उसके रास्ते में ऊंचे-ऊंचे पर्वत आए, लेकिन जूतों की सहायता से वह लम्बी-लम्बी छलांग मारकर, उन पर चढ़ गया। पहाड़ी रास्ता पार

करने में उसे कई दिन लग गए। वह बुरी तरह थक गया। फिर भी उसने आराम नहीं किया। चाहता था, जल्दी से जल्दी अपनी मंजिल पर पहुंच जाए।

एक ऊंचे पर्वत की घाटी में उसे किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी। चेतन ने आसपास देखा, तो पाया कि एक बड़ा-सा काला नाग एक पत्थर के नीचे दबा पड़ा था। चेतन को दया आ गई। उसने पत्थर हटाकर नाग को मुक्त कर दिया।

नाग ने चेतन को बहुत धन्यवाद दिया। फिर वहां आने का कारण पूछा। चेतन ने उसे पूरी बात बता दी। उसकी बात सुन, नाग ने कहा— "तुमने मेरी जान बचाई है। मैं बदले में तुम्हें एक तीर-कमान देता हूं। इसका वार कभी खाली नहीं जाता है। छोड़ने के बाद तीर वापस भी आ जाता है।"

नाग से तीर-कमान ले, चेतन आगे बढ़ा। अब जंगल का रास्ता शुरू हो गया। साथ ही भयानक जानवर चेतन पर झपटने लगे। चेतन घबराया नहीं। तीर-कमान की सहायता से वह सब जानवरों को

मारता-भगाता आगे बढ़ने लगा।

अचानक एक दिन चेतन का सामना एक बहुत बड़े भयानक जानवर से हो गया। उसके तीन सिर थे। पूरे शरीर पर छोटे-बड़े जहरीले कीड़े चिपके हुए थे। ऐसा जानवर चेतन ने पहले कभी देखा था।

उसे देख, पहले तो चेतन घबरा गया, लेकिन अपने गांव की मुसीबत की याद आते ही चेतन में हिम्मत भर गई। उसने कमान पर अपना तीर रखकर ताना। वह तीर छोड़ने ही वाला था, तभी जानवर बोला—"ठहरो, मुझे मत मारो!"

चेतन रुक गया। उस जानवर ने कहा—"दुनिया में केवल एक ही शस्त्र है, जिससे मैं मर सकता हूं। और वह है तीर-कमान। अगर तुम मुझ पर दया कर, मुझे न मारो, तो मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं।"

"क्या मदद कर सकते हो तुम?" —चेतन ने पूछा।

"मुझे पता है, तुम हिमदेव के पास जा रहे हो। आगे सात सागर आएंगे। उन्हें साधारण मनुष्य पार नहीं कर सकता। मेरे जादुई लोटे की सहायता से तुम आसानी से उन्हें लांघ सकोगे।"

यह कहकर उसने चेतन को रत्नों से जड़ा एक सुंदर लोटा दिया। उसे प्रयोग करने का तरीका भी बता दिया।

लोटा लेकर चेतन आगे बढ़ा। कुछ देर बाद वह समुद्र के आगे खड़ा था। तूफानी हवाएं चल रही थीं। समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थीं।

चेतन के पास तो इसका समाधान था। उसने झुककर समुद्र की कुछ बूंदें लोटे में ले लीं। ऐसा करते ही समुद्र बिल्कुल शांत हो गया। पानी के बीच में सूखा रास्ता निकल आया। इस प्रकार चेतन ने आराम से सातों समुद्र पार कर लिए।

चलते-चलते चेतन हिमदेव के महल पर पहुंच गया। महल बर्फ का बना था और शीशे की तरह चमक रहा था। चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी। चेतन ठंड से कांपता हुआ महल की ओर बढ़ा। महल का
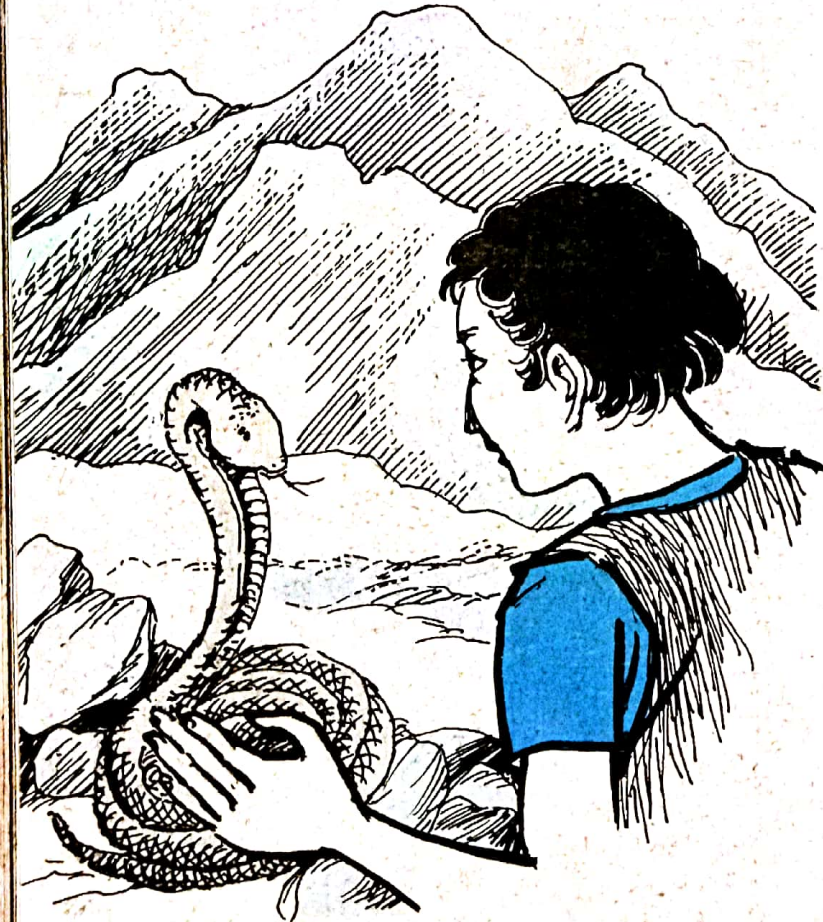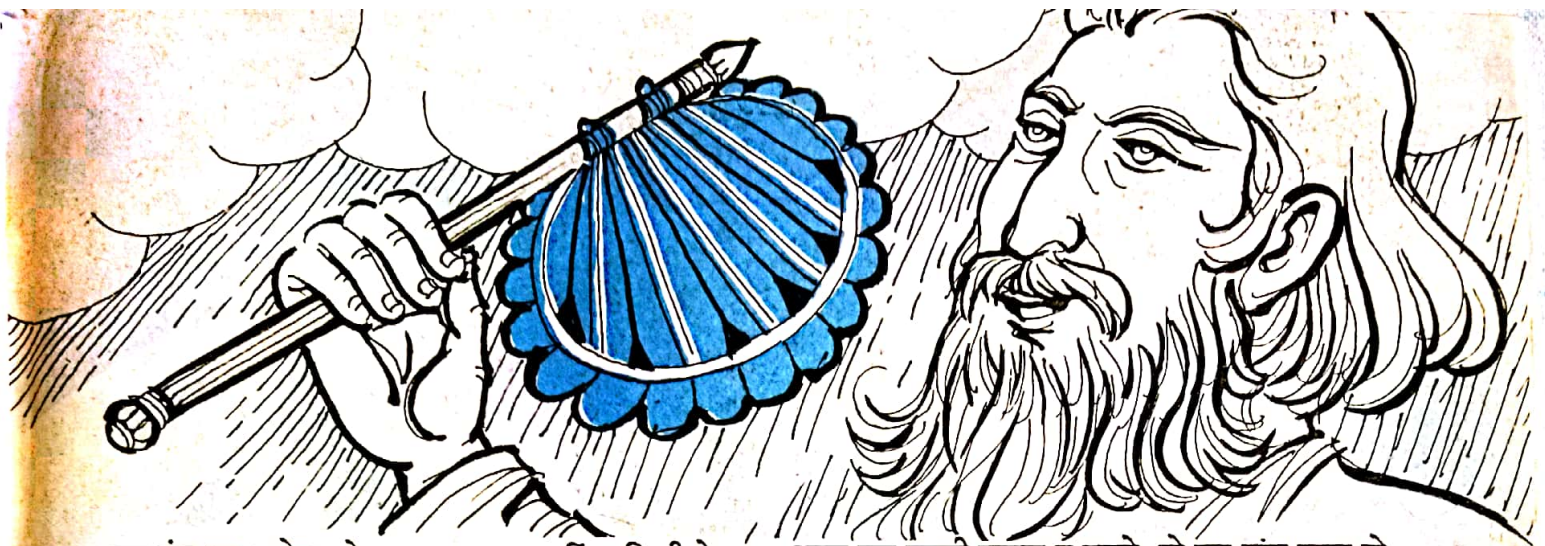
द्वार बंद था। चेतन ने द्वार खटखटाया, किंतु किसी ने द्वार न खोला।

तीन दिन तक चेतन महल के बाहर ठंड में खड़ा, दरवाजा खटखटाता रहा, किंतु सब बेकार। वह निराश होकर वापस जाने की सोच रहा था, तभी एक चिड़िया उड़ती हुई आई। बोली—"चेतन, द्वार पर अपना तीर चलाओ।"

चेतन ने द्वार पर तीर चलाया, तो क्षण भर में द्वार खुल गया। चेतन अंदर गया। एक बड़े से कक्ष में सफेद कपड़े पहने हिमदेव बैठे थे। उनके हाथ में एक बड़ा-सा पंखा था। एक तरफ बहुत सारी रुई पड़ी थी। वह अपने पंखे को हिलाते, तो रुई बर्फ बनकर ठंडी हवा के झोंकों के साथ बाहर निकलती।

चेतन को देखकर वह बोले—"अरे, बालक! कहो, क्या काम है?"

चेतन ने उन्हें पूरी कहानी सुनाकर कहा—"आप से प्रार्थना है, किसी भी तरह इस मुसीबत से छुटकारा दिलाएं।"

"तुम जैसे साहसी बच्चे की मदद करके मुझे खुशी होगी। लाओ, अपना लोटा इधर लाओ।"—हिमदेव ने कहा।

हिमदेव ने लोटे पर अपना पंखा झला और कहा—"जाओ, इस लोटे का पानी उस राक्षस पर फेंक देना।"

लोटा लेकर चेतन महल से बाहर निकला। बाहर वही चिड़िया बैठी थी। बोली—"क्या तुम्हें पता है, घर से निकले तुम्हें छह महीने हो गए हैं? अगर तुम जल्दी वापस न पहुचे, तो पूरा गांव खत्म हो चुकेगा।"

"छह महीने!"—चेतन ने अचरज से कहा—"मुझे तो लग रहा है, जैसे मैं कुछ ही दिन पहले घर से निकला था, लेकिन अब वापस जाने में भी उतना ही समय लग जाएगा।"

"मैं तुम्हें अपने दो पंख देती हूं। इन्हें तुम अपने जूतों पर लगा लो। फिर तुम पहले से भी ज्यादा तेजी से चल सकोगे।"

चेतन ने चिड़िया के दिए पंख अपने जूतों पर लगा लिए और तेजी से गांव की ओर चल पड़ा।

कुछ ही दिन में वह अपने गांव पहुंच गया। इस बीच गांव के सारे पेड़ तथा खेत सूख गए थे। चेतन को देख, गांव वाले बहुत खुश हुए।

चेतन गांव वालों के साथ लोटा लेकर राक्षस की ओर गया। राक्षस ने चेतन को आते देखा, तो जोर से दहाड़ा। चेतन ने लोटे का पानी उसकी ओर फेंक दिया। ऐसा करते ही उस छोटे से लोटे में से बर्फ निकली। राक्षस के मुंह से निकलती लपटें तुरंत ठंडी पड़ गईं। बर्फ निकलती रही, निकलती रही और राक्षस पूरा का पूरा बर्फ से ढक गया। कुछ ही देर में राक्षस के स्थान पर केवल बर्फ का एक पहाड़ रह गया था।

लोग खुशी से झूम उठे। उन्होंने चेतन को कंधों पर उठा लिया। कुछ दिन बाद लोगों ने देखा कि राक्षस के स्थान पर ठंडे पानी की एक सुंदर झील बन गई। गांव में एक बार फिर सुख-शांति छा गई।●

बातें रंग-बिरंगी

अमृतफल—कहते हैं, सृष्टि की रचना करते हुए ब्रह्मा ने अमृतफल का निर्माण किया। किसी प्रकार यह फल मनुष्य के हाथ लग गया। यह देखकर ब्रह्मा को चिंता हुई कि इसे खाकर तो मानव अमर हो जाएगा। मेरा प्रभाव ही समाप्त हो जाएगा। यह सोचकर ब्रह्मा ने फल में एक प्रकार की गंध पैदा कर दी, जिससे मनुष्य इस फल के प्रयोग से हिचकिचाने लगा। शायद यह अमृतफल था लहसुन।

लहसुन हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक है। इसका प्रयोग मानव प्राचीन काल से ही करता आ रहा है। रोम के लोग अपने सैनिकों में शक्ति और साहस का संचार करने के लिए उन्हें लहसुन खिलाते थे। मध्य युग में प्लेग के आक्रमण से बचने के लिए लहसुन का प्रयोग किया जाता था।

पिछले कुछ वर्षों से लहसुन का प्रयोग विश्व भर में औषधि के रूप में होने लगा है। हृदय और पेट विकारों में लहसुन अमृत का काम करता है। विशेषज्ञों का मत है कि लहसुन के प्रयोग से रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा नहीं बढ़ पाती। इससे दिल का दौरा पड़ने की सम्भावना बहुत कम हो जाती है। लहसुन में एलियम नामक एंटीबायोटिक होता है, जो जीवाणु विनाशक है। जुकाम और सर्दी के उपचार में भी यह अत्यंत उपयोगी है। गठिया के रोगियों को इसके सेवन से विशेष लाभ होता है।

चार पेट— गाय जुगाली करने वाला घरेलू पशु है। हमारे लिए यह बहुत उपयोगी है। कहा जाता है, गाय के चार पेट होते हैं और चारों ही भोजन की पाचन-क्रिया में योग देते हैं। जब गाय भूसा, घास या दूसरा भोजन करती है, तो ये पद्मार्थ उसके पहले
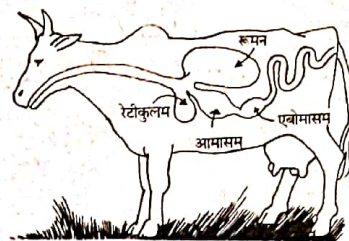
पेट में जाते हैं। इसे रूमन कहते हैं। यहां से ये पदार्थ मांसपेशियों द्वारा दूसरे पेट रेटीकुलम में भेज दिए जाते हैं। रेटीकुलम से भोजन फिर मुंह में आता है। गाय इस भोजन की जुगाली करती है। जुगाली के बाद भोजन तीसरे पेट आमासम में जाता है। यहां इसमें कुछ पाचक रस मिल जाते हैं। अंत में पेट की मांसपेशियां इसे चौथे भाग एबोमासम में भेज देती हैं। इस सम्पूर्ण चक्र में, भोजन पचने की क्रिया पूरी हो जाती है।

नया चूल्हा — लकड़ी, उपले और कोयले के चूल्हे हमारे देश में भोजन पकाने के काम आते रहे हैं। गैस और बिजली के चूल्हों का प्रचलन नगरों और कस्बों में हो गया है। इन सभी में ईंधन के जलने या बिजली से गरमी पैदा होती है, जिससे चीजें पक जाती हैं। लेकिन एक ऐसा अनोखा चूल्हा है जो स्वयं तो गरम होता नहीं, परंतु भगोने में रखी दाल-सब्जियों और दूसरी वस्तुओं को पल भर में पकाकर तैयार कर देता है। यह चूल्हा विद्युत चुम्बकीय प्रेरण (इलेक्ट्रोमैगनेटिक इंडक्शन) के सिद्धांत पर कार्य करता है। विद्युत-चुम्बकीय प्रेरण विज्ञान की एक ऐसी क्रिया है, जिसमें चुम्बकीय क्षेत्र के परिवर्तन से विद्युत धारा पैदा होती है। इस चूल्हे में एक प्लेट होती है, जिस पर दाल-सब्जी वाला बर्तन रखा जाता है। बर्तन में रखे खाद्य पदार्थ थोड़ी ही देर में पक जाते हैं, लेकिन चूल्हे की प्लेट गरम नहीं होती। इस चूल्हे की प्लेट पर बच्चे अपना हाथ रख सकते हैं। उन्हें इससे जलने का कोई डर नहीं होता।

इस अनोखे चूल्हे का आविष्कार एंटन सीलिंग नामक जर्मन इंजीनियर ने सन १९८४ में किया था। आशा है कुछ ही वर्षों में यह चूल्हा घरों में इस्तेमाल होने लगेगा।

— डा. सी. एल. गर्ग

चीटू नीटू
हमारे कहने पर पिता जी ने बंदूक दिला दी। अब सभी साथियों को ले कर शिकार पर चलते हैं
लेकिन यह तो नकली बंदूक है
खिलौना हो या असली। जानवर तो बंदूक की आवाज से डरता है
चलो, कहीं मचान बना कर बैठते हैं
जैसे ही जानवर आए बंदूक चला दो। बस ठांए ठांए की आवाज से ही उसका दम निकल जाएगा
वह देखो, झाड़ी हिल रही है। जरूर इसमें शेर छिपा बैठा होगा
चला दो बंदूकें
ठांए
ठांए
ठांए
ठांए
ठांए
सारे जंगल में शांती छा गई। लगता है शेर का काम तमाम..
चलो नीचे उतर कर देखते हैं
देखा, बंदूक के डर से शेर ऊदबिलाऊ बन गए
भागो, यह तो हमारे पीछे ही पड़ गए हैं
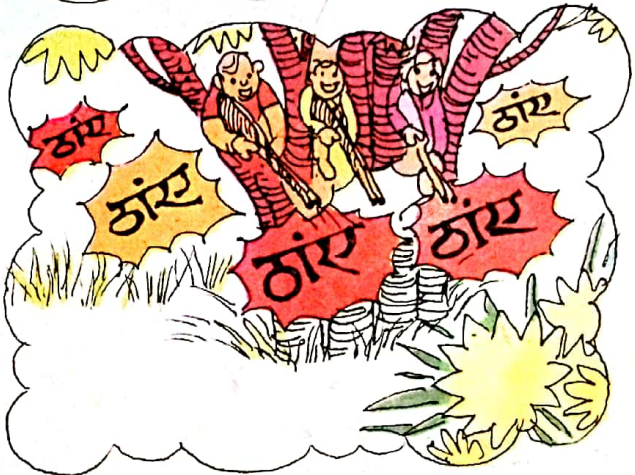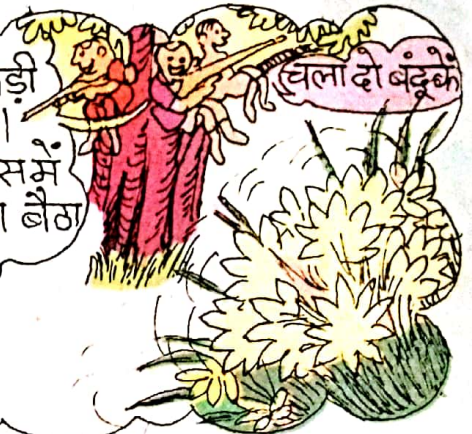
पुरस्कृत चित्र

राखी मामगेन, एम. आई. जी-६२; अलीगंज हाउसिंग स्कीम, लखनऊ

इनके चित्र भी प्रशंनीय रहे— राजीव रंजन, पटना; जुगलकिशोर अग्रवाल, हरदोई; गोपेशकुमार साहू, कांकेर (बस्तर); यज्ञ प्रकाश, मुजफ्फरपुर; पूजा शर्मा, दिल्ली; सारिका जैन, बाड़मेर (राज.); कमल श्रीवास्तव, झांसी।
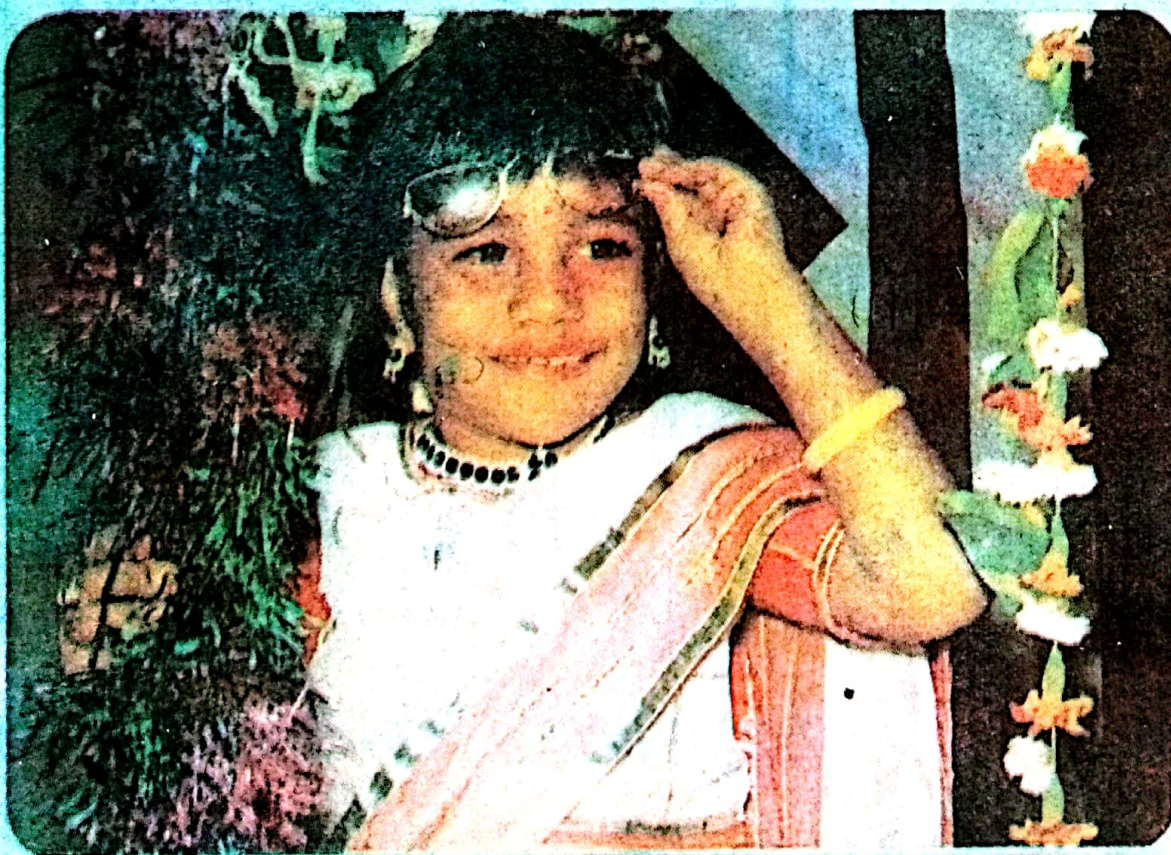
शीर्षक बताइए

मुस्काती बहना आती : इस चित्र के इसी तरह के कई शीर्षक हो सकते हैं। आप भी कोई अच्छा-सा शीर्षक सोचिए। पोस्टकार्ड पर लिखकर १० जून, १९८८ तक **शीर्षक बताइए, 'नंदन', हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली** के पते पर भेज दीजिए। चुने हुए शीर्षकों पर इनाम दिए जाएंगे।

परिणाम : अगस्त '८८

चित्र : नवीन फ़ोटो स्टुडियो

पत्र मिला

- पिछले छह वर्षों से 'नंदन' पढ़ रहा हूं। अप्रैल अंक हर दृष्टि से अच्छा था। पत्रिका में प्रश्नोत्तर स्तम्भ चार चांद लगा सकता है। **—जगतसिंह 'पप्पू', हलद्वानी (उ. प्र.)**
- आकर्षक मुखपृष्ठ से सजा 'नंदन' का अप्रैल १९८८ अंक मिला। शक्तिदायिनी मां दुर्गा का चित्र बहुत पसंद आया। 'मंदिर-मंदिर बसते हैं भगवान' झांकी की सुंदरता का क्या वर्णन करूं? **—आलोकचंद्र पांडेय, गोरखपुर**
- 'मिस्टर खिलखिल' चित्र कथा अनोखी थी। दरअसल यह चार्ली चैप्लिन जैसे महान कलाकार की याद ताजा करा गई। दामोदर अग्रवाल की कविता तथा कहानियों में 'वरदान का भय', 'लाल फूल', 'हार जीत' निराली थीं। **—जितेंद्रकुमार, सीतामढ़ी**
- 'अदल बदल', 'सूना नगर', 'कोटर के कबूतर', 'शंख बज उठा', 'सुख की तलाश', 'आवाज आई' आदि कहानियां अद्भुत थीं। बल्कि इस प्राचीन कथा विशेषांक की पूरी सामग्री ही अच्छी थी। लेकिन 'आओ बात करें' स्तम्भ को न पाकर निराशा हुई। **—आनंदसिंह सब्बरवाल, बटाला (पं.)**
- 'नंदन' अप्रैल ८८ अंक में 'तेनालीराम' 'चीटू-नीटू', 'बाल समाचार' एवं चित्र कथा कुछ अधिक ही रोचक थे। सच्ची कहानी 'बालक शेर से लड़ा' विशेष पसंद आई। **—राजेशकुमार शर्मा, वाराणसी**
- मुझे नई 'नंदन' का इंतजार रहता है। यह बच्चों को गलत मार्ग पर चलने से रोकती है। बच्चों में त्याग और देशभक्ति की भावना पैदा करती है। **—नरेन्द्रकुमार, शास्त्री नगर, दिल्ली**
- हर महीने 'नंदन' पढ़ता हूं। पत्रिका में रचनाएं उत्कृष्ट कोटि की होती हैं। चित्र कथा में अक्सर आप विश्व के महान लोगों से परिचित कराते हैं। यदि 'क्या आप यह जानते हैं' जैसा स्तम्भ शुरू कर, हमें और भी नई जानकारियां दें, तो अच्छा रहेगा। **—राकेश जैन, धावड़ी, डूंगरपुर (राज.)**
- मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जिस तरह हंसना जरूरी है, उसी तरह बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए 'नंदन' पढ़ना जरूरी है। **—लवली, तुगलकाबाद**
- 'नंदन' का प्राचीन कथा अंक पूरा का पूरा बेजोड़ था। मैंने इसे संभालकर रख लिया है। अब तो अगले अंक की प्रतीक्षा है। **—निर्मला शर्मा, कोझीकोड (केरल)**

इनके पत्र भी पसंद आए —विष्णु माडल, दरभंगा; रवींद्रकुमार, चरखी दादरी; प्रमोदकुमार काला, गोरखपुर।

आगामी अंक
परी कथा-विशेषांक

मुनिया ने मां से कहा—कहानी सुनाओ। तभी परी रानी ने कुछ फूल धरती की तरफ फेंके, जो नीचे गिरते ही कहानियों में बदल गए। उन्हीं कथा पुष्पों से गुलदस्ता सजाया है इस बार—

- बीन बोली तो राजा और दरबारी गूंगे-बहरे हो गए
- परियां परेशान थीं, तभी राजकुमार का उड़नखटोला वहां गिर पड़ा।
- आकाश में पुल बनाना था धरती वासियों को, लेकिन... ऐसी ही विचित्र, रोमांचक, मनोरंजक बीस से अधिक कथाएं
- **एलबम : देश-देश के बच्चे डाक टिकटों में**
- मध्यवर्ती पृष्ठों में रंगीन झांकी—**'परियों के गांव में'**
- **महान कथाकार प्रेमचंद :** आठ पृष्ठों में रंगीन चित्र कथा। साथ में और भी बहुत कुछ

पृष्ठ अधिक : मूल्य वही
अपनी प्रति सुरक्षित कराएं।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. जहाज के डेक पर बना गंदी हवा बाहर निकालने का पाइप छोटा है।

२. जहाज से कूदते हुए चूहे की पूंछ ऊपर उठी है।

३. जहाज के सीधी ओर से दिखाई देने वाली इमारत की छत ऊंची है।

४. आकाश में उड़ती एक चिड़िया कम है।

५. तारों के पार बैठे दर्शकों में से एक दर्शक कम है।

६. महिला के हाथ के कागज पर कुछ लिखा है।

७. उसके टोप के पीछे लटका रिबन सफेद है।

८. नौसेना अधिकारी के कोट पर लगे पदक अधिक हैं।

९. बाईं ओर वाली इमारत पर लगी शील्ड का ऊपरी भाग समतल है।

१०. उसके ऊपर छाया बादल बड़ा है।

शीर्षक बताइए : परिणाम

अप्रैल '८८ अंक में छपे रंगीन चित्र पर ढेर सारे शीर्षक आए—एक से एक बढ़िया और आकर्षक। इन शीर्षकों को पुरस्कार के लिए चुना गया—

हंसी की फुलझड़ी,
मुसकाए खड़ी-खड़ी।

—पद्मा, द्वारा बी. एस. जैन, ए-३६ न्यू कृष्णा पार्क, नई दिल्ली।

टोपी पहन के आती हूं,
झूम-झूमकर गाती हूं।

—रूपककुमार मुरारका, द्वारा विजय आटो मोबाइल्स, बर्दवान रोड, झंकार मोड़, सिलीगुड़ी।

नंदन वन में छाई खुशी,
बिटिया की है मधुर हंसी।

—कावेरी पिल्लई, कीडातील हाउस, तेकुमगल, कोटातुर (केरल)।

इनके शीर्षक भी प्रशंसनीय रहे—ब्रजेंद्रकुमार, सागर (म. प्र.); शिखा शर्मा, अमृतसर; मौसमी पारिल्लेवार, नागपुर; शिखा स्वरूप, शिमला; आलम अख्तर, रेहला (बि.)।

हीरा और पिल्ला

एक गांव में सेठ-सेठानी रहते थे। उनका एक ही बेटा था—हीरा। एक दिन सेठ-सेठानी और हीरा घूमने जा रहे थे। तभी उन्हें एक पिल्ले की कूं-कूं सुनाई दी। हीरा तुरंत दौड़कर उधर गया। उसने देखा, एक मरियल-सा पिल्ला चिल्ला रहा था। कुछ बच्चे उस पर पत्थर मार रहे थे। हीरा को पिल्ले पर बहुत दया आई। उसने झपटकर पिल्ले को उठा लिया।

मगर हीरा न माना। पिल्ले को घर ले जाकर उसने दूध पिलाया। एक फटी-सी चादर बिछाकर उस पर लिटा दिया। चादर पर पिल्ला आराम से ऐसे सो गया, जैसा कुछ हुआ ही न हो। मगर सेठानी को पिल्ला जरा भी पसंद न आया। उन्हें जानवरों से बिलकुल प्यार न था।

एक दिन हीरा जब स्कूल से लौटा, तो उसने पिल्ले को वहां नहीं पाया। सेठानी ने उसे बताया कि उन्होंने पिल्ले को शहर से दूर छुड़वा दिया है। हीरा को बहुत दुःख हुआ।

एक रात सेठ-सेठानी और हीरा एक विवाह में गए। वापस लौटते हुए बहुत देर हो गई। जैसे ही वे अपने घर के दरवाजे पर पहुंचे, तो आश्चर्य में पड़ गए। दरवाज़े का ताला टूटा पड़ा था। सारा सामान इधर-उधर बिखरा था। सामान के बीच में ही एक आदमी पड़ा कराह रहा था। शायद वह चोर था। सेठ-सेठानी और हीरा इधर-उधर देखने लगे। तभी सेठानी की नजर, कोने में दुबके बैठे पिल्ले पर पड़ी। तब तक हीरा ने भी पिल्ले को देख लिया था। उसने दौड़कर पिल्ले को गोद में उठा लिया। तभी जमीन पर पड़ा आदमी उठकर भागने लगा, तो सेठ ने उसे पकड़ लिया। उसने बताया कि वह घर से सामान बांधकर जाने वाला था कि यह पिल्ला कहीं से आ गया। उसने पैर में जगह-जगह काट लिया। चोर को तो पुलिस के हवाले कर दिया गया, मगर पिल्ले को घर में जगह मिल गई। अब सेठानी भी उसे प्यार करती थीं। —सिद्धार्थकुमार, बर्न (स्विट्ज़रलैंड)

तलवार छूट गई

सोमनाथ एक गरीब आदमी था। उसके पास एक कुत्ता था—मोती। मोती के करतब दिखाकर वह रोजी-रोटी चलाता था। एक बार सोमनाथ मोती को लेकर चल दिया। वह जहां-जहां गया, मोती के करतबों को लोगों ने बहुत पसंद किया। नगर के राजा ने सोमनाथ को दरबार में बुलाया। मोती की कलाबाजियां देखकर राजा चकित रह गया। वह बोला—"सोमनाथ, इस कुत्ते को मुझे दे दो। मैं इसकी मुंहमांगी कीमत दूंगा।"

"राजन, इस कुत्ते को मैंने बचपन से पाला है। यह मेरे बच्चे की तरह है।

सोमनाथ की बात सुनकर राजा को गुस्सा आ गया। बोला— "ठीक है सोमनाथ, मैं तुम्हें कल तक का समय देता हूं। यदि तुमने कुत्ता न दिया, तो कड़ी सजा मिलेगी।"

रात भर सोमनाथ सो न सका। एक तरफ राजा का दंड, दूसरी तरफ मोती से बिछुड़ने का दुःख। अगले दिन दरबार में जाकर सोमनाथ ने वही बात दोहरा दी। राजा बोला—"सोमनाथ, तुमने हमारी आज्ञा नहीं मानी। मरने को तैयार हो जाओ।" और उसने जल्लाद को सोमनाथ की गरदन उड़ाने का हुक्म दे दिया।

जैसे ही जल्लाद तलवार लेकर सोमनाथ की तरफ बढ़ा, मोती तलवार पर लपका। तलवार जल्लाद के हाथ से छूटकर दूर जा गिरी। तलवार से मोती को चोट भी लगी। तभी तालियों की आवाज सुनाई दी। तालियां राजा बजा रहा था। राजा बोला—"शाबास सोमनाथ, तुम्हारा कुत्ता सिर्फ अच्छा कलाबाज ही नहीं, स्वामिभक्त भी है। उसकी स्वामिभक्ति देखने के लिए ही हमने यह नाटक किया था। अब से तुम यहीं रहोगे। तुम्हारा और मोती का खर्चा हम उठाएंगे।" —राजीव गुप्ता, जयपुर

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : राजेश्वर सिंह बत्याल, पठानकोट; अंजु भारती, नई दिल्ली; राकेश मेहता, बांसवाड़ा।

बाल साहित्य के लिए
राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) द्वारा बाल साहित्य के लिए २५ वीं पुरस्कार प्रतियोगिता हेतु लेखकों और प्रकाशकों से ५ से १५ वर्ष के आयु समूह के बच्चों के लिए उपयुक्त रोचक पुस्तके /पाण्डुलिपियाँ आमंत्रित की जाती हैं।

पुरस्कार : छत्तीस पुरस्कार दिए जायेंगें, इनमें से चार हिन्दी को, एवं असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, तमिल, तेलगु एवं उर्दू प्रत्येक के लिए दो पुरस्कार दिए जायेंगे। प्रत्येक पुरस्कार की राशि रु. ५,०००/- होगी।

प्रविष्टियाँ : (१) वर्ष १९८५ एवं १९८६ के दो पंचाग वर्षों के दौरान प्रकाशित पुस्तकें इस प्रतियोगिता के लिए पात्र होंगी। (२) इन मुद्रित पुस्तकों के अतिरिक्त टाइप फार्म में अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ भी स्वीकार की जायेंगी, लेकिन टाइप की गई पाण्डुलिपियों का विषय "वातावरण" से सम्बन्धित होना चाहिए।

पाठ्यपुस्तकों, अनुवाद, प्रतिकृतियों या अन्य पुस्तकों के सार पर विचार नहीं किया जायेगा। बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता के लिए पहले भेजी गई प्रविष्टियाँ या ऐसी पुस्तकों को इस प्रतियोगिता के लिए स्वीकार नहीं किया जाएगा जिसे सरकारं या इसके विभाग और किसी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन से प्राप्त निधियों की सहायता से राज्य सरकार, भारत सरकार या किसी संगठन द्वारा आयोजित किसी प्रतियोगिता से पुरस्कार प्राप्त हुआ हो।

प्रवेश शुल्क : लेखकों के लिए प्रति पुस्तक/पाण्डुलिपि १०/- रु. और प्रकाशकों के लिए रु. २०/- की राशि को पोस्टल आर्डर के रूप में मुख्य लेखा अधिकारी, एन.सी.ई.आर टी., के पक्ष में नीचे पते पर भेज दें।

अन्तिम तारीख : १५ जुलाई, १९८८

इस प्रतियोगिता के सम्बन्ध मे विस्तृत विवरण और नियमावली प्रो अनिल विद्यालकार, अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद (एन सी ई आर टी), श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-११० ०१६ से प्राप्त कर सकते हैं।

डी ए वी पी 87/696

नंदन ज्ञान-पहेली:२३२ परिणाम

बधाई। इस बार तो कमाल कर दिया नंदन के बाल पाठकों ने— न एक, न दो, पूरे तीस सर्वशुद्ध हल भेजे। विजेताओं में पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है।

सर्वशुद्ध हल : तीस : प्रत्येक को सोलह रुपए।

१. संजीवकुमार, पटना; २. जीवनराम चंदेल, सुल्तानिया, विदिशा (म. प्र.); ३. चंद्रप्रकाश आर्य, गोरखपुर; ४. पुष्पिंदर खेरा, नई दिल्ली; ५. नवेंदु कंडोई, उषाग्राम, आसनसोल (प. बं.); ६. परितोषकुमार, पटना; ७. कन्हैयालाल पंकज, खरौद (म. प्र.); ८. अनुपम मित्तल, लखनऊ; ९. अजयकुमार अग्रवाल, बम्बई; १०. कपिलाकुमारी मल्लाह, बीकानेर; ११. मालाकुमारी, बरौनी ड्योढ़ी (बि.); १२. विकासकुमार बाफना, पद्मनाभपुर (म. प्र.); १३. राजेश्वरी उनियाल, देहरादून; १४. धर्मेंद्रकुमार, डोमगढ़ (बि.); १५. उर्मिलाकुमारी, पटना; १६. कमलकिशोर, लखनऊ; १७. रंजना झा, चित्तरंजन (प. बं.); १८. जिलेदार, जौनपुर; १९. बबीता पांडे, भिलाई; २० ज्ञानी साहू, सतना; २१. गौतमकुमार उपाध्याय, टाटानगर; २२. पीयूष श्रीवास्तव, खंडवा; २३. बी. सूर्यशेखर, बेगुसराय; २४. योगेश करंजगांवकर, बिलासपुर (म. प्र.); २५. राजेशकुमार जायसवाल, कलकत्ता; २६. नूतनकुमारी, मोतिहारी; २७. नीलम, पटना; २८. प्रवीणकुमार जैन, इंदौर; २९. राजकुमार निगम, फतेहपुर बाराबंकी; ३०. मनीषकुमार, मोतिहारी। ●

नई पुस्तकें

ज्ञानदीप (भाग १ व २)— लेखिका : रमन मित्तल, डा. पुष्पलता श्रीवास्तव; प्रकाशक : पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, ८८८ ईस्ट पार्क रोड, नई दिल्ली-५; मूल्य:६ रु. व ६ रु. ५० पैसे।

दोनों पुस्तकों में रोचक और सचित्र कहानियां हैं। कहानियां तरह-तरह की हैं, जैसे— बालक के आसपास की, पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों की, चतुराई, ईमानदारी, सूझ-बूझ तथा साहस की। एकता तथा देश-प्रेम की कहानियां भी दी गई हैं। आज का बालक इन कहानियों को रुचि से पढ़ेगा और इनसे सीखेगा भी। स्कूलों में भी ऐसी पुस्तकें पढ़ाई जानी चाहिएं। छपाई और मुखपृष्ठ सुंदर हैं।

चमत्कारी किरण लेसर— लेखक : डा. सी. एल. गर्ग; प्रकाशक : पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली; मूल्य-१२ रुपए।

लेसर को अलादीन का चिराग कह सकते हैं। हमारे समय की बेजोड़ खोज है। लेसर किरणों का रक्षा, उद्योग, विज्ञान तथा चिकित्सा के अनेक क्षेत्रों में उपयोग हो रहा है। पुस्तक में ११ अध्याय हैं, जिनमें लेसर किरण का परिचय और भांति-भांति के लेसर की चर्चा है। युद्ध में तो लेसर का कई तरह प्रयोग होता है। इसके अलावा धातुओं में छेद करने, उन्हें जोड़ने, आंखों के आपरेशन, पेट के रोगों का पता लगाने, बिना चीर-फाड़ के गुर्दे की पथरी निकालने आदि में भी इसके कमाल देखे जा सकते हैं। सरल एवं रोचक भाषा में लिखी पुस्तक सभी को पढ़नी चाहिए।

नया सेरेलॅक ऑरेन्ज

Nestle
Cerelac
instant milk cereal
wheat orange

आपके शिशु के लिए सेरेलॅक का एक और अनूठा लाभ

पेश है नया सेरेलॅक ऑरेन्ज — आपके शिशु को सेरेलॅक लाभ, एक नए स्वाद के साथ देने के लिए। जैसे-जैसे आपका शिशु बढ़ता है, उसके आहार में विविधता आनी चाहिए। उसे यह नया स्वाद बहुत भाएगा... संतरे के गुणों से भरपूर।

और उसे सेरेलॅक ऑरेन्ज देने का मतलब है कि आप उसे सेरेलॅक के सभी लाभ दे रही हैं — प्रत्येक आहार में संपूर्ण पोषाहार, मनभावन स्वाद और झटपट तैयार।

इसलिए, उसे दुग्ध आहार के साथ-साथ सेरेलॅक व्हीट ४ महीने की आयु से और सेरेलॅक ऐप्पल/नया सेरेलॅक ऑरेन्ज छः महीने की आयु से दीजिए — शिशु को सेरेलॅक लाभ देने के तीन स्वादिष्ट तरीके।

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को मिले स्वस्थ और संतुलित पोषाहार।

Nestlé

R K SWAMY/FSL/4974-HIN

पत्र-मित्र

पुस्तकें पढ़ने व लेखन में रुचि :

१. फणिभूषण, १४ वर्ष, द्वारा चंद्रमणि सिंह, मु.+पो.—ईशाकचक, जि. भागलपुर; २. गार्गी मिश्र, १२, बी-२/४१७ यमुना विहार, दिल्ली-५३; ३. रवींद्र बख्शी, १४, बद्रीनाथ मार्ग, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल (उ. प्र.); ४. गुंजन कटियार, १६, ४६६/१६-जी न्यू रायगंज, सीपरी बाजार, झांसी; ५. रणजीतकुमार, १६, द्वारा डा. वी. के. वर्मा, बिहारी रोड, हिलसा (बि.); ६. चंदन दुबे, १५, ७/१५८ मालवीय नगर, जयपुर; ७. चंदनकुमार मिश्र, १०, पांडेय टोला (नया मौहल्ला), पो. नरकटियागंज, जि. पश्चिमी चम्पारण (बि.); ८. अरुणकुमार, १३, क्वार्टर नं. एम-१८५, पो. सिंदरी, जि. धनबाद; ९. दिव्या माहेश्वरी, १३, द्वारा रामेश्वरलाल माहेश्वरी, करला बाजार, नरायना (राज.); १०. प्रवीणकुमार गुप्ता, १६, ४५५/ए-१ सी. पी. मिशन कम्पाउंड, झांसी।

खेल, संगीत तथा चित्रकला में रुचि :

१. रूपेश चौधरी, १६ वर्ष, चौधरी मेडिकल स्टोर्स, ग्रा. सिरसा, जि. इलाहाबाद; २. मनीष प्रसून, १३, द्वारा प्रो. अनिरुद्ध कांत दास, महेंद्रू, पटना; ३. रुचि गंगवार, १०, के-एच-१९७ नया कवि नगर, गाजियाबाद; ४. संजयकुमार, १४, द्वारा राजेशसिंह, पो. बहुला बाजार, जि. बर्दवान (प. बं.); ५. तनवीर अहमद, १६, दरियापुर, कुतुबुद्दीन लेन, पो. आ. बांकीपुर, पटना; ६. धर्मेंद्रकुमार बड़गोती, १२, मु.+पो.-सेमरी हरचंद, तह. सोहागपुर, जि. होशंगाबाद; ७. भुटकुन, ७, ग्रा. आदमपुर, पो. परोरा, जि. पूर्णिया (बि.); ८. संदीपकुमार, १४, प्रभुनाथ नगर, छपरा, जि. सारण (बि.); ९. राजू, १०, सी-३५ न्यू मोती नगर, नई दिल्ली; १०. हरीप्रकाश साहू, १५, द्वारा ओमप्रकाश साहू, साहू निवास, अपर रोड, हरिद्वार।

डाक टिकट संग्रह में रुचि :

१. अमित वैश्य, १३ वर्ष, शिवनारायण एंड संस, जनरल मर्चेंट्स, बड़ा बाजार, बदायूं; २. विश्वास भट्ट, १४, मकान नं. ८१, पुराण भवन, मौ. गोविंददेव, खुरजा; ३. अजीतकुमार 'वत्स', १४, ग्रा.+पो.—पैनास, वाया सदिसोपुर, जि. पटना; ४. अतुलकुमार सिंगल, १५, द्वारा आत्माराम दीनदयाल, सिटी थान रोड, सिरसा; ५. सुरजीतसिंह, १७, ए-१४/१ जगतपुरी, गुरु तेगबहादुर मार्ग, कृष्णा नगर, दिल्ली; ६. राजकुमार जायसवाल, १५ द्वारा सनेहीलाल जायसवाल, मु.+पो.—बमनान, जि. बस्ती (उ. प्र.); ७. राकेश आर्य, १२, एच-एम-९६, फेज-III बी-१, मोहाली, जि. रोपड़ (पं.); ८. हरप्रीतसिंह ढिल्लों, १५, मकान नं. ८४६, पंजाब माता नगर, पखोबाल रोड, लुधियाना।

दी हिंदुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राजेन्द्र प्रसाद द्वारा हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित

कार्यकारी अध्यक्ष : नरेश मोहन

घर में ही जलतरंग बनाओ.
देखो ये कितना आसान है.

पहले कुछ खाली गिलास, जाम की खाली बोतलें या कप लो और उनमें अलग-अलग मात्राओं में पानी भरो. अब दो चम्मच लो और उनसे इन बर्तनों के किनारों पर धीमे-धीमे जलतरंग बजाना शुरू कर दो. देखा, अलग-अलग मात्राओं में पानी होने से कैसी अलग-अलग आवाज़ें निकलती हैं ! है न मज़ेदार खेल !

Parry's
THE KING OF SWEETS

टॉफियों का राजा तुमसे दोस्ती करना चाहता है. इसलिए अपना नाम, पता और जन्म-दिन लिखकर इस पते पर भेज दो :

The King of Sweets
P.O. Box No. 2040,
Madras 600 001.

HTA 7166
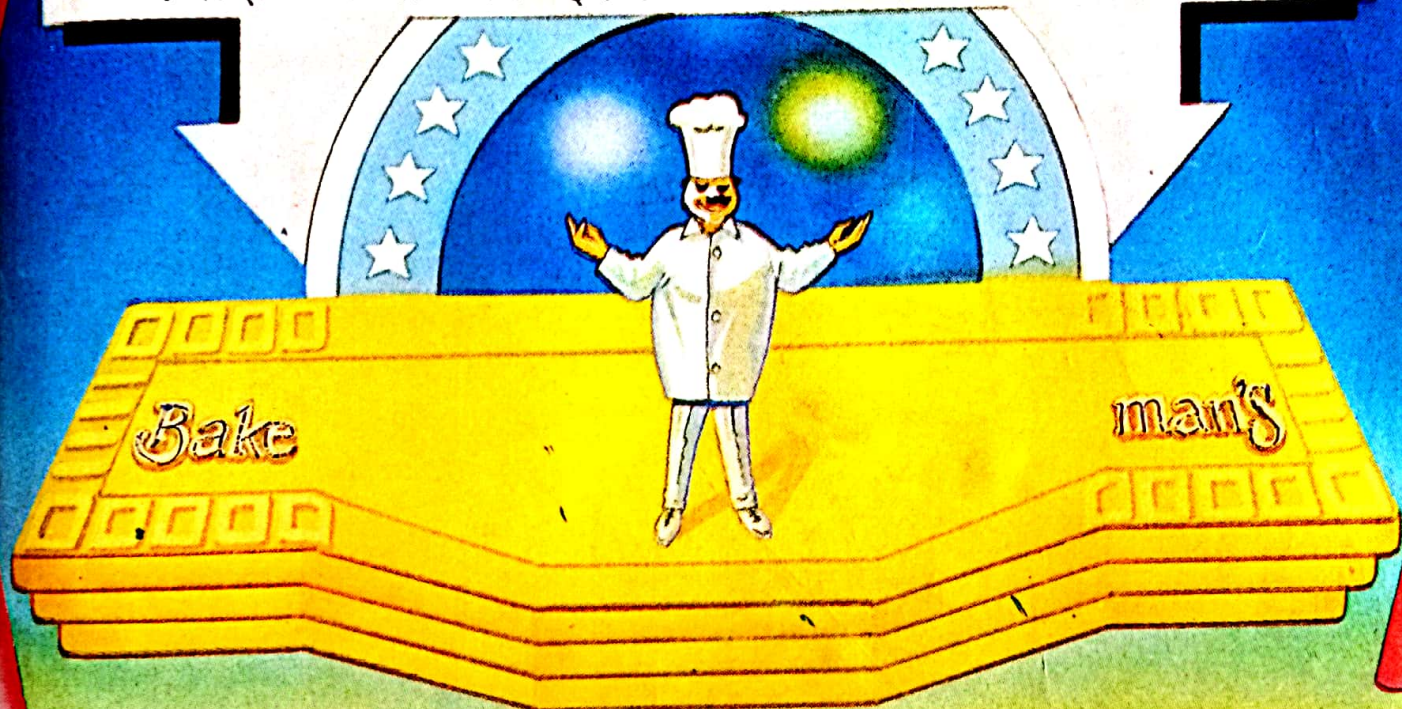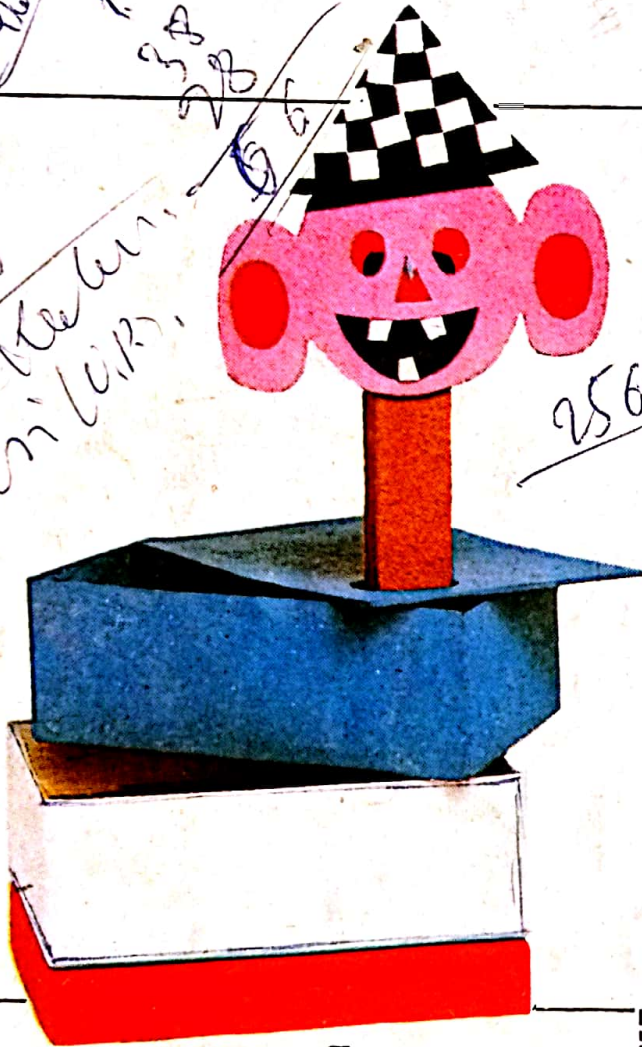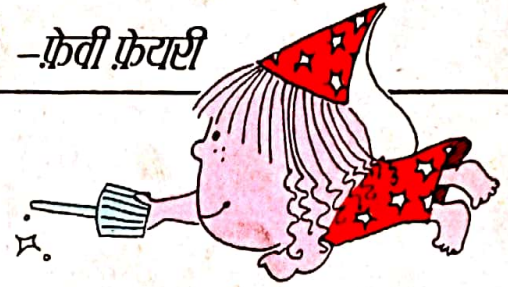
नंदन
टामी-द टकर
"बनता है ये खेल खेल में, हँसी खुशी में, रेल पेल में
सोच समझ कर झट चिपकाओ, मौज-मौज में इसे बनाओ"
—फ़ेवी फ़ेयरी
"जादू का करिश्मा नहीं
हाथ का कमाल है
पैसे का सवाल नहीं
काम बेमिसाल है।"
"जल्दी आकर हमें बताओ
करना क्या है—यह समझाओ।"
"जल्दी आओ
सब कुछ सुन लो...
सोचो समझो झट चिपकाओ
फ़ेविकोल एम आर को लाओ
मोर बनाओ,
गुड़िया, टोकरी, पर्स बनाओ
न चिप-चिप है, न है गंदगी
मज़े-मज़े में करते जाओ
करते जाओ।।"
इस टामी—द टकर को बनाने की क्रमवार रीति
मुफ़्त प्राप्त करने के लिए यह कूपन भेजिए.
इस पते पर लिखिए 'फ़ेवी फ़ेयरी'
पोस्ट बाक्स ११०८४, बम्बई ४०० ०२०.
इस टामी—द टकर को बनाने की क्रमवार रीति
मुफ़्त प्राप्त करने के लिए यह कूपन 'फ़ेवी फेयरी'
पोस्ट बाक्स ११०८४, बम्बई ४०० ०२०
के पते पर पोस्ट कर दो.
नाम
उम्र
पता
नगर
राज्य
पिन
क्या आपको हमारा जर्नल फेविक्राफ्ट मिल गया? हां ☐ नहीं ☐
फ़ेविकोल एम आर
सिन्थेटिक एडहेसिव
उत्तम काम, उत्तम नाम, फ़ेविकोल का यह परिणाम
® ये और फ़ेविकोल ब्राण्ड दोनों पिडिलाइट इण्डस्ट्रीज़ प्रा.लि.,
बम्बई ४०० ०२१ के रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क हैं.
OBM/2732/HN